Motion of No-Confidence in the Council of Ministers

माननीय अध्यक्ष: आइटम नंबर 16, मंत्रिपरिषद् में अविश्वास का प्रस्ताव, श्री गौरव गोगोई जी।

? (व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री; **कोयला मंत्री तथा खान मंत्री (श्री प्रहलाद जोशी):** सर, एक पॉइंट कहना है। जहां तक मैं जानता हूं कि सुबह सेक्रेट्री जनरल के ऑफिस में एक चिट्ठी आई थी कि श्री राहुल गांधी जी गौरव गोगोई जी के स्थान पर बोल रहे हैं, तो फिर अब क्या हुआ? हम तो राहुल गांधी जी का भाषण सुनने के इच्छुक हैं। ? (व्यवधान) सुबह 11.55 पर चिट्ठी आई थी, लेकिन अभी 12 बजे चेंज हो गया। क्या हुआ, थोड़ा हमें भी समझ में आए। यही हमारी रिक्वेस्ट है। ? (व्यवधान)

Let me understand what has happened. At 11:55 a.m. he has given a letter that Mr. Rahul Gandhi is going to speak. What has happened in five minutes? What is the problem? We are very much enthusiastic to listen to Mr. Rahul Gandhi. ? (*Interruptions*)

श्री हैबी ईडन (एरनाकुलम): आप प्रधान मंत्री को बोलो कि वे सदन में आएं। ? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): सर, कृपया हाउस को ऑर्डर में लें। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: श्री गौरव गोगोई जी ।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : अध्यक्ष महोदय, आप इस सदन के रक्षक हैं। आपके दफ्तर में क्या हो रहा है, क्या दरख्वास्त दी गई है, क्या बात-चीत हुई है, क्या हम बताएं कि ?*आपके दफ्तर के अंदर क्या-क्या बातें की हैं? हम यह नहीं कहते हैं। ? (व्यवधान)

गृह मंत्री तथा सहकारिता मंत्री (श्री अमित शाह): माननीय अध्यक्ष जी, इनको बताना चाहिए । ? (व्यवधान) आप बताइए। यह गंभीर आरोप है। ? (व्यवधान)

श्री प्रहलाद जोशी: सर, प्रधान मंत्री जी का नाम और चेयर का नाम लेकर ये ऐसे अनाप-शनाप आरोप आप नहीं लगा सकते। ? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : अध्यक्ष महोदय के दफ्तर की बात को हम विश्वास में रखते हैं। ? (व्यवधान) और आप जो बात कहते हैं, उसकी भी विश्वसनीयता हम बचाकर रखते हैं।

माननीय अध्यक्ष: आप सभी कृपया एक मिनट के लिए बैठिए। मैं बैठा हूं न।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, कभी भी कोई भी विषय हो, मेरा चैंबर भी सदन है, यह आप जानते हैं। आप एक वरिष्ठ नेता हैं। कभी भी ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए, जिसका कोई तथ्य और सत्यता न हो।

? (व्यवधान)

श्री प्रहलाद जोशी: सर, इन्होंने जो लैटर दिया है, वह पब्लिक डोमेन में है और प्रेस को भी कहा है। ? (व्यवधान) प्रेस के पास भी इनका लैटर है। जो प्रश्न चल रहा है, उसके बारे में मैंने पूछा। मैंने इनका कोई सीक्रेट नहीं पूछा, लेकिन इन्होंने माननीय प्रधान मंत्री जी का नाम लेकर क्या बताया? ? (व्यवधान) वह इनको पता है। वे बोलें, तो हम भी चर्चा के लिए तैयार हैं। ऐसे अनाप-शनाप आरोप आप नहीं लगा सकते हैं।

श्री गौरव गोगोई : अध्यक्ष महोदय, हम आपके दफ्तर में जाते हैं और आपको दरख्वास्त देते हैं, तो हमें यह अनुभव होता है कि अध्यक्ष महोदय हमारे अधिकारों की रक्षा करेंगे। आपके साथ यदि कोई भी बात-चीत हुई हो, तो हमारा विश्वास कहता है कि सदन की गरिमा और सांसद के अधिकार को हम बचाएंगे। ? (व्यवधान) मंत्री महोदय अगर ऐसा नियम शुरू करना चाहते हैं कि आपके दफ्तर में जो बात होती है, उसे बाहर उजागर करना चाहेंगे, तो हम भी उल्टी बात अंदर रख सकते हैं। आप संसदीय कार्य मंत्री हैं, अत: आप इस प्रकार की बात मत कीजिए। ?

SHRI PRALHAD JOSHI: Please understand it is in the public domain. It is in the media. It is in the social media. What are you talking?

हम आपसे यह अपेक्षा नहीं करते हैं। ? (व्यवधान) आप संसदीय कार्य मंत्री हैं। अध्यक्ष महोदय के दफ्तर में हम जो बातें करते हैं, आप उसका इस प्रकार से उल्लंघन मत कीजिए। ? (व्यवधान) आप ससंदीय कार्य मंत्री हैं। आप तो अपना कर्तव्य याद रखिए। ? (व्यवधान)

श्री प्रहलाद जोशी: आपका लेटर पब्लिक डोमेन में है। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, हम एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा कर रहे हैं। हम इस सदन की गरिमा के अनुसार और सदन की परम्पराओं के अनुसार बोलें। अविश्वास प्रस्ताव एक गंभीर प्रस्ताव है। मेरा सभी सदस्यों से आग्रह है कि वे चर्चा को गंभीरता से करेंगे तो उचित रहेगा।

श्री गौरव गोगोई जी ।

? (व्यवधान)

12.11 hrs

-

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:-

?कि यह सभा मंत्रिपरिषद् में अपने विश्वास का अभाव प्रकट करती है।?

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति की अपेक्षा करता हूं कि मैं अपना वक्तव्य रखूं। मैं सबसे पहले आपका आभार प्रकट करता हूं कि आपने ?इंडिया एलायंस? के इस अविश्वास प्रस्ताव को स्वीकार किया। ? (व्यवधान) जब आपने पूछा कि इस अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में कौन-कौन खड़ा है तो मैं इस मंच से ?इंडिया एलायंस? के सभी दलों के सांसदों को धन्यवाद देता हूं और आभार प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, यह अविश्वास प्रस्ताव हमारी मजबूरी है। यह हमारी मजबूरी है कि हमें अविश्वास प्रस्ताव लाना पड़ा, क्योंकि यह बात कभी भी संख्या की नहीं थी। यह बात हमेशा इंसाफ की थी। मणिपुर के लिए इंसाफ की थी।

माननीय अध्यक्ष: गोगोई जी, आप पहले प्रस्ताव रख दीजिए।

श्री गौरव गोगोई : अध्यक्ष महोदय, मैंने प्रस्ताव के लिए आपसे अनुमति मांगी थी। मैं प्रस्ताव आगे करता हूं। मैंने शुरुआत में ही आपकी अनुमति मांगी थी।

अध्यक्ष महोदय, यह इंसाफ मणिपुर के लिए है।

सर, क्या मैं प्रस्ताव पढ़ूं?

माननीय अध्यक्ष: आप प्रस्ताव रख दीजिए ।

श्री गौरव गोगोई: अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:-

?कि यह सभा मंत्रिपरिषद् में अपने विश्वास का अभाव प्रकट करती है।?

अध्यक्ष महोदय, हम इंडिया एलायंस यह अविश्वास प्रस्ताव मणिपुर के लिए लेकर लाए हैं, क्योंकि मणिपुर आज इंसाफ मांगता है। मणिपुर का युवा इंसाफ मांगता है, मणिपुर की बेटी इंसाफ मांगती है, मणिपुर के किसान इंसाफ मांगते हैं और मणिपुर के छात्र इंसाफ मांगते हैं। मार्टिन लूथर किंग ने कहा है कि, ?अगर कहीं भी नाइंसाफी हो तो वह हर जगह के लिए इंसाफ के लिए खतरा बन सकता है। Injustice anywhere is a threat to justice everywhere.? ये जो घटनाएं मणिपुर में हो रही हैं, इसको हम यह न समझें कि उत्तर पूर्वांचल के किसी कोने में यह हो रहा है। यह भारत में हो रहा है। अगर मणिपुर जल रहा है तो भारत जल रहा है। ? (व्यवधान) अगर मणिपुर में आग लगी है तो भारत में आग लगी है। अगर मणिपुर विभाजित हुआ है तो भारत विभाजित हुआ है। ? (व्यवधान) आज हम सिर्फ मणिपुर की बात नहीं कर रहे हैं, हम भारत की बात कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारी मांग स्पष्ट थी कि देश के मुखिया होने के नाते प्रधान मंत्री जी सदन में आएं, अपनी बात रखें, अपनी संवेदना प्रकट करें और उस पर सारी पार्टीज अपना समर्थन दें, ताकि मणिपुर को एक संदेश जाए कि इस दु:ख की खड़ी में पूरा सदन मणिपुर के साथ है और हम मणिपुर में शांति चाहते हैं। ? (व्यवधान) यह हमारी अपेक्षा थी। लेकिन, अफसोस की बात है कि ऐसा नहीं हुआ। प्रधान मंत्री महोदय ने एक मौन व्रत लिया कि सदन में, न लोक सभा में कुछ बोलेंगे न राज्य सभा में कुछ बोलेंगे। इसीलिए, यह नौबत आई कि हम अविश्वास प्रस्ताव के द्वारा प्रधान मंत्री मोदी जी का मौन व्रत तोड़ना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रधान मंत्री महोदय से साफ-साफ तीन सवाल हैं। पहला सवाल यह है कि आज तक वे मणिपुर क्यों नहीं गए? राहुल जी गए, ?इंडिया एलायंस? की विभिन्न पार्टीज गईं, गृह मंत्री जी गए, एमओएस होम गए, पर देश के मुखिया होने के नाते प्रधान मंत्री मोदी जी क्यों नहीं गए? यह पहला सवाल है।? (व्यवधान)

दूसरा सवाल यह है कि प्रधानमंत्री मोदी जी को मणिपुर पर कुछ बोलने के लिए लगभग 80 दिन क्यों लगे? जब बोले, तो सिर्फ 30 सेकेंड के लिए बोले। उसके पश्चात् आज तक प्रधानमंत्री मोदी जी की तरफ से न कोई संवेदना का शब्द, न कोई शांति की याचना की गई। मंत्रिमंडल के सदस्य बोल रहे हैं कि हम बोलेंगे-हम बोलेंगे। आप बोलिए, आपको किसी ने नहीं रोका, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी के एक प्रधानमंत्री होने के नाते उनके शब्दों का जो महत्व है, वह किसी मंत्री के शब्दों में नहीं है। माफ कीजिएगा, अगर प्रधानमंत्री मोदी जी प्रधानमंत्री होने के नाते शांति की पहल करें, उस कदम में जो ताकत है, वह ताकत किसी मंत्री या किसी सांसद में नहीं है।

तीसरा सवाल यह है कि आज तक प्रधानमंत्री जी ने मणिपुर के मुख्यमंत्री को बर्खास्त क्यों नहीं किया? जब गुजरात में निर्वाचन आया, जब आपको गुजरात में अपनी राजनीति करनी थी, तो गुजरात के मुख्यमंत्री को एक बार नहीं, बल्कि दो बार बदल दिया गया। जब उत्तराखंड में निर्वाचन आया, तो उत्तराखंड में एक बार, दो बार, तीन बार, शायद आपने चार बार मुख्यमंत्री बदल दिए। जब त्रिपुरा में निर्वाचन आया, तो त्रिपुरा में भी आपने निर्वाचन से पहले मुख्यमंत्री को बदल दिया। आप मणिपुर के मुख्यमंत्री को ऐसा क्या विशेष आशीर्वाद दे रहे हैं, जिन्होंने खुद कबूल किया है कि आज मेरे कारण एक इंटैलीजेन्स फेल्योर हुआ है। ये तीन सवाल हैं। शायद इन तीन सवालों के तीन उत्तर भी हैं।

प्रधानमंत्री मोदी जी मणिपुर पर क्यों मौन हैं, शायद इस प्रश्न के तीन उत्तर हैं। पहला उत्तर यह है कि प्रधानमंत्री मोदी जी को कबूल करना पड़ेगा कि मणिपुर में उनकी डबल इंजन की सरकार व्यर्थ हो गई है, विफल हो चुकी है। इसीलिए आज मणिपुर में 150 लोग मरे हैं। लगभग 5,000 घर जलाए गए। आज लगभग 60,000 लोग शिविर में रह रहे हैं। लगभग 6,500 एफआईआर दर्ज हुई हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री होने के नाते जो एक संवाद का वातावरण बनाना चाहिए था, शांति, अमन और सद्भावना का एक

वातावरण बनाना चाहिए था, आज सिर्फ मई महीने से नहीं, बल्कि उन्होंने पिछले दो-तीन सालों से कुछ ऐसे भड़काऊ कदम उठाए हैं, जिससे आज समाज के बीच में तनाव पैदा हो गया है।

हम मणिपुर गए थे। क्या मणिपुर में पहली बार हिंसा हुई है, क्या उत्तर-पूर्वांचल में सबसे पहली हिंसा हुई है? नहीं, इससे पहली भी हिंसा हुई है। मणिपुर में भी हुई है। मैं खुद उत्तर-पूर्वांचल से आता हूं। मैं खुद जिम्मेवारी से कहता हूं कि हिंसा हुई है।? (व्यवधान) अरे, आपमें से तो कोई वहां गया भी नहीं, आप क्या जानेंगे? पहले जाओ और फिर हमें परामर्श दो। पहले आप लोग जाओ।?(व्यवधान)

महोदय, हम लोग गए और बहुत दुख हुआ कि हमने समाज में दो वर्गों के बीच ऐसा बंटवारा कर दिया। हमने समाज के दो वर्गों के हृदय में इतना आक्रोश और इतना गुस्सा पहले कभी नहीं देखा है। हमने पहले कभी भी नहीं देखा कि आज समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग के प्रति बदले की भाषा का प्रयोग कर रहा है। हमने कभी भी नहीं देखा कि एक प्रदेश में ऐसी लकीर खींच दी गई है कि पहाड़ पर एक वर्ग के लोग रहते हैं और वैली में दूसरे वर्ग के लोग रहते हैं। अफसोस की बात है कि जो सरकार एक इंडिया की बात करती है, आज आपने दो मणिपुर बना दिए हैं। आपकी राजनीति से आज दो मणिपुर बन गए हैं।

मैं इस सदन के माध्यम से मणिपुर के मुख्यमंत्री को पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी के राजधर्मों को याद करने की सलाह दूंगा। उन्होंने कहा था कि राजा या शासक के लिए प्रजा में भेद नहीं हो सकता, न जन्म के आधार पर, न जाति के आधार पर और न ही समुदाय के आधार पर।

सर, आज इस माहौल में अगर सबसे ज्यादा पीड़ा किसी को झेलनी पड़ी है तो महिलाओं और बच्चों को। हमने वे वायरल वीडियोज़ देखे हैं, मैं उनका उल्लेख नहीं करना चाहूंगा, उनसे सबको पीड़ा हुई है। मुख्य मंत्री जी ने स्वयं कहा है कि ऐसी सौ एफआईआर हैं। हम भी वहां गए हैं। इंडिया डेलिगेशन, हमारा संसदीय दल उस परिवार से मिलकर आया है, जिसमें दो महिलाओं के साथ इतना बुरा व्यवहार हुआ, अत्याचार हुआ। हम ऐसे भी एक परिवार से मिले, जिसमें एक 80 साल की महिला, जो

एक स्वतंत्रता संग्रामी की पत्नी थी, उसको घर के अंदर बंद करके जिंदा जला दिया। वे दो महिलाएं, जिनको लेकर आज सुप्रीम कोर्ट तक बात गई है, उनमें से एक महिला का पति कारगिल में हमारे देश के लिए हमारी सीमा की सुरक्षा कर रहा था। वह कारगिल का जवान बोल रहा है कि मैंने देश को बचाया, लेकिन मैं अपने घर और अपने परिवार को नहीं बचा पाया। जब हम उनसे मिलते हैं तो हम क्या कहें? आप लोग कहते हैं कि हम फोटो ऑप करने गए थे। हम दुख के समय में उनको संवेदना देने गए थे। आज महिलाओं और बच्चों के साथ ? (व्यवधान)

जल शक्ति मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत): आप राजस्थान पर भी आइए ।

श्री गौरव गोगोई : मैं सारी बातों पर आऊंगा। वहां धार्मिक जगह को भी नहीं बख्शा गया । वहां धार्मिक स्थानों पर भी भीड़ घुसी और उनका असम्मान किया। आज इंटरनेट नहीं है। आप कहते हैं कि सब नॉर्मल है, स्थिर है, लेकिन आज भी इंटरनेट नहीं है। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं, लोग अपनी बातें नहीं रख पा रही हैं। आज कितनी महिलाओं पर अत्याचार हुआ है, वे अपनी बात ही नहीं रख पा रहे हैं। वह तो वीडियो वायरल हो गया था, अन्यथा मुझे लगता है कि आज तक प्रधान मंत्री मोदी जी मौन ही रहते। ऐसे हजार अत्याचार हुए हैं, लेकिन वहां के मुख्यमंत्री जी क्या कहते हैं? वह ड्रग्स के ऊपर बोलते हैं कि यह सब ड्रग्स के लिए हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात बहुत गम्भीरतापूर्वक आपके समक्ष सदन में रख रहा हूं कि मणिपुर के मुख्यमंत्री के कार्यालय से जब एक ड्रग माफिया के बड़े नेता को वहां की पुलिस ने पकड़ा तो मुख्यमंत्री के दफ्तर से फोन गया कि उस ड्रग के माफिया को बचाओ और रिहा करो। वह ड्रग का माफिया कौन था, वह ड्रग का माफिया आप ही के दल के ऑटोनोमस डिस्ट्रिक्ट काउंसिल के चेयरमैन थे। जब वहां पर लॉयंगाम्बा इटोचा को पकड़ा गया तो मुख्यमंत्री जी के दफ्तर से फोन गया कि इसको रिहा करो। यह इटोचा कौन हैं, वह वहीं के राज्य सरकार के पीएचई मिनिस्टर सुसिन्द्रो के भाई हैं। आज यह सरकार राज्य में ड्रग्स की बात करती है। ड्रग्स के साथ मुख्यमंत्री महोदय के दफ्तर के साथ ताल्लुकात हैं। यह बात मैं नहीं कर रहा हूं, वह पुलिस ऑफिसर, जिनको इनकी राज्य सरकार ने मेडल दिया, वे इस बात को कह रहे हैं। इस सरकार ने मुझे मेडल दिया और यही सरकार मुझे ड्रग से जुड़े हुए इनके दल के नेताओं को छोड़ने के लिए कह रही

है तथा उन्होंने अपना मेडल राज्य सरकार को वापस कर दिया। सर, पॉपी फार्मिंग की बात करते हैं। आज आपका ही नार्कोटिक्स एण्ड अफेयर्स ऑफ बॉर्डर यह कहता है कि ? about the scale of poppy plantation in Manipur spread across 15,400 acres of land in the hills between 2017 and 2023. वर्ष 2017 में आपकी सरकार आई थी। इंडियन फॉरेस्ट सर्वे रिपोर्ट 2021 में कहते हैं कि ?Within two years? time, the forest area of Manipur has decreased by 248.63 sq. kms?. आपकी सरकार की नजर के सामने वहां के जंगलों को काटा जा रहा है और पॉपी फार्मिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

गृह मंत्री जी ड्रग्स को लेकर बार-बार वक्तव्य देते हैं, लेकिन गृह मंत्री महोदय, आपको भी पता है कि पिछले पांच-छ: सालों में ड्रग्स की यह समस्या कम नहीं हुई, थमी नहीं, बल्कि बढ़ती जा रही है। एनसीआरबी का डेटा है कि वर्ष 2017 में 1,113 केसेज हुए और वर्ष 2021 में 3,611 केसेज आए। ड्रग्स की समस्या आज बढ़ती जा रही है। कहीं न कहीं प्रधानमंत्री जी चाहते हैं कि वे मौन रहें, ताकि उनकी राज्य सरकार की छवि धूमिल न हो, क्योंकि उनको छवि से लगाव है। चाहे लोगों पर अत्याचार हो, ड्रग्स की समस्या बढ़ी हो, ये उनके लिए महत्व नहीं रखता है। जैसा कि मैंने कहा है, उनके मौन रहने के तीन कारण हैं। अभी मैंने सिर्फ एक कारण को उजागर किया है।

दूसरा कारण यह है, मैं बहुत सम्मानपूर्वक यह बात कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी जी के मौन रहने का दूसरा कारण यह है कि आज भारत सरकार का गृह विभाग और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार विफल हुए हैं। क्या हो रहा है मणिपुर में? आज वहां 5 हजार से ज्यादा हथियार लोगों के हाथों में हैं। लगभग 35 पुलिस स्टेशन्स में भीड़ जाकर, वहां के हथियार अपने साथ ले जाती है। आपने जितने भी राज्यों की बातें उजागर की हैं, क्या वहां कभी ऐसी स्थिति देखी है कि दो महीनों में एक भीड़ पुलिस थाने में जाकर, पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज में जाकर वहां के हथियारों को लेकर जाती है? क्या-क्या हथियार ले जाए गए हैं? क्या-क्या हथियार लूटकर ले गए हैं? इंसास राइफल्स, ए.के.-47, लाइट मशीन गन, सेल्फ लोडिंग राइफल, एसएमसी, मोर्टार, ग्रेनेड, बुलेट प्रूफ जैकेट और 6 लाख एम्युनिशन, 6 लाख गोलियां आज लोगों के बीच में हैं। क्या यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला नहीं है? कहां हैं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार? ये जो बन्दूकें हैं, ये जो

गोलियां हैं, ये किस पर चलाएंगे? ये गोलियां हमारी भारतीय सेना के नौजवानों पर चलाएंगे? ये गोलियां मणिपुर की पुलिस पर चलाई जाएंगी। ये गोलियां मणिपुर के निहत्थे लोगों पर बरसाई जाएंगी। क्या किया आपने? आज ये हथियार सिर्फ मणिपुर तक सीमित नहीं रहेंगे। ये जो लगभग 6 लाख एम्युनिशन है, गोला-बारूद और ए.के.-47 हैं, ये युद्ध के हथियार हैं। ये युद्ध के अस्त्र हैं। ये सिर्फ मणिपुर तक सीमित नहीं रहेंगे। उत्तर-पूर्वांचल और भारत की अलग-अलग जगहों में ये हथियार जाएंगे और भारत के समाज में अशान्ति का वातावरण बनाएंगे। क्या कर रहे हैं आप? आज दुख की बात है कि पहले मुख्यमंत्री जी समाज को दोषी ठहरा रहे थे, अब मणिपुर के मुख्यमंत्री केन्द्र सरकार और असम राइफल्स पर निशाना साध रहे हैं। आज ही मुझे सुनने को मिला कि असम राइफल्स, जिसको देश और लोगों को बचाने की जिम्मेदारी दी गई है, उनको हटाया जा रहा है। मुख्यमंत्री जी के घर के जो सदस्य विधायक हैं, मैं उनका नाम नहीं लूंगा, वह पूछते हैं कि इतने हथियार कहां से आए? क्या कर रहे हैं केन्द्र शासित सुरक्षा दल? यह असम राइफल्स किसके अनुसार काम करती है? असम राइफल्स को गृह मंत्रालय से निर्देश जाता है। मणिपुर में ऐसी व्यवस्था बन गई है कि मणिपुर की पुलिस आज असम राइफल्स के जवानों पर अंगुली उठा रही है और असम राइफल्स के जवान आज मणिपुर पुलिस पर अंगुली उठा रहे हैं। यह स्थिति बनी है 21वीं सदी के भारत में? ऐसे हम इसका समाधान कर रहे हैं पिछले तीन महीनों से? आज सुप्रीम कोर्ट ने जो जांच कमेटी बैठाई, उससे साफ-साफ साबित होता है कि सुप्रीम कोर्ट ने भी केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के कामों को स्वीकार नहीं किया। आज इसीलिए कमेटी बैठाई गई है। मैं गृह मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि आपने 51 मेंबर्स की एक कमेटी बनाई थी, लेकिन कितनी बार वह कमेटी बैठी? आप वहां तीन दिन थे, आप वहां गए और आपने 51 मेंबर्स की एक पीस कमेटी बनाई। अच्छी बात है, लेकिन वह कमेटी आज तक असफल रही।

गृह मंत्री जी ने कहा कि मैं 15 दिनों के बाद आऊँगा। 15 दिन हो गए हैं, लेकिन गृह मंत्री जी मणिपुर में दिखाई नहीं दिए। जब एक संस्पेंडेड इन्सर्जेंसी ग्रुप (यूकेएलएफ) यूनाइटेड कुकी लिबरेशन फ्रंट का चेयरमैन एस.एस. हॉकिप लीगल बयान में, एफिडेविट में यह बात कहता है कि भाजपा ने वर्ष 2017 और वर्ष 2019 के निर्वाचन में एक उग्रपंथी संगठन का सहयोग लिया था। एक लीगल एफिडेविट में यह बात कही गई

है। क्या यह इनका राष्ट्रवाद है? यह है इनका राष्ट्रवाद, जो आज देश की अखंडता को सत्य के दाँव पर भूल चुका है? यह राष्ट्रवाद है कि जो आज देश की अखंडता के साथ खिलवाड़ कर रहा है? आज उत्तर पूर्वांचल में आपकी जो बड़ी-बड़ी बाते हैं, वे सारी अभी तक नाकाम रही हैं। आप एनआरसी की बात करते हैं। आज तक एनआरसी असम में लागू नहीं हुई है। आप सीएए की बात करते हैं। वहां पर ऐसा माहौल हुआ कि जापान के पूर्व प्रधान मंत्री असम नहीं जा पाए । नागा पीस फ्रेमवर्क की बात करें तो आठ साल हो गए अभी तक हमने नहीं देखा कि नागा पीस फ्रेमवर्क में हुआ क्या है? गृह मंत्री जी आज नागा विधायक से अलग से मिलते हैं। मणिपुर से आए हुए कुकी विधायक से अलग से मिलते हैं। क्यों नहीं आप सबको एक साथ मिलकर बुलाएं और शांति की अपेक्षा करें। ये अलग-अलग मीटिंग क्यों हो रही हैं? ऐसे उत्तर पूर्वांचल की समस्याएं नहीं सुलझेंगी कि आप समाज, जाति, धर्म के आधार पर बँटवारा करें। आपको सबको साथ में लेना पड़ेगा। हम पहली बार यह देख रहे हैं कि उत्तर पूर्वांचल के दो राज्य, असम और मिजोरम के पुलिस अफसर एक-दूसरे पर गोली चला रहे हैं। क्या यह आपकी राष्ट्रीय सुरक्षा की नीति है? इसी बात को राहुल गांधी जी ने इस सदन में उजागर किया था, जब उन्होंने आपको चेतावनी दी थी कि आप उत्तर पूर्वांचल के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उत्तर पूर्वांचल हमारे देश का हिस्सा है, यह बात इन्होंने कही थी।

आज जिस तीसरे कारण पर मैं आना चाहता हूँ, जिसके कारण प्रधान मंत्री मोदी जी मौन हैं। पहला, उनकी राज्य सरकार विफल थी। दूसरा, उनका गृह विभाग और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार विफल रहे और तीसरा, प्रधान मंत्री मोदी जी के मौन रहने का कारण है कि वे अपनी भूल कबूल नहीं करना चाहते हैं। अगर वे बोलें, चूँकि उनकी राज्य सरकार से चूक हुई है तो यह भूल वे कभी भी जनता के सामने कबूल नहीं करेंगे। वे मौन रहना पसंद करते हैं और यह पहली बार नहीं हुआ है। यह पहली बार नहीं हुआ है। जब भारत के लिए स्वर्ण पदक लाने वाली कुश्ती की महिला खिलाड़ी सड़क पर विरोध कर रही थीं, तब प्रधान मंत्री जी मौन थे। जब 750 किसानों ने किसान आंदोलन में अपने जीवन का बलिदान दिया, शहीद हुए तो प्रधान मंत्री जी मौन थे। जब वर्ष 2020 में दिल्ली में दंगे हुए और विदेश से एक सरकार के नेता आए हुए थे, उस समय भी प्रधान मंत्री जी मौन थे। जब अडानी पर इसी सदन में राहुल गांधी जी ने प्रधान मंत्री मोदी जी से

सवाल किया कि कितनी बार एक विशेष कंपनी को प्रधान मंत्री के साथ जाने पर सुविधा हुई तो प्रधान मंत्री मोदी जी मौन थे।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप चर्चा पर आइए । यह सही नहीं है। जो व्यक्ति सदन में उपस्थित नहीं है, उस पर चर्चा मत कीजिए।

? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : सर, बड़ी आश्चर्य की बात है कि अभी तक मैंने प्रधान मंत्री जी का नाम लिया, अभी तक मैंने मुख्य मंत्री जी का नाम लिया, अभी तक मैंने गृह मंत्री जी का नाम लिया, लेकिन अभी तक इनकी तरफ से विरोध नहीं हुआ था, लेकिन जब एक विशेष कंपनी के मालिक का नाम लिया तो ये सारे मंत्री और सांसद खड़े हो गए।? (व्यवधान)

सर, यह किसकी सरकार है? मैं चीन पर आता हूँ। जब हमने चीन पर सवाल किया कि चीन हमारे देश की सीमा में कितने अंदर तक गया है, कितने किलोमीटर में है, तो प्रधान मंत्री मोदी जी मौन रहे। प्रधान मंत्री, मोदी जी ने G-20 Bali summit में प्रेसिडेंट शी जिनपिंग के साथ क्या बातचीत की, उनके विदेश मंत्रलाय ने इसको छुपाने की कोशिश की। लेकिन जब चीन के विदेश मंत्रालय से बात आई तो भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने खुद कबूल किया कि हां, हमने यह बात छुपाई थी। बहुत संवेदनशील बातें प्रधान मंत्री, मोदी जी ने शी जिनपिंग के साथ बाली में की। हम पूछना चाहते हैं कि आपने क्या बातें कीं? क्या समझौता हुआ, क्या आप बताएंगे? विदेश मंत्री जी ने कुछ दिनों पहले सभी के समक्ष एक स्टेटमेंट रखा। उस स्टेटमेंट में भी बाली में प्रधान मंत्री, मोदी जी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ क्या बात हुई, उन्होंने उजागर नहीं किया। आप चीन की बात करते हैं।? (व्यवधान) प्रधान मंत्री मोदी जी, जब जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल महोदय ने कहा कि उन्होंने प्रधान मंत्री जी को फोन किया था, तब राज्यपाल महोदय ने क्या कहा? उनको चुप रहने की सलाह मिली। प्रधान मंत्री, मोदी जी मौन रहे। जब एक पूर्व राज्यपाल महोदय ने कहा कि जब हमने पुलवामा के जवानों के लिए सुरक्षा मांगी थी, तो हमें कोई सुरक्षा नहीं मिली। जब ऐसी गंभीर बात एक पूर्व राज्यपाल महोदय, आपके चुने हुए राज्यपाल महोदय ने रखी, तो प्रधान मंत्री, मोदी जी मौन रहे।

कोविड के सेकेंड वेव में लोगों की सांसों में, फेफड़ों में ऑक्सीजन नहीं थी, तब प्रधान मंत्री जी पश्चिम बंगाल में वोट मांग रहे थे। जब मणिपुर में महिलाओं पर अत्याचार हो रहा था, तो प्रधान मंत्री जी कर्नाटक में वोट मांग रहे थे। यह कैसा राष्ट्रवाद है, जो देश से ऊपर अपनी सत्ता को ज्यादा महत्व देता है? इस देश के इतिहास में, हमने दूसरे प्रधान मंत्री भी देखे हैं। हमने ऐसे भी प्रधान मंत्री देखे हैं, जिन्होंने उत्तर-पूर्वांचल और भारत की संवेदना को समझा।? (व्यवधान) मैं उदाहरण देना चाहता हूं। जब वर्ष 1985 में असम अकॉर्ड हुआ, तो असम में हमारी कांग्रेस की सरकार थी। लेकिन शांति की पहल के लिए उस समय के पूर्व प्रधान मंत्री, राजीव गांधी जी ने कहा कि कांग्रेस की सरकार बरखास्त होनी चाहिए। हम निर्वाचन कराना चाहते हैं, ताकि शांति आगे बढ़े। यह हमारा राष्ट्रवाद है। दल से ऊपर हमारा देश, यह हमारा राष्ट्रवाद है। जब मिजो अकॉर्ड हुआ।? (व्यवधान) आप मेरी बात सुन लीजिए। आप सुनने का धैर्य रखिए। जब वर्ष्र 1986 में मिजो अकॉर्ड हुआ, तो मिजोरम में हमारी सरकार थी, लेकिन राजीव गांधी ने लालडेंगा जी के साथ समझौता करके, उन्होंने मिजो अकॉर्ड, 1986 में किया। वहां लालडेंगा जी मिजोरम के इंटरिम गवर्नमेंट के माननीय मुख्य मंत्री बनें और निर्वाचन हुआ। हमें सत्ता नहीं चाहिए, हमें उत्तर-पूर्वांचल में शांति चाहिए। अगर सत्ता खोनी पड़े, दल का बलिदान देना पड़े, तो उत्तर-पूर्वांचल और देश की अखंडता के लिए हम वह बलिदान देने के लिए तैयार हैं। सोनिया जी को याद होगा कि जब मिजो अकॉर्ड हुआ, उसके अगले ही दिन राजीव गांधी जी और सोनिया गांधी जी आइजोल, मिजोरम गए थे। वहां जगह-जगह पर लोगों ने इन दोनों का स्वागत किया और कहा कि स्वागत राजीव गांधी जी, ?Welcome, Rajiv Gandhi Ji?.आप शांति के प्रतीक हैं। ऐसी पहल प्रधान मंत्री, मोदी जी मणिपुर में क्यों नहीं करते हैं?? (व्यवधान) हम उनका समर्थन करेंगे। जब वर्ष 2012 में कोकराझार, असम में हिंसा हुई तो इस लोक सभा में प्रधान मंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह जी ने अपनी बात रखी। जब कोकराझार में हिंसा हुई, तो उसके सात दिनों के बाद प्रधान मंत्री, मनमोहन सिंह जी वहां पर गए। उन्होंने असम में जाकर कहा कि ?We are one people. We are one nation. We must live together as such. We must restore peace and calm throughout the area.? ऐसी बातें प्रधान मंत्री मोदी जी क्यों नहीं करते हैं? चलिए, मैं अपने दल का नहीं, बल्कि मैं आपके दल का उदाहरण देता हूं। जब वर्ष 2002 में दंगे

हुए, तो उस समय के प्रधान मंत्री, वाजपेयी जी गुजरात गए थे। वे शाह आलम के रिफ्यूजी कैम्प में गए थे।

सर, हमारी प्रधान मंत्री जी से सीधी-सीधी तीन याचनाएं हैं। पहली याचना है कि वे सदन में आकर अपनी बात रखें। लोक सभा में आएं और राज्य सभा में भी जाएं। हमारी दूसरी याचना है कि वे मणिपुर जाएं और पूरी पार्टी को लेकर जाएं। हमने यह बात सदन के प्रारंभ होने से पहले कही थी कि अगर प्रधान मंत्री जी मणिपुर में ऑल पार्टी डेलिगेशन लेकर जाएंगे तो हम सब उसमें शामिल होंगे। हमारी तीसरी याचना यह है कि मणिपुर के विभिन्न समाज सेवक संगठनों को बुलाकर एक मीटिंग करिये और शांति की एक पहल रखिये। लेकिन प्रधान मंत्री जी क्या कर रहे हैं? आज प्रधान मंत्री जी इंडिया अलायंस को बदनाम करने पर तुले हुए हैं। आज देश के नाम को बदनाम करने पर तुले हुए हैं। यह अफसोस की बात है।? (व्यवधान) जब आप पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया की बात करते हैं, इंडियन मुजाहिदीन की बात करते हैं, ईस्ट इंडिया कंपनी की बात करते हैं तो हम इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की बात करते हैं, हम इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन की बात करते हैं, हम इंडियन पुलिस फोर्स की बात करते हैं और हम इंडियन एयर फोर्स की बात करते हैं।

जब आप इंडिया को बदनाम करते हैं तो हमें तो भारत का तिरंगा दिखता है जहां पर गेरुआ, सफेद और हरा रंग है तथा बीच में अशोक चक्र है। आज वोट जीतने के लिए नफरत एक हथियार बन चुका है। वह चाहे मणिपुर में हो, वह चाहे हरियाणा में हो, वह चाहे कर्नाटक में हो, वह चाहे मध्य प्रदेश में हो। आप जितनी भी नफरत फैलाएं, हमने राहुल जी के नेतृत्व में भारत जोड़ो यात्रा की है।? (व्यवधान) आपके नफरत के बाजार में हम जगह-जगह पर मोहब्बत की दुकान खोलेंगे। हम संविधान की सुरक्षा करेंगे। Our Constitution talks about equality, liberty, justice and fraternity. हम संविधान के आदर्शों की सुरक्षा करेंगे। आप पूजीपतियों का विकास चाहते हैं। आप सबका विकास कहते हैं, लेकिन पूंजीपतियों का विकास करते हैं और वह भी सिर्फ 6 पूंजीपतियों का विकास। आज हमने भारत में एक ऐसी व्यवस्था देखी है कि 6 कंपनियों के पास 25 प्रतिशत पोर्ट है, 45 सीमेंट प्रोडक्शन है, 33 परसेंट स्टील प्रोडक्शन है, 60 परसेंट टेलीकॉम प्रोडक्शन है, 45 परसेंट कोल प्रोडक्शन है। आपके विकास का मॉडल यह है।

मैं उस कंपनी का नाम नहीं लूंगा, जिससे आप उत्तेजित हो जाते हैं, लेकिन मैं दूसरी कंपनी का नाम तो ले सकता हूं। सर, यह कैसी प्रक्रिया है? ये कैसी कम्पीटेटिव इकोनॉमी बना रहे हैं? जब अप्रैल, 2023 में श्री सीमेंट सांघी इंडस्ट्रीज को खरीदना चाहता है तो जून में ही श्री सीमेंट पर आईटी डिपार्टमेंट की रेड होती है और जुलाई, 2023 में श्री सीमेंट एक्विजिशन से बाहर निकलता है तथा अगस्त में अडानी की अम्बुजा सीमेंट सांघी इंडस्ट्रीज को खरीद लेता है।? (व्यवधान) आप यह इकोनॉमी बना रहे हैं। आप ऐसी इकोनॉमी बनाएंगे। हम पूंजीपतियों का विकास नहीं चाहते हैं, हम किसान का विकास चाहते हैं, जिससे राहुल जी मिले हैं। हम चाहते हैं कि उस मैकेनिक का विकास हो, जिससे राहुल जी मिले हैं। हम चाहते हैं कि उस फैक्ट्री वर्कर का विकास हो। हमारे पास जो स्मॉल बिजनैस और ट्रेडर्स वाले आते हैं, हम उनका विकास चाहते हैं। आप गरीबों की बात करते हैं। आपने गरीबों के साथ विश्वासघात किया है। आज टमाटर 250 रुपये केजी, पेट्रोल 102 रुपये लीटर, एलपीजी 1200 रुपये प्रति सिलैंडर है। आज मिल्क के दाम क्या हैं? आप इकोनॉमी की बात करते हैं। आप लार्जेस्ट, फास्टेस्ट ग्रोइंग इकोनॉमी की बात करते हैं, आप यह भाषा आजादपुर मंडी के उस आदमी के सामने रखिये, जिसके आंसू आज पूरे देश ने देखे हैं। जो रो-रो कर कहता है कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। यह जीडीपी और फास्टेस्ट ग्रोइंग इकोनॉमी की बातें उनको समझाइयेगा। आजादपुर मंडी में राहुल जी गए थे। आप किसान की बात करते हैं। आज आपका डेटा हमें मिला है कि लगभग 10 हजार किसानों ने आत्महत्याएं कर ली हैं, जिनमें किसान, श्रमिक और कल्टिवेटर्स हैं। आज पार्लियामेंट में उत्तर आता है कि 5 करोड़ लोगों को एमजीनरेगा से बाहर कर दिया गया है। आपका यह विकास है? ? (व्यवधान)

सर, आप गरीबों से विश्वासघात करिए, हम राजस्थान की तरह देश में महँगाई में राहत लाएंगे। आप आदिवासियों से अत्याचार करें, हम आदिवासी छात्रों, महिलाओं और एनजीओज के साथ भारत को जोड़ेंगे और इंडिया को जिताएंगे। India is a Union of States; we will protect it and we will win the elections. वर्ष 2024 में भारत जीतेगा, इंडिया जीतेगा, आप इतना अहंकार मत करिए। इन्हीं बातों के साथ मैं अपना प्रस्ताव रखता हूँ।

धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष: डॉ. निशिकांत दुबे ।

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा) : सर, यदि आपकी इजाज़त हो, तो मैं यहाँ से बोलना चाहता हूँ।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ठीक है।

? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता था कि अविश्वास प्रस्ताव पर राहुल जी बोलेंगे, कांग्रेस के मित्र बोलेंगे और कोई बहुत बड़ा विषय होगा, जिसके आधार पर रूल्स का फायदा उठाते हुए? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आपकी पार्टी के माननीय सदस्य ने पूरी बात कही है। ऐसा नहीं चलेगा। आप बैठिए।

? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : इसके बाद राहुल जी भी नहीं बोल पाएंगे और कोई भी अपॉजिशन का सदस्य नहीं बोल पाएगा। मैंने आपकी बातें धैर्यपूर्वक सुनी हैं, आप भी मुझे धैर्यपूर्वक सुनिए।? (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यदि वे लोग हल्ला करेंगे, तो यह हाउस नहीं चलेगा।? (व्यवधान) यह हाउस नहीं चलेगा।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: प्लीज, एक मिनट रुकिए । प्लीज, मैंने आपको अलाऊ नहीं किया है।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, यह एक महत्वपूर्ण डिबेट है। इस महत्वपूर्ण डिबेट में आपके माननीय सदस्य ने अपनी पूरी बात कही है, जिसे सबने ध्यानपूर्वक सुना है। अब निशिकांत जी अपनी बात कह रहे हैं, तो इस तरह से डिस्टर्बेंस करना ठीक नहीं है।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय निशिकांत जी ।

? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मणिपुर की बहुत चर्चा हुई। सबसे पहले मैं कहना चाहता हूँ कि मैं इस अविश्वास प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ।? (व्यवधान)

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): सर, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि टीवी पर नीचे जो चल रहा है, उसमें सरकार के किये गये कार्यों को बताया जा रहा है।? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : मैं अपनी पार्टी के नेतृत्वकर्ता आदरणीय मोदी जी और पूरी पार्टी का शुक्रगुज़ार हूँ कि इतने महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने के लिए खड़ा किया है।? (व्यवधान) अभी मैंने गौरव गोगोई जी को सुना । ? (व्यवधान)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sir, what is this appearing in the TV? ? (*Interruptions*) Something else is appearing?..? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, प्लीज बैठिए। क्या आप नो-कांफिडेंस मोशन पर चर्चा नहीं करना चाहते हैं? आप बैठिए, मैं आपको बताता हूँ।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आपको पता है कि लोक सभा टीवी और राज्य सभा टीवी को मिलाकर संसद टीवी कर दिया गया है। पहले संसद टीवी नहीं था, तो लोक सभा टीवी लाइव होता था और राज्य सभा टीवी अलग से लाइव होता था। आप इस विषय को मेरे ध्यान में लाएं हैं, मैं इसे संज्ञान में लूँगा ।

? (व्यवधान)

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत : सर, संसद टीवी सरकार की नहीं, लोक सभा की प्रॉपर्टी है। संसद टीवी पर जो दिखाया जा रहा है ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैंने व्यवस्था दे दी है। बंद हो गया है।

? (व्यवधान)

12.53 hrs

At this stage, Shri T. N. Prathapan and Shri V. K. Sreekandan came and stood on the floor near the Table.

माननीय अध्यक्ष: मैंने बताया है कि मैंने व्यवस्था दे दी है। अभी बंद हो जाएगा।

? (व्यवधान)

12.54 hrs

At this stage, Shri T. N. Prathapan and Shri V. K. Sreekandan went back to their seats.

? (व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री; कोयला मंत्री तथा खान मंत्री (श्री प्रहलाद जोशी): महोदय, जब भी चर्चा चलती रहती है, ऐसी स्क्रॉलिंग तो चलती है।? (व्यवधान) इनका भाषण तो लाइव हो रहा है।? (व्यवधान) गौरव गोगोई जी का भाषण लाइव हो गया है।? (व्यवधान) इनको प्रॉब्लम क्या है, यही मेरी समझ में नहीं आ रहा है।? (व्यवधान) इतनी देर क्यों है? ? (व्यवधान) इतनी असुरक्षा की भावना क्यों है? ? (व्यवधान) Why are they so much afraid? ? (*Interruptions*)

नागर विमानन मंत्री तथा इस्पात मंत्री (श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया): सर, ये I.N.D.I.A बहुत ही असुरक्षित है।? (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): सर, इन्होंने सोचा था कि राहुल गांधी जी का भाषण होगा और राहुल गांधी जी के भाषण को छोटा करने के लिए, ? (व्यवधान) गुमराह करने के लिए, ? (व्यवधान) राहुल गांधी जी को टक्कर देने के लिए,? (व्यवधान) राहुल गांधी जी का भाषण नहीं हुआ, ? (व्यवधान) ये बस गुगली खा गए।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: इसका बटन मेरे पास नहीं है।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: इसका बटन मेरे पास थोड़े ही है।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: क्या ये आपसे डर गए? ये आपसे डर गए।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: ये आपसे डर गए।

? (व्यवधान)

श्री प्रहलाद जोशी: ऐसा है कि इसी सदन से पारित हुई योजना का एक छोटा सा स्क्रॉल चल रहा है।? (व्यवधान) इनका लाइव भाषण हो ही गया है।? (व्यवधान) गौरव गोगोई जी का पूरा भाषण लाइव दिखाया गया है।? (व्यवधान) इसमें प्रॉब्लम क्या है? ? (व्यवधान) इतनी असुरक्षा की भावना नहीं रहनी चाहिए।? (व्यवधान) This feeling of insecurity should not be there. ? (*Interruptions*) They should not have so much insecurity feeling. ? (*Interruptions*) Whenever there is a discussion, such type of scrolling is always there. ? (*Interruptions*)

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण): आप चुप हो जाओ ।? (व्यवधान) आप शान्ति से सुनिए।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आप इतने वरिष्ठ सदस्य हैं, आप जानते हैं कि टीवी का कन्ट्रोल स्पीकर के पास नहीं होता है।

? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: नो । टीवी के कन्ट्रोल का एक सिस्टम है, जो आपने बनाया है। इतनी छोटी-छोटी बातों पर इस तरीके से गम्भीर टिप्पणी करना उचित नहीं है।

डॉ. निशिकांत दुबे जी ।

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप सीनियर हैं। आप बोलते समय ढंग से बोला कीजिए। यह तरीका ठीक नहीं है। आप क्या शब्द कहते हैं, क्या यह अच्छा लगता है?

निशिकांत जी।

? (व्यवधान)

13.00 hrs

डॉ. निशिकांत दुबे : अध्यक्ष जी, मैं इस अविश्वास प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं अपने दल के नेता माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी और पूरी भारतीय जनता पार्टी का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मुझे अविश्वास प्रस्ताव पर पहले वक्ता के तौर पर बोलने के लिए खड़ा किया है। मैं सोच रहा था कि राहुल जी बोलेंगे, क्योंकि मीडिया में तरह-तरह की खबरें आ रही थीं, लेकिन लगता है कि शायद राहुल जी आज तैयार नहीं थे, देर से उठे होंगे।? (व्यवधान) वे नहीं बोल पाए, कोई बात नहीं है। गौरव गोगोई जी ने बोला, बहुत अच्छा बोला।? (व्यवधान)

13.01hrs

At this stage, Sushri S. Jothimani came and

stood on the floor near the Table.

डॉ. निशिकांत दुबे : अध्यक्ष जी, जब श्री गौरव गोगोई बोल रहे थे, तो कांग्रेस पार्टी को इस शहादत के बारे में लोगों का क्या बलिदान है, इस बारे में कुछ पता नहीं है।? (व्यवधान) इन्होंने मणिपुर की बात कही और पूरे देश को ही नहीं, पूरी संसद को चैलेंज किया कि आप में से बहुत से लोग मणिपुर नहीं गए होंगे, आपने मणिपुर नहीं देखा है।? (व्यवधान)

13.01½ hrs

At this stage, Sushri S. Jothimani went back to her seat.

डॉ. निशिकांत दुबे : महोदय, मैं मणिपुर के इतिहास का भुगतभोगी हूं। मेरे मामा श्री एन.के. तिवारी वर्ष 1973 में अपना पैर मणिपुर में गंवा चुके हैं। वर्ष 1989-90 में उनके

ऊपर मणिपुर में अटैक हुआ। वे सीआरपीएफ के डीआईजी हुआ करते थे। जगमोहन जी ने अपनी किताब ?माई फ्रोजन टर्बूलेंस इन कश्मीर? में उन्होंने दस बार जिक्र किया है कि यदि श्री एन.के. तिवारी जैसे आफिसर नहीं होते, तो शायद कश्मीर नहीं बचा पाते और वही एन.के. तिवारी जी जब मणिपुर में आईजी बनकर गए तो आपकी सरकार ने उसी ओपियम लॉबी के तहत उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कोर्ट ने कहा कि यह आप कर सकते हैं। आप राष्ट्रवाद की बात करते हैं? आप मणिपुर की बात करते हैं? आपने अभी कहा कि असम में समझौता हुआ, आप तो असम से सांसद हैं। वर्ष 1983 के चुनाव में कितने परसेंट लोगों ने असम में वोट दिया था? कितने लोग मारे गए थे? जब आपने ऑल इंडिया असम स्टूडेंट यूनियन के साथ समझौता किया, उस समझौते का एक पार्ट था कि यह सरकार हटाई जाएगी। आपकी सरकार खत्म की जाएगी। क्या यह समझौते का पार्ट नहीं था? मैं तो माननीय गृह मंत्री जी से कहूंगा कि जब वे सदन में जवाब दें, तो वे समझौते के प्रारूप के बारे में भी जवाब दें।? (व्यवधान) मिजोरम में आपने केवल सात परसेंट वोट के आधार पर, पूरे देश को जानने के लिए बताना चाहता हूं कि लालथन हवला जी की सरकार बना दी थी। इसी तरह जब लालडेंगा के साथ आपने सरकार बनाई, जब उनके साथ समझौता किया तब सात परसेंट के साथ आप उसे डेमोक्रेसी चलाने देते? आप इतिहास में जाइए, अलग-अलग तरह की बातें करते हैं। कल राहुल जी आए, ऐसा हंगामा हुआ कि पूरी दुनिया आ गई। मैं कहता हूं कि राहुल जी गए ही कब थे? हम लोग यहां बैठे हैं, सभी सांसदों को जानकारी होनी चाहिए कि हम बजट सैशन मार्च-अप्रैल में यहां आए थे। राहुल जी बजट सैशन में थे या नहीं?

अनेक माननीय सदस्य: राहुल जी बजट सैशन में थे ।

डॉ. निशिकांत दुबे : इसके बाद हम मानसून बजट में आए। राहुल जी मानसून सैशन में हैं या नहीं?

अनेक माननीय सदस्य: जी हाँ, राहुल जी मानसून सैशन में हैं।

डॉ. निशिकांत दुबे : मैं पूछता हूं कि राहुल जी गए ही कहां थे? यह किस तरह की चर्चा है। दूसरी बात यह है कि जिस सुप्रीम कोर्ट की जजमेंट के आधार पर आए हैं, उसने अभी जजमेंट नहीं दिया है। अभी केवल स्टे आर्डर दिया है और तब भी उन्होंने कहा है

कि ?प्रधान मंत्री मौन है, प्रधान मंत्री माफी नहीं मांगते, प्रधान मंत्री चीजें नहीं बोलते।? मैं कह रहा हूं कि ये क्या नहीं कह रहे हैं? ये अभी भी दो चीजें कह रहे हैं। ये कह रहे हैं कि मैं माफी नहीं मांगूगा। आप माफी क्यों मांगेंगे? ?मोदी? तो बहुत छोटी जात है, नीच जात है, ओबीसी है। आप ओबीसी से क्यों माफी मांगेंगे, आप बड़े आदमी हैं। दूसरी बात यह है कि ?सावरकर नहीं हूं मैं।? आप सावरकर हो भी नहीं सकते हैं।? (व्यवधान) जिंदगी में आप कभी सावरकर बन नहीं सकते हैं। उस आदमी ने 28 साल जेल में गुजारे हैं। आप अपनी सावरकर से तुलना नहीं कर सकते हैं। आप कभी सावरकर नहीं हो सकते हैं।? (व्यवधान) ये I.N.D.I.A की बात करते हैं। मैं सोनिया जी का बहुत सम्मान करता हूं। यह जो I.N.D.I.A बना है, यहां जितने विपक्ष के सांसद बैठे हैं, आप रेंडम पूछ लीजिए कि I.N.D.I.A की क्या फुल फार्म है, तो शायद कुछ ही लोग होंगे जो बता पाएंगे। ये INDIA, INDIA की बात कर रहे हैं। मैं मणिपुर का शुक्रगुजार हूं।

अध्यक्ष महोदय, आपने अभी जिसको डाँटा, दानिश अली को - जिसको आपने डाँटा, ?भारत माता की जय? कहने पर भी उसको लगता है कि यह बी.जे.पी. का नारा है।? (व्यवधान) लेकिन, मैं मणिपुर का शुक्रगुजार हूं कि जितना ?इंडिया, इंडिया? आज़ादी के बाद से, वर्ष 1947 के बाद से, कांग्रेस ने नहीं किया होगा, उतनी बार यहां ? इंडिया, इंडिया? का नारा लगा।? (व्यवधान) मैं आपका शुक्रगुजार हूं।? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रधान मंत्री जी एक बात कहते हैं कि यह अविश्वास प्रस्ताव नहीं है। प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि यह अविश्वास प्रस्ताव नहीं है, बल्कि यह ऑपोजीशन में विश्वास प्रस्ताव है कि ऑपोजीशन में कौन किसके साथ है। जब माननीय प्रधान मंत्री जी ने यह कहा तो मैंने यह सोचना शुरू किया कि प्रधान मंत्री जी यह बात क्यों कह रहे हैं, यह तो हमारे खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव है, लेकिन वे कह रहे हैं कि ये ऑपोजीशन वाले अपने विश्वास प्रस्ताव की बात कर रहे हैं और उसमें वे यह देखना चाहते हैं कि कौन दल सचमुच उनके साथ है। फिर मैं उसकी तह में गया कि अविश्वास प्रस्ताव में कौन-कौन पार्टी हमारे खिलाफ है।

सबसे बड़ी पार्टी डी.एम.के. है। मैं करुणानिधि जी का बड़ा सम्मान करता हूं। इस देश को बनाने में करुणानिधि जी का बड़ा योगदान रहा है। अब आप यह समझें कि वर्ष 1976 में भ्रष्टाचार के आरोप के ऊपर इस कांग्रेस ने करुणानिधि जी की सरकार को

बर्खास्त कर दिया और वर्ष 1980 में, जब इन्दिरा जी की सरकार बनी तो यही डी.एम.के. उनके साथ हो गयी। ?आप करें तो रासलीला और हम करें तो कैरेक्टर ढीला!?? (व्यवधान)

सर, राजीव गांधी जी का मर्डर हुआ । दो कमीशन बने - वर्मा कमीशन बना और जैन कमीशन बना। जैन कमीशन ने कहा कि लिट्टे को सहयोग करुणानिधि जी की पार्टी डी.एम.के. देती थी। क्या जैन कमीशन गलत था? उसके बाद भी आपके साथ हैं। मैं तो बहुत सम्मान करता हूं। आप यह बताएं कि आप भ्रष्टाचार की बात करते हैं, ई.डी., सी.बी.आई., इनकम टैक्स की बात करते हैं तो इसी सदन के बड़े महत्वपूर्ण सदस्य हैं, मैं उनका सम्मान करता हूं, मेरे दोस्त हैं। राजा साहब, कणिमोझी जी बैठी हुई हैं। दयानिधि मारन जी हैं, जिनका विभाग बदल गया। क्या हमने आपके ऊपर 2-जी का केस लगाया? क्या हमने बंद किया?

सर, उस गरीब महिला को, बेचारी महिला को इन लोगों ने जेल में डाला ।? (व्यवधान) आप हमारे खिलाफ हैं। हमने क्या किया? हमने आपका विभाग नहीं बदला।? (व्यवधान) आप ऑपोजीशन की तरफ से यह लेकर आए हैं, आप अपनी पोजीशन और पार्टी की बात कर रहे हैं? ? (व्यवधान)

महोदय, प्रधान मंत्री जी ने जो कहा, मैं उसी को एक्सप्लेन कर रहा हूं कि प्रधान मंत्री जी ने ऐसा क्यों कहा, क्योंकि वे ?हरि अनंत, हरि कथा अनंता? वाली बात कहते हैं, शॉर्ट लाइन में बात कहते हैं।

महोदय, दूसरी बड़ी पार्टी है - टी.एम.सी.। संयोग से, माननीय राजनाथ सिंह जी यहां बैठे हुए हैं। सिंगूर का बड़ा आंदोलन हुआ। वह भारतीय जनता पार्टी की सहयोगी पार्टी थी। हमने टी.एम.सी. का साथ दिया। माननीय राजनाथ सिंह जी, पार्टी के अध्यक्ष होते हुए, ममता बनर्जी की रैली में शामिल हुए। हमने आंदोलन का साथ दिया। यदि आज आप बंगाल में सरकार बनाए हुए हैं, उसमें हमारा भी कोई योगदान है। लेकिन, आपको करप्ट किसने बनाया? नारदा का केस हमने आपके ऊपर नहीं किया, सारदा का केस हमने आपके ऊपर नहीं किया, इस कांग्रेस ने किया।? (व्यवधान) आपका विरोध उस कांग्रेस से होना चाहिए या हमसे होना चाहिए?? (व्यवधान)

महोदय, तीसरी पार्टी है लालू प्रसाद जी की आर.जे.डी.। ललन सिंह जी यहां बैठे हुए हैं। हमने उनको जेल नहीं भेजा। मैं केवल यह कह रहा हूं कि किस तरह की ऑपोजीशन की यह यूनिटी है।

सर, एक गाना है -

यह कैसा सुर मन्दिर है, जिसमें संगीत नहीं,

गीत लिखती दीवारों पर गाने की रीत नहीं ।

सर, आप यह समझिए कि यह ?आँख का अंधा, नाम नयनसुख? है। सभी एक-दूसरे से लड़ रहे हैं, लेकिन नाम रखा है - ?इंडिया।?

सर, लालू प्रसाद जी की पार्टी है। ललन जी बोलते हुए लालू प्रसाद जी के बारे में ज्यादा बताएंगे। यदि वे इस हाउस में सही-सही बोलेंगे, यदि सच बोलें, तो आज लालू प्रसाद जी के बेटे को जिसने उप-मुख्यमंत्री बनाया है, वही उसके विरोध में खड़े थे और वर्ष 1995 में यहां की कांग्रेस सरकार थी, जिसने लालू जी को अन्दर कर दिया। हमसे किस बात का विरोध है? आपका विरोध तो कांग्रेस से होना चाहिए। ललन जी पिटीशनर थे, यही तो मैं कह रहा हूं।? (व्यवधान)

सर, चौथी पार्टी मुलायम सिंह यादव जी की है। जब मुलायम सिंह जी यहां थे तब हम लोगों के लिए बड़े सम्माननीय थे। जो भी है, लेकिन उनकी देशप्रेम की भावना पर कोई चैलेंज नहीं कर सकता है। लेकिन मुलायम सिंह यादव जी की इमेज को किसने चौपट किया है? सर, मैं सारे पेपर्स ले कर आया हूँ कि विश्वनाथ चतुर्वेदी कांग्रेस के एक कार्यकर्ता हैं, वे पीआईएल करते हैं और सीबीआई का केस वर्ष 2007 में, डिसप्रपोशनेट असेट का केस मुलायम सिंह यादव जी के ऊपर हो जाता है। वर्ष 2008 में इसी सदन में मुलायम सिंह यादव जी ने आपको सीबीआई के डर से न्युक्लियर डील वाले बिल पर सपोर्ट किया या उन्होंने अपनी आइडोलॉजी के तहत किया था, यह आप जनता को बता दीजिए। उसके बाद आपने उनके ऊपर इनकम टैक्स का केस कर दिया। वहीं हमने मुलायम सिंह यादव जी के साथ क्या किया? हमको पता था कि वे ईमानदार आदमी हैं। हमको पता है कि देश के प्रति उनकी भावना कैसी है। वे पिछड़े, दलित, शोषित वर्ग से आते हैं, इसीलिए कांग्रेस ने उनके साथ यह किया। हम लोगों ने सीबीआई के सारे केसों

को खत्म किया और आज मुलायम सिंह यादव जी के ऊपर कोई केस नहीं है, फिर भी मुलायम सिंह यादव जी हमारे विरोध में हैं। उसके बाद उनको पद्म विभूषण भी हमने दिया। उस दिन सुप्रिया जी बहुत बोल रही थीं कि हमने एनसीपी को नेचुरली करप्ट पार्टी कहा है। सर, हमने कहा है, माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा है, बीजेपी कहती है, हम लोग कहते रहते हैं। मैं उसकी तह में गया कि 80 के दशक में, यह बात मैं केवल ऑपोज़िशन यूनिटी की कर रहा हूँ कि वर्ष1980 में शरद पवार साहब की चुनी हुई सरकार को किसने बर्खास्त किया? हमने नहीं किया। इस कांग्रेस पार्टी ने किया था और उस आधार पर शरद पवार साहब ने एक अलग एनसीपी बनाई थी। एनसीपी बनाने के लिए शरद पवार साहब को हमने नहीं कहा था। जब हम पहली बार जीत कर यहां आए, तब रोज़ इसी तरह से मंहगाई की बात होती थी, कमोडिटी एक्सचेंज की बात होती थी और रोज़ पवार साहब के ऊपर आरोप लगते थे, हमने नहीं लगाए और फाइनली पवार साहब जैसे सीनियर आदमी को कंज्यूमर अफेयर्स मिनिस्ट्री छोड़नी पड़ी। उसके बाद, सर, मैं कागज़ देख रहा था, वर्ष 2012-13 में, जिसके लिए कहा कि 70 हज़ार करोड़ रुपये ? 70 हज़ार करोड़ रुपये, पहले तो धीरे से बोलती थीं, हंस कर बोलती थीं तो अच्छा बोलती थीं, अभी थोड़ा ज़ोर-ज़ोर से बोलती हैं। अब आप समझिए कि वाइट पेपर इसी कांग्रेस के चीफ मिनिस्टर पृथ्वीराज चव्हाण जी ने किया था। छगन भुजबल जी के ऊपर महाराष्ट्र सदन का केस पृथ्वीराज चव्हाण जी ने किया, उन्हीं की एसीबी ने किया। 70 हज़ार करोड़ रुपये के इरिगेशन स्कैम का केस इसी कांग्रेस ने किया। हमने आपके साथ क्या किया है? हमसे किस बात की लड़ाई है? हमने आपके साथ क्या किया है? आपको तो इस कांग्रेस को देखना चाहिए था।

इसके बाद एक पार्टी फ़ारुख अब्दुल्ला साहब की है, जो कि यहां पर बड़े सीनियर सदस्य हैं। सन् 1953 में शेख अब्दुल्ला साहब को जेल में इसी कांग्रेस पार्टी ने बंद किया और सन् 1975 तक, 22 सालों तक वह आदमी जेल में रहा और इस कांग्रेस पार्टी के कारण रहा। उसके बाद समझौता किया। सन् 1975 में शेख-इंदिरा समझौता किया गया था। इनका विरोध उसके साथ होना चाहिए कि हमारे साथ होना चाहिए? यहां ओवैसी साहब बैठे हैं, उस दिन पूछ रहे थे कि मैं इधर रहूँ कि उधर रहूँ? आप तो मुसलमानों की बात करते हैं। सच्चर कमिटी की रिपोर्ट मनमोहन सरकार द्वारा लायी गई थी। उसने कहा कि पूरे देश में मुसलमानों की हालत खराब है। आपको विरोध इस कांग्रेस से होना

चाहिए या हमारे साथ प्यार होना चाहिए कि आप उसके साथ अविश्वास प्रस्ताव पर खड़े हैं।

सर, अब जेडीयू बचती है। मैं बड़ी गंभीरता के साथ एक बात आपको कहना चाहता हूँ कि वर्ष 2005 में जब जेडीयू की सरकार नहीं बनी और राम विलास पासवान जी की आवश्यकता पड़ गई तो वह मीटिंग 2 जगहों पर हुई थी। पहली मीटिंग एक पत्रकार के घर पर हुई, जिसका नाम मैं नहीं बोलना चाहता हूँ। दूसरी मीटिंग राम विलास पासवान और नीतीश जी की मेरे घर पर हुई। ? (व्यवधान) उस वक्त का मैं एक और खुलासा आपके सामने करना चाहता हूँ कि जेडीयू को यदि सबसे ज्यादा किसी ने फण्ड करवाया होगा, यदि 2, 4, 5 आदमी होंगे तो उसमें एक नाम निशिकांत दुबे का भी होगा। ? (व्यवधान) आप मेरा विरोध कर रहे हैं? ? (व्यवधान) मेरा है, मैं आन फ्लोर ऑफ दी हाऊस कह रहा हूँ और बड़ी गंभीरता के साथ कह रहा हूँ। ? (व्यवधान) आप उसकी बात कर रहे हैं? ? (व्यवधान) आप अपने मुख्यमंत्री जी से पूछ लीजिएगा। ? (व्यवधान) सर, लेकिन यह अविश्वास प्रस्ताव आया। ? (व्यवधान) यह अविश्वास प्रस्ताव किस लिए आया?

यहाँ सोनिया जी बैठी हुई है। मैं सोनिया जी का बड़ा सम्मान करता हूं। मुझे लगता है कि उनकी पार्टी की दो मन:स्थिति है। वह हिन्दू सभ्यता-संस्कृति में बिलीव कर रही है। अलौकिका पंडिता की तरह किताब में पूरी तरह से लिखा हुआ है कि एक भारतीय नारी को क्या-क्या करना चाहिए। उसकी पूरी पिक्चर सोनिया जी देख रही हैं। उनको दो काम करने हैं- बेटे को सेट करना है और दामाद को भेंट करना है।? (व्यवधान)

सर, अब आप समझिए ।? (व्यवधान) मैंने दोनों बातें कहीं कि बेटे को सेट करना है और दामाद को भेंट करना है।? (व्यवधान) मैं अपनी बात पर कायम हूं। आप यह समझें कि यह एक केस है। इनकम टैक्स का केस चल रहा है। नेशनल हेराल्ड के बारे में इनकम टैक्स का केस चल रहा है।? (व्यवधान) कांग्रेस जिस पेपर के बारे में भी कहेगी, मैं ऑन दी फ्लोर ऑफ हाउस रखने को तैयार हूं। यदि इसमें एक भी बात गलत होगी तो आप मुझे संसद सदस्यता से उसी दिन निकाल दीजिएगा। लेकिन, कांग्रेस पार्टी को सुनना चाहिए।? (व्यवधान) इनकम टैक्स अथॉरिटी ने कहा कि इस फाउंडेशन के इनके जितने केस हैं, नेशनल हेराल्ड के जितने केस हैं, उसकी असेसमेंट करें।? (व्यवधान)

सर, हाई कोर्ट का आदेश आ गया कि इसको सेंट्रलाइज करना है।? (व्यवधान) यह हाई कोर्ट का आदेश है। अभी वह सुप्रीम कोर्ट चले गए। अब आप समझिए कि इनकम टैक्स से बचने के लिए एक लाख रुपये देकर क्या कोई पाँच हजार करोड़ रुपये की कंपनी ले सकता है? इस बारे में मैडम सोनिया जी और राहुल जी बता सकते हैं, कोई दूसरा नहीं बता सकता है।? (व्यवधान) यह कह रहे हैं कि ये चीजें केवल हमारे ऊपर होती हैं।

सर, यहाँ ? * बैठे हुए हैं। वह हमारे पार्टी के सांसद है।? (व्यवधान) अभी इन्होंने 80 करोड़ रुपये इनकम टैक्स में भरा है।? (व्यवधान) यदि मोदी जी आपको चोर कहने की बात करते हैं तो हमारी पार्टी के जो भी लोग दोषी हैं, उनको भी 80 करोड़ रुपये भरने पड़े हैं।? (व्यवधान) यह मैं ऑन रिकॉर्ड कह रहा हूं कि ?* को 80 करोड़ रुपये देने पड़े। वे बी.जे.पी. के चार बार के सांसद हैं।? (व्यवधान) आप इनकम टैक्स से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट जाने की बात करते हैं। ? (व्यवधान)

सर, ई.डी. की रेड होती है। मैं आपको बताऊं कि एक भाग गया है, वह एक भण्डारी है।? (व्यवधान) मैं उसका पूरा नाम नहीं लूंगा, क्योंकि भण्डारी कोई भी हो सकता है। किसी भी दिन वह यू.के. से लौट कर आ जाएगा, मैंने इसी हाउस में कहा था कि लंदन में किसी दामाद जी का मकान है।? (व्यवधान) यह कोर्ट का ऑर्डर है। एक आदमी, जो भाग गया, उसका नाम सी.सी.थम्पी है। कोर्ट के आदेश के बाद उसका बेल हुई।? (व्यवधान)

सर, यह कोर्ट का ऑर्डर है। उस कोर्ट के ऑर्डर में सी.सी.थम्पी ने यह एक्सैप्ट किया कि उसने? (व्यवधान) जो दामाद जी हैं, दामाद जी के नाम पर कोई भी दामाद हो सकता है।? (व्यवधान) इनको दामाद जी से क्या प्रॉब्लम है? मेरा भी दामाद हो सकता है।? (व्यवधान) 12 ब्रैनसेन स्कवायर है। जिस थम्पी को कोर्ट ने आदेश दिया कि जब जरुरत होगी, तुम आ जाना।? (व्यवधान) आप समझिए कि वह भाग गया। उसने कहा कि जो 12 ब्रैनसेन स्कवायर है, वह हमारा है।? (व्यवधान) उसी तरह से संजय भण्डारी का आने वाला है, यू.के. कोर्ट ने जो आदेश किया है, उसने यह बात कही है कि वह दामाद जी का मकान है। आप क्यों भाग रहे हैं।? (व्यवधान)

सर, यह जो अविश्वास प्रस्ताव है, इसका जो मूल मंत्र है, वह यह है कि बेटे को सेट करना है और दामाद को भेंट करना है।? (व्यवधान)

सर, कल मेरी बात पर बड़ा हंगामा हुआ। न्यूज क्लिक के ऊपर बड़ा हंगामा हुआ।? (व्यवधान) आज प्रेस कांफ्रेंस हुई। उसमें मैं यह बताऊं कि यदि न्यूज क्लिक का नाम रिस्टोर हो गया, तो उससे कांग्रेस को क्या समस्या है? न्यूज क्लिक आपका कौन लगता है? पुरकायस्थ का नाम यदि रिस्टोर हो गया, तो पुरकायस्थ आपका क्या लगता है? ? (व्यवधान) रोहिणी सिंह, अभिसार शर्मा, या कोई भी हो, मान लीजिए कि ठाकुर रंजन प्रागिता हो, यदि उनका नाम डिलीट हो गया, या एक्सपंज से फिर बाहर आ गया, तो आपको क्या परेशानी है? ? (व्यवधान) आपका कोई मतलब नहीं है? ? (व्यवधान) मैं ऑन रिकार्ड एक और रेवेलेशन करना चाहता हूं कि सीपीएम के जो पूर्व जनरल सेक्रेटरी प्रकाश करात साहब थे, उनका पूरा का पूरा मेल मैं ऑन रिकार्ड लाना चाहता हूं कि जो नेविली रॉय सिंघम था, उसके साथ उनके हजारों मेल हैं और जब आप कहेंगे, मैं ऑन रिकार्ड उसको पेश कर दूंगा कि सीपीएम किस तरह से देशद्रोही पार्टी के साथ है। हम आइडियोलॉजी को मानने वाले हैं। यदि हमने सीपीएम के साथ आइडियोलॉजिकल लड़ाई की तो आज तक हमने सीपीएम के साथ समझौता नहीं किया।?(व्यवधान) मुस्लिम लीग जिसने भारत विभाजन किया, आज तक वोट बैंक की राजनीति के बाद हमने मुस्लिम लीग को साथ नहीं लिया।? (व्यवधान) आपको जिस कांग्रेस पार्टी ने रोज-रोज जलील किया, उसके साथ आप किस आधार पर शासन में हैं?? (व्यवधान) समस्या क्या है? ?(व्यवधान) हमने एक क्विट इंडिया मूवमेंट स्टार्ट किया है।? (व्यवधान) माननीय प्रधान मंत्री जी गरीब के बेटे हैं, गरीबी को समझते हैं।? (व्यवधान) आपने अभी पूरे पार्लियामेंट को देखा कि किस तरह से परेशान हुआ। मैं आपको बताता हूं कि रीजन क्या है और इतना बड़ा बखेड़ा क्यों है। मैं जिस इलाके से आता हूं, वहां संथाल परगना इलाका है। यदि रात हो जाए, कोई बीमार हो जाए तो गंगा नदी पार करने के लिए कोई पुल नहीं था।? (व्यवधान) आजादी के 75 सालों के बाद आज वहां साहबगंज का पुल बन रहा है।?(व्यवधान)

झारखंड इस देश में सबसे ज्यादा माइन्स और मिनरल्स देता है।? (व्यवधान) इस देश का 40 पर्सेंट से ज्यादा माइन्स और मिनरल्स झारखंड में है। इसके बावजूद भी

सबसे ज्यादा बेरोजगारी, सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार, सबसे ज्यादा विस्थापन, सबसे ज्यादा पलायन झारखंड में है। उसका कारण यह था कि हमारे पास कोई पोर्ट नहीं था। माननीय प्रधान मंत्री जी के कारण मल्टी मॉडल हब पोर्ट साहबगंज में गंगा नदी में बना है। मैं जहां से सांसद हूं, 75 सालों में वहां के लोगों ने रेल नहीं देखी।? (व्यवधान) मैं गोड्डा की बात कर रहा हूं, जहां से मैं सांसद हूं।? (व्यवधान) मैं आपको बताऊं कि 75 सालों में गोड्डा के लोगों ने रेल नहीं देखी।? (व्यवधान) आजादी के 75 साल बाद, आज वहां रेल है और उस रेल को देखने के लिए 5 लाख की भीड़ आई थी। आज यह सिचुएशन है।

सर, ये लोग स्वास्थ्य की बात करते हैं, अपोजीशन की बात करते हैं कि हमने बहुत विकास कर दिया। मैं एक ऐसा बदनसीब आदमी हूं कि जिसकी अपनी छोटी बहन इलाज के बिना मर गई। वर्ष 1993 में मेरे यहां कोई डॉक्टर नहीं था, जो पेट दर्द का भी इलाज कर पाए। वर्ष 1993 में मैंने अपनी छोटी बहन को खोया। आज उसका भाई होने के नाते मुझे गर्व है कि मेरे लोक सभा क्षेत्र में एम्स जैसा इंस्टीट्यूट प्रधान मंत्री ने दिया।

सर, 12 ज्योतिर्लिंग का देवघर है। वहां लोग पूजा नहीं कर पाते थे। आज बेंगलुरु से, मुंबई से, अमेरिका से, लंदन से, सभी लोग वहां एयरपोर्ट से आते हैं। आज मेरे लोक सभा क्षेत्र में 2 मेडिकल कॉलेज, 3 इंजीनियरिंग कॉलेज, 4 पॉलिटेक्निक कॉलेज, 16 आईटीआई, 2 एग्रीकल्चर कॉलेज, 1 डेयरी कॉलेज, 4 केन्द्रीय विद्यालय, ये सारी चीजें माननीय प्रधान मंत्री जी ने दी हैं। इनका विरोध यह है कि गरीब के घर में जो चूल्हा जल रहा है, जो घर-घर में पानी जा रहा है, जो नल-जल की पहल चल रही है, जो गंगा से पानी देवघर आने की बात चल रही है, उसका यह विरोध है। इनका विरोध यह है कि बाइडेन ऑटोग्राफ क्यों लेता है, इनका विरोध यह है कि पपुआ न्यूगिनी के प्रधान मंत्री उनके पांव क्यों छूते हैं और इनका विरोध यह है कि आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री उनको बॉस क्यों कहते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने, चाहे पिछड़े इलाके हों, चाहे देश हो, चाहे दुनिया हो, जितना काम किया है, उसके कारण इनको लगता है कि वर्ष 2024 में ये आने वाले नहीं हैं।

अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात महाभारत से खत्म करना चाहता हूं। महाभारत की एक बड़ी कहानी है कि द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था और चाहे कौरव पक्ष के लोग हों, चाहे पांडव पक्ष के लोग हों, वे सभी चीरहरण को देख रहे थे।

अध्यक्ष महोदय, आज माननीय प्रधानमंत्री जी ? (व्यवधान) ये लोग नहीं समझेंगे। इसलिए नहीं समझेंगे क्योंकि माननीय प्रधानमंत्री जी जब परिवारवाद की बात करते हैं तो इनको लगता है कि इनके परिवार की बात कर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी परिवार की बात नहीं करते हैं। वकील का बेटा वकील हो जाए, इसमें क्या दिक्कत है? आईएएस का बेटा आईएएस होता है। यहां आरपीएफ के डीजी हैं, उनके दोनों बेटे आईएएस बनें। जो अपनी योग्यता और क्षमता के साथ आते हैं, वे क्या कहते हैं? यहां का नेतृत्व क्या है? प्रधानमंत्री जी गरीब परिवार से हैं। माननीय नड्डा जी के परिवार में से कोई पॉलीटिक्स में नहीं था। माननीय राजनाथ सिंह जी यहां बैठे हुए हैं, एक कॉलेज में पढ़ाते थे। इनको पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया और आज डिफेंस मिनिस्टर हैं। होम मिनिस्टर के यहां से कोई पॉलीटिक्स में नहीं है और हमारे जैसे लोग हैं। यहां जितना परिवार है, वह इनके पीछे हैं क्योंकि वह परिवार का आदमी नहीं है। समस्या यह है कि उनके परिवार और परिवारवाद में फर्क है, उनको समझ में नहीं आएगा। आज जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, यह अविश्वास प्रस्ताव एक गरीब के बेटे के खिलाफ है। आज का अविश्वास प्रस्ताव उस आदमी के खिलाफ है, जिसने लोगों को मकान बना कर दिए। आज अवश्विास प्रस्ताव उस आदमी के पीछे है, जिसने लोगों को पीने का पानी दिया । आज अविश्वास प्रस्ताव उस आदमी के खिलाफ है, जिसने लोगों को शौचालय दिया। आज अविश्वास प्रस्ताव उस आदमी के खिलाफ है, जिसने सबों के घरों में उजाला लाने की कोशिश की । आज का अविश्वास प्रस्ताव गरीब के खिलाफ है। जितनी बहस होगी, उतनी माननीय प्रधानमंत्री जी की नीतियों का चीरहरण करेंगे, जैसे द्रौपदी का चीर हरण हुआ। मैं इतिहास से आपको कहना चाहता हूं, चाहे राम मंदिर बना दिया हो, धारा 370 हटा दिया हो। जब द्रौपदी का चीर हरण हो रहा था तो भीष्म पितामह, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र, जयद्रथ या युधिष्ठिर हों, चाहे अर्जुन हो, सभी लोगों ने मौन धारण किया हुआ था । आज यदि माननीय प्रधानमंत्री जी का, गांव-गरीब और किसान के हितैषी का चीर हरण करेंगे तो जिस तरह से न धृतराष्ट्र बचा, न दुर्योधन बचा, न भीष्म पितामह बचे, न अर्जुन बचे, न युधिष्ठिर बचे, आप में से कोई नहीं बचिएगा। वर्ष 2024 में आप लोगों में से कोई वापस नहीं आइएगा । हम 400 सीटों के साथ वापस आएंगे। इन्हीं शब्दों के साथ जय हिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्ष: श्री टी.आर. बालू जी ।

? (व्यवधान)

KUNWAR DANISH ALI (AMROHA): Sir, I have a Point of Order. ? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: बालू जी को बोलने दीजिए ।

? (व्यवधान)

KUNWAR DANISH ALI: Sir, I have a Point of Order under Rule 357. ? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: दानिश जी, आपकी बात रिकार्ड में नहीं जा रही है। ?

(*Interruptions*) ?*

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Sir, how can I speak? ? (*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: टी.आर.बालू जी ।

? (व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU: Hon. Speaker, Sir, I support the No Confidence Motion on behalf of the DMK Party.

13.29 hrs (Dr. (Prof.) Kirit Premjibhai Solanki *in the Chair*)

First of all, I would like to start with Dr. Nishikant Dubey who has ended his speech by reciting a quote from Mahabharat. I am also reminded of a particular episode wherein Krishna had advised Arjun to aim his arrow towards his grandfather, kith and kin, friends, and everybody.

That was the story in the Epics. But do you know, what was the end result of Mahabharata? Finally, they lost it, and King Arjun, *dharma* followers

and other people won the battle. He had recited about Draupadi and other people. But the end result is most important as far as that Epic is concerned.

I am also not willing to oppose my old friends. They are all very close friends of mine. Especially, the Leader of the House, Mr. Narendra Modi and other friends from that sides are there. They are all my friends prevailing over the ruling party. I was rather hesitating to oppose them because of the only reason that it was once led by the late lamented leader Vajpayee-ji. That was the only reason for our being reluctant. At the same time, now I am supporting the No Confidence Motion because we want to kill the evils.

Krishna advised Arjun: ?You are not going to kill your kith, kin and friends. You are going to kill the evils only.? I am doing the same thing here. There is no other way for me.

Sir, moving the No Confidence Motion against a Government with a brute majority is not fair on our part. It is not at all fair. Moreover, when we are at the fag end of this Parliament, it is not fair on the part of the Opposition to bring a No Confidence Motion. But there is no other way. The hon. Prime Minister is not coming to the House. The hon. Prime Minister has been elected as a Member of Parliament to attend the Parliament only. He is our nation?s Prime Minister now. But he is not coming to Parliament. There was no other way to bring the hon. Prime Minister to this House except to bring the No Confidence Motion. That is why this No Confidence Motion has been brought by the Opposition, the I.N.D.I.A alliance.

Sir, to start with Tamil Nadu, our hon. Prime Minister is taking step-motherly attitude towards Tamil Nadu. Just before the 2019 Elections, AIIMS foundation was laid by the hon. Prime Minister, but even after five years, they have not put even a single brick over the first brick ? (*Interruptions*)

Sir, the hon. Prime Minister had promised two crores jobs every year. By this time, 18 crore new jobs should have been created. But nothing has been done. He had also promised to give Rs. 15 lakh but he has not given even a single rupee to a household. He had promised lakh and lakhs of jobs for young men and women. But nothing has been done. He has even abolished five crores jobs in the MGNREGA. Moreover, over 46 years, the unemployment is at the highest level. He has failed to provide employment.

Sir, wherever our hon. Prime Minister goes around the world, he talks about Thirukkural, Thiruvalluvar and so on. But he is not making the rightful things for Tamil Nadu.

Sir, out of Rs. 50 lakh crore budget, can he not provide Rs. 2000 crores for construction of AIIMS in Tamil Nadu? Just now, our other friend had said that a lot of AIIMS have come up in the other parts of the country but nothing has happened in Tamil Nadu. Is it fair on the part of the hon. Prime Minister? That is why we wanted to bring it to his attention by way of No Confidence Motion.

Sir, they say that for construction of AIIMS in Tamil Nadu, the money has to come from Japan. Is it not shameful on the part of the hon. Prime Minister? Out of 41 per cent allocation, we are getting only 20 per cent of remittance payment for Tamil Nadu.

Some years back, the late great Leader Rajiv Gandhi ji and Jayawardene made an Agreement that in the 13th Amendment to the Sri Lankan Constitution it should be made, and unless 13th Amendment is made, there would be no peace in North and East of Sri Lanka. This is what Leaders of both the Governments had agreed and signed in the Agreement. But that Agreement has not yet been carried by Sri Lanka. But every now and then the Government of

India is helping the Sri Lankan Government and often extending financial support.

You have failed miserably to get back the Katchatheevu, which was owned by the King of Ramnathapuram in ancient times. They have not done it.

As regards women reservation, you are simply keeping quiet and the women folk of India are cursing you. For this purpose, he has to go out of power.

What happened to Sethusamudram? Sethusamudram is just kept in the cupboard. The only reason for it is that Madam Sonia Gandhi ji and Dr. Kalaignar Karunanidhi came to the function and stayed in the forefront. That is all. The foundation stone was laid by Dr. Manmohan Singh. The whole world was overwhelmed just by the laying of the foundation stone. The whole world appreciated it. It is a 160 years old project, the dream of Tamil Nadu. And in the middle of the project they stopped it. The Sangh Parivar has stopped it *via* a court order.

Who has created the route? The route was created by Vajpayjee only. The line, alignment, etc. was made by Vajpayjee only. It is his own child, but it has been brought up by Dr. Manmohan Singh, Sonia Gandhi ji and Dr. Kalaignar Karunanidhi. They have brought it up, and only 30 kms. is pending. Otherwise, it would have been completed in 3-4 months. It is shameful on the part of this Government. The Government should go immediately because all the Tamils -- in spite of his recital of Thirukkural or Tamil stances -- would not forgive him. He will face the consequence in 2024.

This Government has promised MSP, but 700 people have been killed in Delhi only. MSP has not come in reality so far. Rs. 15 lakh, Rs. 2 crore, etc., all are history.

As regards price rise, I would like to mention about petrol and diesel. What is the international price of crude oil? It is $ 80 or $ 85. What is the price of petrol? It is Rs. 100 to Rs. 103. This is not fair. During the UPA period it was Rs. 65 or so and at that time the crude oil price was only $ 80. What is happening now? There is a Government loan of Rs. 155 lakh crore now. What was the figure for it in UPA?s time? It was Rs. 55 lakh crore. Hence, we are opposing this Government, and you have to get out of this Government forthwith.

Coming to the treatment meted out to the minorities, minorities of Manipur have been killed ruthlessly. What has happened there? Nearly 143 people have been killed; 65,000 people have fled this particular State; and two women have been stripped, gang raped and paraded nude in the streets of Manipur.

It is worthwhile to say now that 1,044 incidents took place where women and children were brutally killed. Where is it? It is not in Manipur. It is in Ahmedabad.

In the daylight, they were killed. Our hon. Prime Minister was the Chief Minister of Gujarat at that time. 2,500 people were missing and majority of them belonged to minority community. The whole civilized world was up in anger and condemned the Gujarat's drama. Many fact-finding impartial investigations revealed that merciless power politics, prescribed crimes, targeted crimes were there and the CM of that day was accused of not condemning the violence. Your own Party's Prime Minister was condemned. There was bloodbath and Vajpayee Ji said, "Do not cross the sacred line of Raj Dharma".

I quote a PTI story published on 04.04.2022. While speaking to the reporters at the end of the day, Vajpayee ji said, "Chief Minister should follow Raj Dharma and make no distinction between the people on the basis of caste, creed and community". Further he said, "Majority needs no protection. Majority is capable of safeguarding its interest. They have the number on their own. It is the minority only which needs protection". The same thing is happening nowadays. What happened in Gujarat was 'majority versus minority'; the same thing is happening in Manipur ? Majority versus minority. It has been inflicted upon the minorities by the majorities. The Chief Minister is helpless. He is looking for guidance. And the Prime Minister is not coming to Parliament. Also, he has not gone there whereas responsible INDIA Parties went to Manipur and they understood what happened over there. That is why they are speaking loudly. Late Leader, Vajpayee ji, stood for Raj Dharma and we are standing behind the person who is doing Raj Dharma nowadays.

Today, we cannot stand behind the Government because when women are gangraped, stripped and nakedly paraded, 140 people were killed, 300 people were severely injured, and 65,000 people have already shifted for shelter to the adjoining forests, the CM of Manipur openly said that hundreds of similar cases happened. Shame on it!

The whole world has condemned what happened in Manipur in no uncertain terms. During the discussion in European Union Parliament and the British Parliament, they have condemned PM Modi and his Party very strongly. Six parliamentary groups appealed to the European Union Parliament. They say in their plea, "whereas violence in India's Manipur State has erupted along ethnic and religious lines between the mainly Hindu Meitei community and Christian Kuki tribe leading to a cycle of violence with over hundred people killed, over 40,000 displaced and the destruction of the property and places of

worship. Whereas in the latest round of violence, human rights groups have accused the BJP-led Government in Manipur and nationally of implementing divisive ethno-nationalistic policies which oppress in particular religious minorities". During Modi's visit to the USA, 75 Democratic lawmakers urged for discussion on human rights violation in India.

Lastly, I want to quote Narendra Dutta?s speech. Dutta addressed the gathering by saying ?brothers and sisters?. He said, ?brothers and sisters? and not ladies and gentlemen. Addressing a gathering by saying ?brothers and sisters? looked more homely than ?ladies and gentlemen?. He says and I quote his speech, ?Sectarianism, bigotry, and its horrible descendant, fanaticism, have long possessed this beautiful earth. They have filled the earth with violence, drenched it often and often with human blood, destroyed civilization and sent whole nations to despair.? This is what the great man, Narendra Dutta said to the world. This man introduced Hinduism to the world. This was a warning to the world from disaster. He also said and I quote, ?I am proud to belong to a religion which has taught me and the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations of the earth.? This is what he said. Now I say, it is the Narendra Modi famed Hindutva which the world is witnessing today. This is a kind of Hinduism where religious tolerance has no place. You have brought schemes and agendas like Citizenship Amendment Act, Uniform Civil Code etc. to drive away minorities

Finally, I quote Thirukkural ?

Amaindhaang Kozhukaan Alavariyaan Thannai
Viyandhaan Viraindhu Ketum

The meaning is, ?He who defies righteous order, oversteps limit and enjoys self-aggrandizement gets lost fast?. This is what I want to tell my close friend, Narendra Modi Ji. So, the whole world and the Parliamentarians in this House had warned him against the perils he is going to meet. Moreover, he is very aggressive and audacious. How come he is not attending the Parliament? The people have elected him to come to Parliament, and moreover, he is holding the position of Prime Minister. This is not fair on his part. For the last nearly one month, day in and day out, all the Members of Parliament belonging to Opposition are just pleading before him, and the Ruling Party is trying to subvert all the rules and regulation of Parliament and also the Constitution of India.

Moreover, Sir, there is one person in our State. The Legislative Assembly is in session. Hon. Chief Minister and all the Members belonging to Ruling Party as well as the Opposition are present there. But before chanting National Anthem, this man was going out. ? (*Interruptions*). *?* * on the part of the Governor who is ruling the State! ? (*Interruptions*) He has to be brought back ? (*Interruptions*).. The Home Minister should take note of it ? (*Interruptions*) and *?* should be condemned in all respects. ? (*Interruptions*)

Thank you. ? (*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY (DUM DUM): Sir, on behalf of the All India Trinamool Congress and its leader, Mamata Banerjee Ji, I rise to speak on the No-Confidence Motion. I also speak on behalf of the INDIA alliance. I express confidence in the Supreme Court which restored Rahul Gandhi Ji?s membership. Also, I support the No-Confidence Motion against this Government. I have to say that I have nothing personal against Mr. Modi. But as Brutus said in Julius Caesar, Not that I love Modi less, but I love India more. If anybody loves India, they will oppose Modi because his Government has

been a Government of fake promises and disastrous policy decisions. Still, I do not want to make it personal. I do not want to raise the question of Modi *ji*? s educational qualification over which there is a cloud. Nor do I want to speak on Gujarat riots or the BBC documentary on Modi *ji*, on Gujarat riots.

Before going to my main point on Manipur, I want to mention that this Government is destroying federalism in the country. Its purpose is to weaken all State Governments. West Bengal is a victim because Amit Shah went to West Bengal and said, ?*Agli baar 200 paar*?. BJP could not even get 80 seats. So, they had stopped all money for MGNREGA which amounts to Rs.7,300 crore and for Pradhan Mantri Awas Yojana which amounts to Rs.8,400 crore. Our Party has given a call. If the money is not released soon, then on 2nd October, we shall bring lakhs of people to Delhi to demand our share, our dues in respect of MGNREGA.

I do not want to reply to Shri Nishikant Dubey. He is a man desperate to get into the Ministry somehow or the other. So, he has to flatter the Government. He quoted all wrong history which I do not want to go into. But I want to remind him that he belongs to an organisation which did not participate in the August, 1942 movement. He belongs to an organisation which was banned after Gandhi *ji*?s murder. I do not want to have any truck with such organisation and people representing it.

Before going further, I want to mention that there are some Ministers, a sprinkling of Ministers, here. The Ministers must control themselves. Earlier, Shri Anurag Singh Thakur went to a meeting in Delhi and said, ?*Goli maro*?.?. Now, Shrimati Meenakashi Lekhi, Minister from Delhi is saying, ?Do not speak against us. We shall send ED to your home.? I want to say that I come from the land of Tagore who said:

?Ami bhoy korbo na bhai, korbo na

Du bela morar agey morbo na bhai morbo na?

It means, ?I shall not fear and I shall not die twice before dying actually.?

This Government is a Government of the heartless. They are sending delegations to West Bengal on any plea, but not one delegation has gone to Manipur where our brothers and sisters are dying. I will remind you of what Mark Antony said in Julius Caesar. I will paraphrase it and say, ?You blocks, you stones, you worse than senseless things! O You hard hearts, cruel men of BJP.? You have no compassion. That is why, you have not gone to Manipur as all the Opposition parties have gone.

Let me say a few words about Manipur. My young friend Shri Gaurav Gogoi has very ably summed up the situation in Manipur. Manipur ethnic clashes between Meiteis and Kukis started on 3rd May, 2023 and are still continuing. On 5th August, five people ? three Meiteis and two Kukis ? were killed in Manipur in escalation of hostilities. So far, over 150 people have been killed. At least 100 women were raped. Over 70,000 people have been displaced, and 350 relief camps have been set up. The delegation from INDIA went there and met people in relief camps in Imphal and Churachandpur.

Nishikant did not mention a single word about Manipur. This Government wants to forget it.

Hon. Chairperson, Sir, the actual count may be higher. Now, these incidents in Manipur remind one of the riots in Rwanda between Hutus and Tutsis some years ago. The worst incident in Manipur came to light on 19th July when a video went viral showing two Kuki women being stripped, paraded naked on the streets, and sexually assaulted apparently by Meitei men.

Sir, are we living in a civilised country when this happens to our sisters? This is unimaginable. No action was taken by the police for more than two months until the video emerged. This was due to the internet shutdown in Manipur which is still continuing, as has been mentioned by Gaurav. The Prime Minister opened his mouth after eighty days since the start of violence saying that his heart is full of pain and anger. But he has not visited Manipur till date. Now, the hon. Supreme Court has belatedly set up a three-Judge Committee consisting of women Judges. This is good because when the Government fails, the highest court of the land has to take up the matter.

Hon. Chairperson, Sir, till today, mobs of Meiteis are attacking Kuki villagers who are retaliating with SLRs, AK-47, etc. Much of the arms are coming from abroad across a porous border, and is funded by mainly poppy money/opium money. Police armouries are looted. The Government led by BJP Chief Minister, Shri N. Biren Singh, who is a Meitei, has failed to maintain law and order. I demand that he should be dismissed immediately and President?s Rule should be imposed in the State.

Hon. Chairperson, Sir, I would like to tell you one interesting thing. You are a doctor from Ahmedabad and you will realise this thing. What was the Prime Minister doing from May to July this year when Manipur was burning? He visited seven countries. He visited USA from 22nd to 23rd June. He visited Hiroshima, Japan on 20th May and Australia on 24th May. He visited France from 13 to 14th July and UAE on 15th July. He visited Egypt to see Pyramids from 24th to 25th June, and visited Papua New Guinea on 21st May, 2023. He was very proud that Mr. Joe Biden and Ms. Jill Biden gave a private dinner at the White House in his honour. हम कहते हैं कि साहब लोगों ने हमारी पीठ ठोक दी,

उन्होंने प्राइवेट डिनर दिया, जिससे वे बहुत खुश हो गए, लेकिन वहां पर हमारी बहनों की इज्जत छीनी जा रही है। This is our Prime Minister.

Hon. Chairperson, Sir, is our Prime Minister a roving ambassador or a travelling salesman? It is because in the midst of all these things, he went to Sikar in Rajasthan to campaign. Now, the Prime Minister has to reply as to why he is visiting foreign countries when Manipur was burning.

Hon. Chairperson, Sir, let me come to some other points. The major failure of the Government is to check price rise. Price of tomato is at Rs. 250 per kg. He has failed to provide jobs also. It is destroying social harmony. We have seen communal riots in Nuh and Gurugram in Haryana, and they are still continuing. They are polarising the communities and destroying federalism. In Nuh, allegations have been made that only the houses of Muslims are being demolished by bulldozers. The Government is destroying federalism by sending *?* * to States like, West Bengal, Tamil Nadu, Maharashtra and Delhi to disturb the State Governments.

14.00 hrs

Sir, the Government has been weakening institutions - Parliament to Election Commission. Modi ji never comes to attend Parliament. He has not replied to a single question in Parliament. I have seen many other Parliamentarians. I have never seen a man like him where the Prime Minister does not reply to a single question. He does not believe in Parliamentary democracy and may be ? (*Interruptions*)

माननीय सभापति : सौगत राय जी, आप बहुत वरिष्ठ माननीय सदस्य हैं।

? (व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : मैंने कोई खराब बात नहीं बोली है।?(व्यवधान)

माननीय सभापति: आप अविश्वास प्रस्ताव पर बोलिए । प्रधान मंत्री जी देश के प्रधान मंत्री होते हैं। इस प्रकार से बातें न करें, personal allegation न लगाएं।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप बैठ जाइए ।

प्रो. सौगत राय : सर, आप बहुत बड़े डॉक्टर हैं। आप बीजेपी के हैं, लेकिन बड़े डॉक्टर हैं। इसलिए मैं आपकी इज्जत करता हूं।? (व्यवधान)

Sir, the Central agencies - ED and CBI are used to target opponents and bring down Opposition State Governments as it happened in Maharashtra. BJP has a big washing machine. ? (*Interruptions*) BJP has a big washing machine. When Ajit Pawar was in NCP, he was very bad. He has Rs. 70,000 crore irrigation-scam. Now, he has entered BJP's washing machine. Now, he has become a good man. Amit Shah goes and praises him.

Sir, I talk about demonetisation ? it was one mad decision by the Prime Minister. It created chaos; 150 people died standing in queues for changing notes. Many MSMEs were totally wiped out.

Sir, on Farm Bills, the Government tried to press the Farm Bills down the throat of the farmers. They resisted boldly and ultimately, the Government had to withdraw the Farm Bills but the farmers are still committing suicide. They are still committing suicide and the promise to double farmers' income by 2022 is not fulfilled.

PSUs are being disinvested. Banks have been writing off Rs. 14 lakh crore NPAs in the last nine years. PSUs are being privatised including profitable ones like the LIC.

Sir, I am coming to the end of my tether. Special advantages have been given to some industrial houses like Tatas, Ambanis and Adanis. Adani got

most of the airports including Mumbai Airport by arm twisting and then given cement companies and then ports.

Ambanis persuaded the Government to stop import of laptops since they are bringing out laptops themselves.

Tatas are buying Air India and are now buying out Vistara. The Government has not given out a statement on the Hindenburg Research Report on the Adani share scam till today. The Prime Minister averts all discussions on Adani in the House.

Sir, today, LPG cylinder, as you may know, costs Rs. 1200. The Government earns above Rs. 27 lakh crore by increasing duties on petroleum products. Petrol now costs Rs. 106 and diesel Rs. 92 per litre in my city.

Sir, the Prime Minister does not fulfil his promise. He promised Rs.15 lakh for every household. He did not fulfil his promise. He promised two crore jobs per year. He did not fulfil it and his lack of compassion was displayed when during the pandemic a sudden lockdown was announced and lakhs of migrant workers were seen walking to their homes and some dying on the roadside. Hundreds of dead bodies were found on the banks of the river Ganga.

Sir, today, unemployment is the biggest issue. Multinational corporations are sacking a large number of technical people both in India and abroad. During pandemic, one crore jobs were lost.

Sir, they speak big of nationalism. But China is still camping on Indian territory in Galwan, Ladakh and Doklam, Sikkim. The Government cannot do anything. Now the Government wants to re-write history. It is planning to exclude the Mughal period from history books. Will foreign dignitaries not be taken to see the Lal Quila and Taj Mahal which were built by Mughals? They are promoting people who are not actually good freedom fighters like Shri V.D.

Savarkar, on whom there may be a controversy, who pleaded mercy from British to get out of cellular jail in Andaman in 1922. Bengali freedom fighters spent their full period in the Andaman but he got out?? (*Interruptions*)

Sir, the worst railway accident again showed the lack of compassion of the Prime Minister. In the rail accident in Balasore, 288 people died and thousand were injured. The Prime Minister did not care to visit Balasore nor the patients at the hospital. Our Chief Minister went there but the Prime Minister did not care to go there. He does not care. ..? (*Interruptions*)

Sir, the Government is in a hurry in introducing Vande Bharat trains and new stations. Safety is ignored. Today, truth does not come out. News channels are muzzled. Most of them are bought over by big business.? (*Interruptions*)

Sir, the Supreme Court has already expressed no confidence in the Government by setting up the three judge Committee. Sir, the Prime Minister will not win the 2024 elections. He is scared that INDIA has been informed. He is now depending on inauguration of Ram Mandir.

Lastly, let me read a quotation from John Donne as quoted in Ernest Hemingway. He said:

?Each man?s death diminishes me,
For I am involved in mankind.
Therefore, ask me not
For whom the bell tolls,
It tolls for thee.?

It is tolling for the Prime Minister, Narendra Modi. Thank you.

माननीय सभापति : वीरेन्द्र सिंह जी, आप एक ब्रीफ इंटरवेंशन कर दीजिए। फिर सुप्रिया जी बोलेंगी।

? (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया): सभापति महोदय, मैं आपकी जानकारी के लिए बहुत जरूरी सूचना बता रहा हूं कि ईडी और सीबीआई की रोज बात होती है।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Address the Chair.

? (*Interruptions*)

श्री वीरेन्द्र सिंह : महोदय, ईडी और सीबीआई को इसी संसद ने बनाया है। ईडी और सीबीआई के छापे में जो अरबों रुपये पकड़े जा रहे हैं, वह किसके बाप के पैसे हैं? ? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले जी

? (व्यवधान)

DR. NISHIKANT DUBEY : Sir, kindly refer to Rule 115 of Directions of Speaker. .?(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Okay, we will see it later on.

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले जी ।

? (व्यवधान)

श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले (बारामती): सर, इनके कारण मेरा टाइम मत कट करियेगा।? (व्यवधान)

माननीय सभापति: माननीय सदस्य, आप बैठ जाइये । You are a very senior Member. आप बैठ जाइये।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले जी ।

? (व्यवधान)

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE : Sir, I stand here today, on behalf of the NCP and INDIA Team, to speak in support of the No-Confidence Motion.

Sir, why do you really think we brought this No-Confidence Motion? It is because we are representatives of the Indian citizens.

It is the sentiment of the nation for which we are standing here. This is what people tell us. What does a Member of Parliament do? He is the voice or she is the voice of what the citizens of India feel.

14.10 hrs (Shri Rajendra Agrawal *in the Chair*)

That is our moral duty. I thank Shri Gaurav Gogoiji for moving this Motion, which is the true emotion of an Indian citizen today.

There is Mr. Friedmen, who is one of the best economists the world has ever seen. I would like to quote him: ?One of the great mistakes is to judge policies and programmes by their intentions rather than their results.? I am not taking about the intentions of this Government. The outcome or the result is something which deeply pains me. That is why, the No Confidence Motion has been moved. I will be coming to the main point, which is Manipur. But there are a few short points which I would like to make before that.

Whenever I think of this Government, the first thought that comes to my mind, the word that comes to my mind is ?hubris?. I would like to quote Mahatma Gandhi: ?It is unwise to be too sure of one's own wisdom?. Every time this Government talks, they talk not only of the moment, but also of the future. हम तो आने वाले हैं, आप तो खत्म होने वाले हैं।

This is a democracy. We should encourage each other. While this is going on, I can think of the only word for the attitude and the approach of this Government. Even the Ministers say, when we are sitting here, इनको तो हाउस चलाना ही नहीं है, ये करना नहीं चाहते हैं। अभी तो ज़ुम्मे-ज़ुम्मे हुए हैं, राज्य सभा से आये हुए। Are you going to judge us? भूल गए, आप तो तब थे नहीं। पता नहीं, आप कौन-से गवर्नमेंट में काम करते थे। They are judging all the Members of Parliament. We are not officers; we are public servants. जैसे प्रधानमंत्री जी स्वयं को प्रधानसेवक कहते हैं, हम भी यहाँ पर सेवक बनकर ही बैठे हैं, उन्हीं के लिए तो यहाँ खड़े हैं।

So, the attitude of this Government is hubris. There is no other word. Why are we feeling this? जैसे- नवरत्न। इनको बड़ा शौक है ऐसा बोलने का। नवरत्न- नौ साल। They had this big campaign. All the Ministers were sent all over the country to talk about their nine points. I will tell you in short about the achievements of this Government in nine years. What are the great achievements of this Government in nine years? State Governments have been toppled by BJP. Is it a fair democracy?

महँगाई । बहुत हो गई महँगाई की मार, अबकी बार?, शायद यह सबको याद होगा। एलपीजी के प्राइस ने कर्नाटक इलेक्शन में दिखा दिया कि एलपीजी के प्राइस का इफेक्ट क्या होता है। How many institutions have been broken? जुमले पर जुमला। I like Amit Shahji. वे सच बोलते हैं, आपकी बात साइड से कम बोलते हैं। गडकरी साहब बोले थे कि यह जुमला है, जो गले की हड्डी हो गया है। यह नीचे जा रही है, न

बाहर आ रही है। That is the problem. I have shown the indexes where India has fallen globally. को-ऑपरेटिव फेडरलिज्म के बारे में तो हम बोल-बोलकर थक गए।

I will be coming in two minutes to indicators of economy. Law and order situation is alarming in Manipur, Haryana, and Jammu and Kashmir. There were one or two cases in Maharashtra also.

सर, नौ साल में बीजेपी ने नौ सरकारें गिराई हैं। अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, मणिपुर, मेघालय, कर्नाटक, गोवा, मध्य प्रदेश, पुडुचेरी और महाराष्ट्र में दो बार सरकार गिराई है। They are talking about seven sins of Mahatma Gandhi. उस दिन मुझे अच्छा लगा, जब श्री अमित शाह जी बोल रहे थे- सिद्धांत के बारे में। In seven sins of Mahatma Gandhi, उसमें एक कथन है- ?politics without principles?. मुझे याद है, जब बीजेपी सरकार में नहीं थी, तब कह रही थी- ?Party with a difference?. How are you a party with a difference? मैंने नौ साल में नौ सरकारें गिनाई हैं।

उसके बाद, बहुत हो गई महँगाई की मार । I think Professor Roy has touched some of it. He only spoke about tomato. लेकिन प्याज का क्या है, दाल का क्या है, आटे का क्या है, नमक का क्या है, चावल का क्या है, तेल का क्या है, चाय और दूध का क्या है? जब यूपीए की सरकार थी, तो ये सारी थाली पाँच सौ रुपए के अन्दर पड़ती थी। आज आप इनके भाव देखेंगे, तो इस सप्ताह में ये एक हजार रुपए के ऊपर हैं। This is the food inflation over a period of time. बहुत हो गई महँगाई की मार। प्याज और दूध के बारे में छोटा-सा उदाहरण देती हूँ। महाराष्ट्र में इतना प्याज था, मैं कॉमर्स मिनिस्ट्री से विनती करके थक गई, पीयूष गोयल जी को मैंने ट्वीट भी किया था और उनका जवाब भी आया था। मैंने उनसे कहा कि महाराष्ट्र में जो प्याज पड़ा है, उसे कोई नहीं ले रहा है। प्लीज, आप उसे बाहर भेज दीजिए। Globally, there were less onions. There was no production but India had a surplus. Why did you do this? This is why we have no confidence in this Government. आज यहाँ जब आप प्रोडक्शन दिखा रहे थे, उसमें दिखा रहे थे कि मिल्क का बहुत अच्छा प्रोडक्शन हुआ है।

Why I do not have confidence in this Government is because it is anti-farmer. फार्म लॉज़ के बारे में आपने बोला, डब्लिंग ऑफ इनकम के बारे में बोला। कौन सी इनकम डबल हुई है? दूध के बारे में इसी सरकार ने एक पेपर निकाला था कि we will allow import of milk from abroad. When there is surplus in this country, यहां के किसान को भाव नहीं मिल रहा है, तो आप बाहर से क्यों दूध ला रहे हैं? प्याज तो नहीं भेज रहे? प्याज भेजने के लिए मनाही है। यहां किसान मर रहा है, लेकिन बाहर से आप दूध लाएंगे। क्या वह अलाउड है? How can we have confidence in this Government? How can we have faith in this Government? ? (*Interruptions*) I am not yielding. ? (*Interruptions*) I will be happy to Table it? (*Interruptions*) Mr. Pawar had written to the Minister, I will Table it. ? (*Interruptions*) I will one hundred per cent Table it. I have no problem because Mr. Pawar had only written to one of your Ministers and that letter had to come to the Government of Maharashtra. I will be happy to do it. ? (*Interruptions*)

There is a tweet, I remember, where there were issues raised. आप कहते थे कि ?अच्छे दिन? आएंगे। मैं इसके बारे में पूछना चाहती हूं। In health and survey index, India has gone down; in hunger index, India has gone down; in women freedom index, India has gone down; in the world happiness index, India has gone down; in the environment protection index, India has gone down; in the case of gender equality, India has gone down; and in democracy, India has gone down. ? (*Interruptions*) मैं और कितनी चीजों के बारे में आपको पढ़ाऊं? उनको टेबल कर दूंगी। आपको ऐसी कितनी चीजें गिनवाऊं? आप तो मेरा भाषण सुन-सुनकर थक गए । मैं संक्षेप में बोलूंगी because, I think, Sougata babu has already spoken on those points. I am only repeating them. ? (*Interruptions*)

?सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास?। We have seen the horrific death of 288 people.

आप वंदे भारत की बात करते हैं। यह अच्छी बात है, मैं उसका स्वागत करती हूं। लेकिन वंदे भारत के साथ ही आप गरीबों के लिए और ट्रेन्स लाते, और गरीब रथ ट्रेन्स

होतीं, तो मैं भी आपके साथ बोलती कि यह अच्छी बात है। वंदे भारत की कौन सी ट्रेन्स कहीं रुकती हैं?

मेरे निर्वाचन क्षेत्र में तीन रेलवे स्टेशंस हैं ? दौंड, नीरा और भिगवन। वहां की सब ट्रेन्स बंद कर दी हैं। There is no stoppage. इस वंदे भारत का मैं क्या करूं? वह तुरंत एक सेंकड में निकल जाती है। क्या उसको बस देखें? बच्चों को दिखाएं कि यूपीए की जब सरकार थी, तब यहां दस-दस ट्रेन्स रुका करती थीं। ? (व्यवधान) बेटा, जब एनडीए की सरकार आई, तो यहां से जो ट्रेन जाती थी, वह आज यहां रुकती नहीं है। वंदे भारत ट्रेन गरीब के लिए नहीं है, गरीब रथ ट्रेन गरीब के लिए है। ? (व्यवधान) जब ट्रेन दौंड स्टेशन पर रुकती थी, तो वहां का किसान उससे पुणे जाता था। वहां का मेहनत करने वाला बच्चा सीखने के लिए जाता था। वहां के जो लोग हैं, जो लेबर डिपार्टमेंट के लोग हैं, वे उस ट्रेन से वहां जाते थे। आज एक ट्रेन वहां नहीं रुकती है। हम स्टॉपेज मांग-मांगकर थक गए।

परसों, जब प्रधान मंत्री जी का प्रोग्राम हुआ था, वह एक बड़ा कार्यक्रम था, बड़ा मंडप लगा था। चाय-कॉफी की व्यवस्था थी, लेकिन दौंड में ट्रेन नहीं रुकती है, न वंदे भारत रुकती है। बस, प्रोग्राम तो हो गया, एक और जुमला हो गया। मैं वंदे भारत के खिलाफ नहीं हूं, डेवलपमेंट के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन यह वास्तविकता है। ? (व्यवधान)

सर, मैं और बोलना चाहती हूं। ? (व्यवधान) आज सेंट्रल गवर्नमेंट का डेब्ट क्या है? इसके बारे में प्रोफेसर रॉय बोले थे। There is increase in the Central Government debt. ? (*Interruptions*) It was Rs. 55.87 lakh crore in 2014. It has become Rs. 155.6 lakh crore. It is the debt of this Government. There is an increase of 178.5 times in the Central Government debt. ? (*Interruptions*) How are we going to pay this Central Government debt?

There is an external debt. The external debt in India has gone from USD 624.7 billion at the end of March, 2023 from USD 440 billion. How are you going to pay this? You are going to pay this by selling the family?s silver. ?

(*Interruptions*) फिर आप पैसे वापस कैसे करेंगे? इसीलिए, आपको एलआईसी को बेचना पड़ रहा है, आईडीबीआई को बेचना पड़ रहा है। पता नहीं कल आप ओएनजीसी भी बेच दें? पता नहीं यह सरकार क्या करेगी? This is why, we have no confidence in this Government. How is this economy going to work? ? (*Interruptions*)

Now, I come to the point of cash in circulation. ? (*Interruptions*) डीमॉनिटाइजेशन कर दिया कि अब कोई कैश नहीं रखेगा। The cash in circulation today has increased. फिर ये कहते हैं कि इकोनॉमी का साइज़ बढ़ गया। But the percentage of money is the same. How can you say this? ? (*Interruptions*) The cash in circulation was Rs.12.83 lakh crore which increased to Rs. 33.48 lakh crore in 2020, nearly 1.6 per cent increase in bank notes in circulation. ? (*Interruptions*) डीमॉनिटाइज़ेशन करके आपने क्या पाया?

The non-performing assets are to the tune of Rs. 18.2 lakh crore. आप अगर इसे राइट-ऑफ कर रहे हैं, तो किसान का भी राइट-ऑफ कर दीजिए। आपने 18.2 लाख करोड़ रुपए किसके किए हैं? पता नहीं इसमें कितने ज़ीरो हैं? इतनी गिनती मुझे तो नहीं आती है।

The other point relates to renunciation of Indian citizenship by High Net-worth Individuals. About 12 lakh such individuals have left this country. How will the country?s economy grow? Then, you talk about doubling of farmers? income. If these are the things, how can we trust this Government? महंगाई है, बेरोजगारी है, आप देख रहे हो कि किसान का हाल क्या है। How can we support this Government? आप बताइए।

Now, I come to the last point which is the most important and due to which all this happened. It relates to the shameful blunders in Manipur by the State Government. I demand that just today, after this, the Chief Minister must resign. ? (*Interruptions*) How can you allow this? ? (*Interruptions*) See the figures, people died ? 179; people displaced ? 60,000; relief camps ? 350;

people still in camps ? 40,000; houses burnt ? 3,662; religious places burnt ? 321; companies of Central Forces deployed ? 161; and cases of rioting, murder and rapes ? 10,000. ? (*Interruptions*) 10 हजार से ज्यादा। Have we become so insensitive? This is the problem with this Government. I want to seek a clarification which Shri Gaurav Gogoi touched in a very small way. I am very confused. So, I would like to ask this question to the Government.

There is a PIL filed in the NIA court. Mr. Haokip of the United Kuki Liberation Front said that he had written to the Home Minister, Shri Amit Shah*ji,* regarding a claim that UKLF had helped BJP candidates win in 2017 Assembly Elections, as per an arrangement with some other Chief Minster and a Senior BJP leader, whom I do not want to name. These are organisations which are grey. So, is this Government anti-national? This is my question. ? (*Interruptions*) I am asking a question, and not making an allegation. ? (*Interruptions*) This is what is coming in newspapers. ? (*Interruptions*) I am not commenting on anything that has gone wrong anywhere. In Manipur, today, if we talk about our women, it does not matter who they are, they are Indians first. ? (*Interruptions*) किसी की तो बेटी है, किसी की तो बहू है, किसी की बहन है, किसी की बीवी है। Will you allow this to happen and shame the women of this country? This is what this Government stands for. You ask your conscience. अंतरात्मा से एक बार पूछ लीजिए। How can you support a Government like this? This is not about ?Them? vs. ?Us?. This is about the dignity of the women of this nation. ? (*Interruptions*) उसकी इज्जत उछालोगे, and this Government is going to keep quiet. ? (*Interruptions*) How are you going to allow this? ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Now, please conclude.

? (*Interruptions*)

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE: I will make one small suggestion to this Government that what this Government should really do. ? (*Interruptions*) हर प्रदेश में, किसी भी प्रदेश में हो, महाराष्ट्र की हो, राजस्थान की हो, किसी भी प्रदेश की हो, वह किसी की तो बेटी है। ? (*Interruptions*) Two wrongs do not make a right. ? (*Interruptions*)

I would like to make a suggestion to this Government. ? (*Interruptions*) I am not criticising this Government but making a suggestion. ? (*Interruptions*) What should they do now is what I am referring to them. I would like to quote what Mahatma Gandhi said:

> ?I offer you peace. I offer you love. I offer you friendship. I see your beauty. I hear your need. I feel your feelings. My wisdom flows from the highest Source. I salute that Source in you. Let us work together for unity and peace.?

That is what Manipur needs. ? (*Interruptions*) These guns are not going to solve all our problems. ? (*Interruptions*) Again, I want to remind this Government that 2024 is their only goal. I would like to quote Julius Caesar here, as Prof. Ray also talked about it:

> ?It?s only hubris if I fail.?

In the epic poem, ?Paradise Lost? by John Milton, the character of Satan displays hubris when he attempts to rebel against the God?s rule in Heaven, he eventually declares that it is better to reign in Hell than serve in Heaven. ? (*Interruptions*) So, I think, this Government needs to re-think. I stand here by INDIA for the larger good of this nation and the dignity of every citizen who deserves it, and this Government is failing the poor and the honest people of this country. ? (*Interruptions*) Thank you. ? (*Interruptions*)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण): सभापति जी, आपने मुझे अविश्वास प्रस्ताव पर अपनी पार्टी की तरफ से अपना मत प्रकट करने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आभारी हूं।

माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने वर्ष 2018 में ही कहा था कि विपक्ष मेरे खिलाफ वर्ष 2023 में अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएगा। आज वैसे ही हो रहा है। वर्ष 2018 में विपक्ष अविश्वास प्रस्ताव लाया था और वर्ष 2019 में वर्ष 2014 से भी ज्यादा सांसद एनडीए के चुनकर आए। वर्ष 2014 में एनडीए के सांसदों की संख्या 336 थी और वर्ष 2019 में बढ़कर 353 हो गई। आज फिर से विपक्ष द्वारा सदन में अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है और फिर से वर्ष 2024 में यह संख्या 400 पार हो जाएगी। आज यहां ?अविश्वास? की चर्चा नहीं हो रही है, यह चर्चा ?अविश्वास? के खिलाफ ?जन विश्वास? की है क्योंकि जन विश्वास एनडीए के साथ है, मोदी जी के साथ है। आपके खिलाफ दो बार लोगों ने ही अविश्वास प्रस्ताव वर्ष 2014 में और 2019 में पारित कर दिया था। अब वर्ष 2024 में जनता हैट्रिक करने जा रही है।

महोदय, इन्होंने अपना नाम ?यूपीए? से बदलकर ?इंडिया एलायंस? कर दिया है। इन्हें लगता है कि ?इंडिया? नाम रखने से भारत के लोग इनके साथ हो जाएंगे, लेकिन मुझे यहां कहना है कि इन्होंने जो ?यूपीए? नाम बदला है, वह इस कारण बदला है कि इन्हें शर्म आती है क्योंकि ?यूपीए? का नाम सुनते ही लोगों के दिमाग में स्कैम, घोटाले, भ्रष्टाचार याद आता है। 2-जी घोटाला हो, अगस्ता स्कैम हो, आतंकी हमले हों, रिमोट कंट्रोल वाली सरकार हो, इसलिए वर्ष 2014 में लोगों ने कांग्रेस का हाथ छोड़कर मोदी जी को देश की कमान सौंपी। आज यहां ये कहते हैं कि ?नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहा हूं।? मुझे लगता है कि एक आदमी के विरोध में सभी लोग इकट्ठा हो रहे हैं। जिसका कोई नेता नहीं है, जिसकी नीयत नहीं है और जिसकी कोई नीति नहीं है, ऐसा एलायंस खड़ा हुआ है। वर्ष 2004 से लेकर 2014 तक यूपीए-1, यूपीए-2 ने देश पर राज किया, लेकिन देश को सिर्फ घोटाले और भ्रष्टाचार मिला। आतंकी हमले इतने हुए कि देश का कोई बड़ा शहर आतंकी हमलों से बचा नहीं है। आज ?इंडिया एलायंस? नाम देकर समझते हैं कि लोगों को डेमोक्रेसी के नाम से यहां बहलाया जा सकता है। आज इस ?इंडिया एलायंस? में हर नेता ?पीएम इन वेटिंग? है। हर नेता को लगता है कि मैं पीएम बन जाऊं, क्योंकि इस टीम के पास कोई कैप्टेन नहीं है और इन्हें मैच लड़ना है तथा वर्ल्ड कप जीतना है। हमारे मराठी में एक कहावत है, जिसका मतलब है कि ? मजबूरी इंसान को क्या-क्या करने पर मजबूर कर देती है।? यह जो विपक्ष है, इसका एलायंस नहीं है, यह विनाश का गठबंधन है। यहां सिर्फ ?एनडीए? वर्सेज ?इंडिया? की

लड़ाई नहीं है बल्कि ?स्कीम? वर्सेज ?स्कैम? की लड़ाई है। यहां पर ?यूपीए-1? और ?यूपीए-2? के समय की उपलब्धियां तथा पिछले 10 साल के समय में ?एनडीए? ने जो उपलब्धियां हासिल कीं, मेरे पास ?ए? से ?जेड? तक उनकी सूची है।

महोदय, इनके समय ?ए? से ?आदर्श सोसाइटी स्कैम? और एनडीए के समय ?ए? से ?आत्मनिर्भर भारत?, ?बी? से ?बोफोर्स स्कैम? और यहां ?बी? से ?बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ?, ?सी? से ?कॉमन वेल्थ गेम्स स्कैम? और यहां पर ?सी? से ?क्लीन एयर प्रोग्राम?, ?डी? से ?डीएलएफ लैंड केस? और यहां पर ?डी? से ?डिजिटल इंडिया।?

वहां पर ?E? से ईपीएफओ स्कैम, यहां पर ?E? से इनर्जी रिफॉर्म्स। वहां ?F? से फॉडर स्कैम और यहां पर ?F? से फेम स्कीम। वहां ?G? से 2G स्कैम, यहां पर ?G? से गोकुल मिशन। वहां पर ?H? से हर्षद मेहता स्कैम और यहां पर हाउसिंग फॉर ऑल। ऐसी सूची ?Z? तक है। वे भूल गए होंगे, अभी वे यहां बैठे नहीं हैं।

महोदय, आज यहां मणिपुर की बात हुई। मणिपुर में जो हो रहा है, वह हम सबके लिए चिंता का विषय है। इसकी हम निंदा करते हैं और इस पर गम्भीरता से विचार होना जरूरी है और कार्रवाई भी होनी जरूरी है। विपक्ष मणिपुर पर सिर्फ राजनीति करना चाहता है।

वर्ष 2014 तक नॉर्थ-ईस्ट के सात राज्यों में से चार राज्यों में कांग्रेस की सत्ता थी और एक राज्य में लेफ्ट की सरकार थी। आज तकरीबन सारा नॉर्थ-ईस्ट एनडीए के साथ है क्योंकि कांग्रेस नॉर्थ-ईस्ट के बारे में कभी गम्भीर नहीं थी, इसलिए कांग्रेस को छोड़कर नॉर्थ-ईस्ट ने एनडीए और मोदी जी का हाथ थामा। आज चाहे केन्द्रीय मंत्री हों, प्रधान मंत्री हों, वे नॉर्थ-ईस्ट में 50 से ज्यादा बार जा चुके हैं। त्रिपुरा पीस अकॉर्ड, 2019; बोडो पीस अकॉर्ड, 2020; ब्रू रीहैबिलिटेशन एग्रीमेंट हो या असम-मेघालय बाउंड्री एग्रीमेंट हो, ये सभी बड़े कार्य वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच सरकार ने किए।

अगर यहां पर डेवलपमेंट का विषय लें तो वर्ष 2014 से लेकर वर्ष 2019 तक मात्र पाँच सालों में यहां पर 2,731 किलोमीटर के राष्ट्रीय राजमार्ग बनाए गए। वर्ष 2009 से वर्ष 2014 तक दस सालों में मात्र 1,000 किलोमीटर के मार्ग यहां बनाए गए। आज़ादी के बाद से 65 सालों तक यहां सात राज्यों के लिए मात्र 9 एयरपोर्ट्स थे, जिनकी संख्या आज

बढ़ कर 16 हो गयी है। वर्ष 2014 से पहले रेलवे बजट का आवंटन यहां पर सिर्फ 2,000 करोड़ रुपये थे, लेकिन आज इसका रेल बजट आवंटन 10,200 करोड़ रुपये का है।

यहां पर आंतरिक सुरक्षा की बात कर रहे थे। मुझे लगता है कि इस देश पर जिन्होंने 65 सालों तक राज किया, यूपीए के कार्यकाल में दस सालों में जितने आतंकी हमले यहां पर हुए, मुझे लगता है कि हर बड़े शहर के ऊपर आतंकी हमले हुए। यहां गौरव गोगोई जी बोल रहे थे कि प्रधान मंत्री जी मौन हैं। अभी यहां गौरव जी नहीं हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि वर्ष 2006 में मुम्बई में जब ट्रेन विस्फोट हुआ, तब कौन मौन था? वर्ष 2008 में जयपुर बम विस्फोट हुआ, तब कौन मौन था? वर्ष 2008 में बैंगलोर में सीरियल ब्लास्ट हुए थे, तब कौन मौन था? वर्ष 2008 में मालेगांव बम विस्फोट हुआ था, तब कौन मौन था? मुम्बई, जो फाइनैंशियल कैपिटल है, वहां 26/11 की घटना हुई, तब कौन मौन था? वर्ष 2010 में पुणे में जर्मन बेकरी की घटना हुई, तब कौन मौन था? वर्ष 2013 में हैदराबाद में बम ब्लास्ट हुए, तब कौन मौन था? तब रिटैलिएशन के नाम पर सिर्फ चिट्ठी लिखकर अपनी नाराज़गी प्रकट कर देते थे। लेकिन, जब पुलवामा की घटना हुई, तब बालाकोट में एयर स्ट्राइक करके मोदी जी ने उत्तर दिया। जब उरी की घटना हुई, तब सर्जिकल स्ट्राइक करके मोदी जी ने दुश्मनों को उत्तर दिया, क्योंकि उन्हें पता है कि अब चिट्ठी और मैसेजेज़ के दिन खत्म हो गए, अभी कुछ करेंगे तो सीधे मिसाइल्स आएंगे।

महोदय, अभी यहां मनीष तिवारी जी नहीं हैं। मनीष तिवारी जी ने अपनी एक पुस्तक में 26/11 की घटना के बारे में लिखा था -

> ?For a State that has no compunctions in brutally slaughtering hundreds of innocent people, restraint is not a sign of strength; it is perceived as a symbol of weakness. There comes a time when action must speak louder than words. 26/11 was one such time when it just should have been done.?

ये खुद ही कह रहे हैं कि हमने कुछ किया नहीं है और आज मोदी जी से सवाल पूछ रहे हैं कि मोदी जी मौन हैं। मुझे लगता है कि आज देश मोदी जी के हाथों में बहुत सुरक्षित है। इसलिए पूरे विश्व में यह संदेश गया है कि मोदी सरकार आतंकियों के सामने

झुकने वाली नहीं है। पिछले 9 सालों में क्या-क्या डेवलपमेंट हुआ है, मैं उसके बारे में थोड़ा-बहुत यहां पर बताना चाहूंगा। पिछले 9 सालों में 54,000 किलोमीटर के नेशनल हाइवेज़ बनाए गए। एयरपोर्ट्स की संख्या 74 से बढ़ कर 148 की गई है। 1218 रेलवे स्टेशंस के अपग्रेडेशन हुए हैं। वंदे भारत ट्रेनों की शुरूआत हुई है। स्मार्ट सिटीज़ बनाई गई हैं। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत महिला सम्मान को देखते हुए हर घर में शौचालय बनाने का काम किया गया है। स्वतंत्रता के बाद आज-तक लोगों को नल से जल नहीं मिल रहा था, लेकिन आज यहां पर लोगों को हर घर नल से जल देने का काम सरकार कर रही है। आयुष्मान भारत योजना लोगों के लिए लागू की गई है। कोविड में 2 बिलियन वैक्सीनेशन इस देश में किए गए और मैत्री योजना के अंतर्गत बाकी देशों में 29 करोड़ वैक्सींस मोदी जी ने भेजी हैं। आज हमारी इकनॉमी 5वीं लार्जेस्ट इकनॉमी बनी है और डिजिटल ट्रांज़ैक्शंस में 40 प्रतिशत हमारा हिस्सा है। स्टार्ट-अप में 108 यूनिकॉर्न्स यहां पर बने हैं। एफडीआई में भी हम आगे हैं। ये उपलब्धियां पिछले 9 वर्षों की हैं।

सर, मैं महाराष्ट्र से आता हूँ, मुंबई से आता हूँ तो महाराष्ट्र की कुछ बातें यहां पर करना चाहता हूँ। मैं बताना चाहता हूँ कि जब महाराष्ट्र में ढाई सालों तक इनकी सरकार थी, तब किस प्रकार से काम हो रहे थे। किस प्रकार से केंद्र के सभी प्रोजेक्ट्स को रोकने का काम महाराष्ट्र सरकार ढाई सालों तक करती रही। बुलेट ट्रेन हो, मेट्रो हो, इनकी खुद की सरकार में मुंबई-नागपुर जैसा महामार्ग हो, उसको भी रोकने की कोशिश इन्होंने की थी। मुंबई के आरे में कारशेड को पर्यावरण के नाम पर इन्होंने बनने नहीं दिया। आज उस कारशेड के न बनने के कारण 10,000 करोड़ रुपये से ज्यादा की लागत मेट्रो में लगने वाली है। ये पैसे किसकी जेब से जाने वाले हैं? जो टैक्स भरते हैं, उनकी जेब से ये पैसे जाने वाले हैं। ऐसा काम इन्होंने किया था। क्योंकि इन्फ्रास्ट्रक्चर की तो इनको जरूरत नहीं थी, इसलिए इन्फ्रास्ट्रक्चर के सभी कामों पर रोक इन्होंने लगाई, क्योंकि घर के बाहर ये निकलते नहीं थे, इसलिए इनको इन्फ्रास्ट्रक्चर की जरूरत ही नहीं थी। पिछले ढाई सालों में एक अलग रिकॉर्ड महाराष्ट्र में स्थापित हुआ। ? (व्यवधान) ढाई सालों में एक नया रिकॉर्ड महाराष्ट्र में बनाया गया कि ढाई सालों में सिर्फ ढाई दिन मंत्रालय जाने का गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड हमारे मुख्य मंत्री जी ने बनाया था। ऐसा काम महाराष्ट्र में पिछले ढाई सालों में चालू था। आज कुछ लोग यहां पर कह रहे थे, मैंने सुना कि परसों भी कह रहे थे कि गद्दार लोगों के बीच में अमित शाह जी बैठे हैं। मुझे इनको

पूछना है कि वर्ष 2019 में जब आपने चुनाव लड़ा, तब आप किसकी फोटो लगा कर लड़े थे और किसके अलायंस के साथ महाराष्ट्र में आप लोगों के समाने गए थे? उस चुनाव में लोगों ने मेंडेट शिव सेना और भारतीय जनता पार्टी को दिया था। लेकिन चुनाव के बाद ऐसी परिस्थिति बन गई कि इनको लगने लगा कि मैं मुख्यमंत्री बन जाऊं और बाला साहब के विचार क्या होते हैं, हिंदुत्व के विचार क्या होते हैं, उसको कौन पूछता है। उसके बाद एमवीए गठबंधन बना कर वहां पर सरकार बनाई। इन्होंने हिन्दुत्व के विचारों को बेचने का काम किया। इन्होंने बाला साहब के विचारों से दूर जाने का काम किया। बाला साहब जी जो कहते थे, उनकी एक बात मैं यहां पर कहना चाहता हूं- ?मैं शिवसेना का कांग्रेस से गठबंधन नहीं होने दूंगा। अगर ऐसा हुआ तो मैं अपनी दुकान बंद कर दूंगा।? वह कहते थे कि चुनाव के दरम्यान आप एक-दूसरे को गालियाँ देते रहते हैं और चुनाव के बाद गठबंधन करते हैं, फिर आप लोगों के सामने किस मुंह से जाएंगे। यह मैं नहीं, बल्कि बाला साहब कहते थे। इन्होंने भी ऐसा ही किया, चुनाव एक के साथ लड़ा और फिर जीत कर आने के बाद अपनी कुर्सी के लिए, अपने सभी विचारों को बाजू में रख कर, वहां पर एक अनैतिक सरकार बनाई। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति: अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। यहां पर किसी ने सोचा नहीं था कि कांग्रेस के साथ शिवसेना का कभी गठबंधन होगा।

निशिकांत जी, सपने में भी किसी ने ऐसा नहीं सोचा था । लोगों ने भी सोचा नहीं था, लेकिन लोगों के साथ सही मायने में गद्दारी करने काम, जिन लोगों ने सरकार बनाई, उन लोगों ने किया। इन्होंने 13 करोड़ वोटर्स के साथ गद्दारी की। हमने बाला साहब के विचारों को आगे ले जाने का काम किया।

महोदय, इतना ही नहीं, इन्होंने समाजवादी पार्टी के साथ भी अलाएन्स किया, जिन्होंने कारसेवकों पर गोलियाँ चलाने का काम किया था। इन लोगों ने महाराष्ट्र में हनुमान चालीसा पढ़ने पर भी रोक लगा दी। ? (व्यवधान) मुझे पूरी हनुमान चालीसा आती है।

?जय हनुमान ज्ञान गुन सागर
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर

राम दूत अतुलित बल धामा
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा
महाबीर बिक्रम बजरंगी
कुमति निवार सुमति के संगी
कंचन बरन बिराज सुबेसा
कानन कुंडल कुँचित केसा
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे
काँधे मूँज जनेऊ साजे
शंकर सुवन केसरी नंदन
तेज प्रताप महा जगवंदन
विद्यावान गुनी अति चातुर
राम काज करिबे को आतुर?

माननीय सभापतिः आप अपनी बात पूर्ण कीजिए ।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : हम बाला साहब और हिन्दुत्व के विचारों पर चलने वाले लोग हैं। हम लोग हिन्दुत्व का केवल नाम नहीं लेते हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापतिः आप अपनी बात समाप्त कीजिए ।

? (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, जिन्होंने हनुमान चालीसा पढ़ा, उनको जेल में डाला गया । ? (व्यवधान)

माननीय सभापतिः माननीय सदस्य, जब आपको मौका मिलेगा, तब आप अपनी बात बोलिएगा ।

? (व्यवधान)

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : उनके ऊपर देशद्रोह का आरोप लगाया गया । सावरकर के विचारों पर हमारी शिवसेना पार्टी बनी थी । सावरकर के विचारों को बाला साहब भी मानते थे । आज यहां पर जो लोग सावरकर जी को गाली देते हैं, भला-बुरा बोलते हैं, उनकी गोदी में जाकर बैठने का काम कुछ लोग कर रहे हैं। यही इनकी ?इंडिया? है।

इन्होंने पत्रकारों को जेल में डालने का काम किया और यहां पर डेमोक्रेसी बचाने का अभियान चला रहे हैं।

आज यहां पर मुझे यह कहने में बहुत ही शर्म आ रही है। कोविड के समय जब पूरा देश महामारी से लड़ रहा था, तब हमारे प्रधानमंत्री जी भी लोगों के लिए वैक्सीन और ऑक्सीजन की व्यवस्था के लिए लड़ रहे थे। मुम्बई में कोविड के दरम्यान भ्रष्टाचार कैसे हो, इसकी व्यू रचना कुछ लोग कर रहे थे। यह बहुत ही शर्म की बात है। ? (व्यवधान)

सर, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मुझे बहुत ही शर्म के साथ कहना पड़ रहा है कि बीएमसी इतनी बड़ी म्युनिसिपल कॉरपोरेशन है, उसके पूर्व महापौर पर एफआईआर दर्ज हुई थी। उसके ऊपर एफआईआर क्यों दर्ज हुई, क्योंकि जो बॉडीबैग हमने थाणे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन में 350 रुपये में खरीदे, वही बॉडीबैग 6,719 रुपये में खरीदने का पाप इन लोगों ने किया। इसलिए, इनके ऊपर एफआईआर हुई।

माननीय सभापति: बस, अब आप अंतिम वाक्य बोल दीजिए ।

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे : सर, अब मैं अंतिम बात बोल रहा हूं। मुझे लगता है कि आज सही मायने में लोगों को जो चाहिए, उसके लिए माननीय मोदी जी के नेतृत्व में यहां पर सरकार स्थापित हुई है। बीते एक साल में अनेक कार्य महाराष्ट्र में हुए हैं। मेट्रो की साढ़े तीन सौ किलोमीटर रेल लाइन हो, ट्रांसफार्मर लिंक हो, मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन हो, हमने यूनिवर्सल हेल्थ केयर को डेढ़ लाख रुपये से बढ़ाकर पांच लाख रुपये किया, शासन आपल्या दारी के माध्यम से डेढ़ करोड़ से ज्यादा बेनेफिशियरीज़ बनाए, महिलाओं को बस में पचास प्रतिशत कम दामों में सफर की सुविधा दी और 700 से ज्यादा आपला दवाखाना खोले।

मैं कंक्लूजन में यह कहना चाहूंगा कि औरंगजेब ने संभाजी महाराज की हत्या की, लेकिन 70 सालों में औरंगाबाद का नाम बदलने की हिम्मत कांग्रेस में नहीं हुई। बीते एक साल में औरंगाबाद का नाम बदलकर संभाजीनगर करने का काम किया गया और उस्मानाबाद का नाम बदलकर धाराशिव किया।? (व्यवधान)

सर, मैं छत्रपति शिवाजी महाराज को नमन करते हुए, छत्रपति संभाजी महाराज की स्तुति को याद करते हुए हिंदू हृदय सम्राट बाला साहब ठाकरे जी के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए शिवसेना विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करती है। धन्यवाद, जयहिन्द, जय महाराष्ट्र ।

श्रीमती डिम्पल यादव (मैनपुरी): महोदय, संयुक्त विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको बहुत धन्यवाद देती हूं। सत्ता पक्ष के लोग कह रहे थे, मिनिस्टर कह रहे थे कि हमें राजस्थान पर चर्चा करनी चाहिए, जो महिलाओं के साथ जघन्य अपराध हो रहे हैं, गुजरात की चर्चा करनी चाहिए, छत्तीसगढ़ की चर्चा करनी चाहिए, तो मध्य प्रदेश की भी चर्चा होनी चाहिए और उत्तर प्रदेश की भी जरूर चर्चा होनी चाहिए। एनसीआरबी के आंकड़े बताते हैं कि हर रोज, हर तीन घंटे में एक महिला का शारीरिक उत्पीड़न उत्तर प्रदेश में होता है।? (व्यवधान) हर तीन घंटे में एक महिला का शारीरिक उत्पीड़न उत्तर प्रदेश में हो रहा है। उत्तर प्रदेश की सरकार और केंद्र की सरकार, यह डबल इंजन की सरकार इस बात का संज्ञान नहीं ले रही है।

सर, मणिपुर की जो घटना हुई, वह कोई मामूली घटना नहीं है। यह बहुत ही संवेदनशील घटना है। इस मामले को लेकर सरकार का रवैया बहुत ही संवेदनहीन रहा है। यह सरकार अहंकार में डूबी हुई सरकार है। यह दर्प, मद और दंभ में डूबी हुई सरकार है। It was a complete violation of human rights, destruction of human rights. Using women as an instrument for perpetrating violence is simply unacceptable in the constitutional democracy. इस कांड की निंदा पूरे विश्व में हुई है। इस घटना को लेकर हम भारतवासियों का सिर शर्म से झुका है। It was a State-sponsored ethnic violence.

सर, अगर विजुअल्स सोशल मीडिया के माध्यम से निकलकर नहीं आते तो किसी को भी पता नहीं चलता कि मणिपुर में क्या हुआ। जो विजुअल्स आए, जहां महिलाओं को नंगा किया गया, उनका रेप किया गया, इसका कौन जिम्मेदार है? यह कोई एक वाकया नहीं था, जैसा सुप्रिया सुले जी ने कहा कि इस तरह की लगभग चार हजार एफआईआर रजिस्टर हुई हैं। हम सरकार से जानना चाहते हैं कि कितनों पर एक्शन

हुआ है, कितनी गिरफ्तारियां हुई हैं? लगभग साठ हजार लोग डिसप्लेस हुए हैं। वे अपने घरों में नहीं रह रहे हैं। Around 14,000 children are displaced in this. They are not able to go to schools and there are more than 150 deaths. क्या यह भाजपा की नैतिक और राजनैतिक जिम्मेदारी नहीं है? We just requested our hon. Prime Minister to come to the House so that we can talk about it, so that we could just share our viewpoints with hon. Prime Minister. हम ऑनरेबल प्राइम मिनिस्टर के सामने अपनी बात रखना चाहते थे, लेकिन ऑनरेबल प्राइम मिनिस्टर आज भी सदन में मौजूद नहीं हैं। इस चीज की हमें हमेशा कमी महसूस होगी।

इस चीज की हमें हमेशा कमी महसूस होगी । सीएम का यह विशेष धर्म था कि वह वायलेंस रोकने का काम करते। It is a bordering State. हमारी फुल आर्मी वहां डिप्लॉय रहती है। वहां पर असम राइफल्स है, बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स है। अगर वहां की गवर्नमेंट चाहती तो within two days, वायलेंस को कंट्रोल में लाया जा सकता था। लेकिन, the Government?s intention was not right. आज भी सरकार डिस्सेपशन मोड पर ही है।

Sir, the hon. Prime Minister said, हमेशा उन्होंने कहा है, वसुधैव कुटुंबकम। आज पूरा विश्व मेरा परिवार है, क्या मणिपुर हमारा परिवार नहीं है? क्या हमारे देश का अंग नहीं है? मणिपुर को स्टेप मदरली ट्रीटमेंट क्यों दिया जा रहा है? बीजेपी की नीति नफरत की राजनीति की है। वोट की राजनीति करते हैं। बीजेपी पूरी तरह से इसके लिए जिम्मेदार है। Internal security is at risk not only in Manipur but also in Mizoram, Tripura, South Assam and Haryana. As we see, elections are coming by, and there is a deteriorating law and order condition in the country. The sense of security is also deteriorating among the people of this country.

Sir, the external security of the country and the integrity of our borders are also at risk. गौरव जी ने कहा, प्रधानमंत्री जी और चीन के राष्ट्रपति जी के बीच क्या बात हुई, We want? चीन के साथ अनरेजॉल्वड इश्यू हैं, ?regarding the borders of the country, इस पर खुले तौर पर सदन में बात होनी चाहिए। मौजूदा सरकार इनफिलट्रेशन पर बात करती है कि माइग्रेंट्स आ गए हैं। But the Government can

always work on the infiltration by controlling the borders. सरकार बार्डर को कंट्रोल क्यों नहीं कर पा रही है? क्यों इनफिलट्रेशन होने दे रही है। आज की तारीख में महंगाई सबसे बड़ा मुद्दा है। जहां समाजवादी पार्टी ने हमेशा कहा रोटी कपड़ा सस्ता हो, दवा-पढ़ाई मुफ्त हो। आज की डेट में जो मिडिल क्लास है, जो गरीब तबका है, वह बहुत परेशान है। चाहे स्कूल की फीस हो, चाहे मेडिकल्स बिल्स हों, रेंट्स हो, हाउसिंग हो, चाहे लैंड प्राइसेज हो, चाहे पेट्रोल-डीजल या केरोसीन के दाम हों या बिजली के दाम हों। उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रिसिटी के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। there is no increase in production. यह सरकार बिजली भी मुहैया नहीं करा पा रही है। आज के भारत में किसानों की जो स्थिति है, Farmers are having the worst time ever in the Independent India. आप तीन काले कानून लेकर आए, न जाने कितने किसानों ने अपनी जान गंवाई। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि वह किसानों को मिनिमम सपोर्ट प्राइस मुहैया कराएगी। which has not yet materialised. आर्टिफिशियल स्कारसिटी क्रिएट की जाती है, लेकिन इसका मुनाफा हमारे किसान भाइयों को नहीं मिल रहा है तो यह मुनाफा कहां जाता है? आज इतनी महंगाई हो गई है कि महिलाओं को बहुत दिक्कत हो रही है। सुप्रिया सुले जी ने कहा था, आज की डेट में एक थाली की कीमत लगभग 500 रुपये से भी ज्यादा है। अगर वह चाहती है कि उसकी थाली में दाल-रोटी, सब्जी और पनीर हो तो महिला वह नहीं कर पा रही है।

Sir, BJP is destroying the administrative and financial federalism espoused by the framers of the Constitution. They are destroying the institutions right from EC, ED, CBI to others. They are using them as tools to harass the people of the country. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की मिनिस्टर ने सीधे थ्रेटन किया कि आपके घर भी ईडी भेज देंगे। This is a new low in our democracy. There has been a regular unemployment in the country. आज की तारीख में युवा बेरोजगारी से परेशान हैं। अग्निवीर जैसी योजना सरकार लेकर आती है, उसमें कुछ भी क्लैरिटी नहीं है। आप नौजवानों को वर्दी पहनाएंगे, लेकिन चार साल बाद उनकी वर्दी उतारने का भी काम करेंगे।

As per the reply to a Question in Rajya Sabha, almost 1.26 lakh ? (*Interruptions*) As per the reply to a Question in Rajya Sabha, almost 1.26 lakh positions are vacant in Uttar Pradesh of teachers for classes 1 to 8 in the Government schools. Similar situation is there in UP Police, hospitals, nurses, ITIs, PSCs, home guards, universities and many more.

All the Government of India schemes have failed and collapsed be it Skill India, Make in India, Digital India, Swachh Bharat Abhiyan. आप लखनऊ आकर देखें कि क्या यह स्वच्छ भारत अभियान है? बनारस को क्योटो बनाने की बात कही गई थी, सारे झूठे वादे थे।

Sir, BJP people indulge in the politics of divide, hate and rule. लोगों में विभाजन करके आप शासन करना चाहते हैं।

The condition of the OBCs, SCs, STs, women and minorities is threatened every day in this Government. They feel as if they are the second-class citizens. ? (*Interruptions*) Sir, you gave him so much of time. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: It is proportionate time.

? (*Interruptions*)

माननीय सभापति: यह अनुपात में होता है।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: समय का आबंटन अनुपात में होता है।

? (व्यवधान)

SHRIMATI DIMPLE YADAV: Sir, the condition of the OBCs, SCs, STs, women and minorities is threatened every day in this Government. They feel as if they are the second-class citizens. Police has become a tool of harassment. A family in Uttar Pradesh was burnt alive by the UP Police in Kanpur Dehat.

I would request you, आप प्राइम मिनिस्टर साहब को रिक्वेस्ट करें कि वह आएं। ? (व्यवधान) सदन में लोग बहुत कम हैं। I would like to thank you for giving me this opportunity to speak here. ? (*Interruptions*) वर्ष 1942 में 8 अगस्त को क्विट इंडिया मूवमेंट की स्थापना हुई थी। आज भी 8 अगस्त है, मैं बीजेपी के लोगों से कहना चाहूंगी कि stop dividing our country, stop dividing India. With these words, I would like to thank you.

SHRI PINAKI MISRA (PURI): Thank you, hon. Chairperson, for giving me the opportunity to speak on behalf of my Leader, Shri Naveen Patnaik ji and the Biju Janata Dal on this No Confidence Motion that has been brought by the Congress Party today.

It goes without saying that the foundation of the Biju Janata Dal is anti-Congressism. We were born on the 25th of December 1997 on the basis of opposing the Congress Party?s corrupt rule in Odisha at that point of time. The late Biju Patnaik, on whose name the Biju Janata Dal is named, started his life as a Congressman, but like many of us got eventually disillusioned with the Congress Party, left the Congress Party and became a beacon of Opposition politics or Janata politics. And, that is how the Biju Janata Dal was formed. Therefore, any Motion brought by the Congress Party, it goes without saying that it is out of question for the Biju Janata Dal to support. Therefore, at the threshold, let me make it clear that we oppose this Motion because of the fact that it has been brought by the Congress Party to this House.

But there are many other compelling reasons, and I will tell this House, about why the Biju Janata Dal feels that this is a misplaced Motion. It is totally out of place at this point in time to be brought to this House.

Mr. Naveen Patnaik is now in his fifth term as Chief Minister of Odisha consecutively. He is now the second longest serving Chief Minister in the country. He has just crossed late Shri Jyoti Basu?s tenure in West Bengal. He is now only behind Mr. Pawan Chamling in Sikkim. And next year, in August 2024, by the grace of Lord Jagannath, when he is elected for the sixth time as Chief Minister, he will cross Mr. Pawan Chamling?s tenure and become the longest serving Chief Minister ever in the history of India.

15.00 hrs

I am very glad to say, my heart is gladdened, that somebody like Shri Amit Shah ji was in Bhubaneswar on Saturday in the presence of many of our distinguished colleagues here. I think, Aparajita Sarangi ji, our hon. MP of Bhubaneswar, was there as well. Shri Amit Shah, very graciously said that it is without doubt that Mr. Naveen Patnaik is India's most popular Chief Minister. These were Mr. Amit Shah's own words. He also praised Mr. Patnaik for cooperative federalism and the constructive cooperation with the Centre that he has demonstrated in his last 24 years as Chief Minister.

He does not believe in needlessly picking quarrels with the Central Government. It does not pay. We are a regional party. In the kind of fiscal architecture our Constitution has provided, it is impossible to continuously bicker and fight with the Central Government and survive as a model fiscal State as Odisha is today, particularly, if you are needlessly and constantly heckling with the Central Government because that does not meet the interest of the people of the State. This is Mr. Patnaik's firm view. He believes that, yes, party politics has its place, there is no question, and that is why I said the other day when I was speaking on the Delhi Bill, the BJP is our Opposition Party in the State and we fight them tooth and nail when elections are concerned. But once elections are over, that should be the end of party politics. Then,

governance kicks in and for governance to kick in, you have to rise above parties and party politics and work in partnership with constructive cooperation in a federal structure. That is what Mr. Patnaik has always believed in and that is why Amit Shah ji, in fact, said that this is the reason he appreciates the role of Mr. Patnaik as Chief Minister.

I cannot support a No-Confidence Motion against the Central Government today even though we are against the BJP as a political party. The Central Government may not have given us our entire wish list, and no Central Government ever can give every State Government the entire wish list. I recognise that fact. There are fiscal constraints where resources are in short supply. Therefore, it is not possible for every Central Government to give in to every State Government's demands. But in terms of rise in coal production; in terms of mineral royalty revision which has long been Odisha's just demand; in terms of the removal of an export tax on iron ore and manganese ore which was vital for Odisha's fiscal management; in terms of the Bill, which was there the other day, for exploration of offshore minerals which has long been our demand; in terms of Puri International Airport in my constituency which has again long been a dream of the people of Puri, that is well underway, yesterday, Mr. Scindia very kindly said in the House that it is virtually in the last stages of completion of plans and therefore, the construction should start very soon; and in terms of the Jagannath Puri Heritage Corridor which was opposed by some of my distinguished colleagues, I shall not name them, but which the Central Government ensured the ASI give permission for, I am grateful for many things that the Central Government has done for Odisha which is why in any case, I am unable to persuade myself on behalf of my Party and my leader to support a No-Confidence Motion today which has been brought by the Congress Party.

Let me now come the merits of this particular No-Confidence Motion that they have allegedly brought on one count alone, i.e. to bring the Prime Minister to the House. That seems to be the reason why this No Confidence Motion has been moved, that the Prime Minister should be brought to this House. He is avoiding the House and avoiding speaking on Manipur.

Mr. Chairman, I have always believed that the Congress Party is adept at snatching defeat from the jaws of victory. They are also very adept at cutting their nose to spite their face. I say this advisory. They know every time the hon. Prime Minister has got up to speak on the floor of this House, his worst political adversaries will recognise the fact that he is a peerless orator. There is no question. I do not think there is an orator today who matches him. There is no question. Everybody recognises that fact.

So, every time he gets up on the floor of the House, he pushes the Congress Party through the shredder. They actually go through a shredding machine. So, I cannot understand why should they cut their nose to spite their face asking him to come to the House and put them through the shredder, as I have no doubt he will when he replies on Thursday. So, it defies common sense; it defies logic; it defies political sense. I believe that there are other arguments that would have been more persuasive. The people of this country will decide, if the Prime Minister has chosen not to speak, whether that was right or that was wrong. It is for the people to decide and you have to take that case to the people. You should not bring a No-Confidence Motion which is doomed to fail in any case. At the threshold, you know your No-Confidence Motion is doomed to fail. You should not bring it needlessly and waste the time of the House. You do not disrupt the House needlessly when you know that the Ruling Party likes nothing better than the House being disrupted, so that the Bills can be passed in the din. So, Ministers are happy not to answer any questions during the Question Hour. For every Ruling Party, this is a dream

scenario to let the Opposition disrupt the Parliament so that they can go and sleep happily. Therefore, this kind of disruptive politics has not paid dividend in the past, and I have no doubt that this kind of disruptive politics will not pay dividends in the future. As far as Manipur is concerned, I have to say that the hon. Home Minister had called an all-Party meeting. I was one of the Members who was present there on behalf of my Party. It was an exceptionally detailed analysis which was given to everybody. The Congress Party was represented there by Shri Ibobi Singh who is a three-term former Chief Minister. All the other parties were there and we were given a complete kaleidoscope really of what has gone wrong in Manipur. And these are legacy issues. For, today?s conflagration in Manipur is not the result of the last ten years. Let us face it. It is the result of almost 50 years to 60 years of strife in Manipur. The fact of the matter is that this entire issue has boiled over not now, it has boiled over three or four times in a major way through the 80s and the 90s. This was somehow capped until an order was passed by Manipur High Court. Very unfortunately, the Manipur High Court in a PIL suddenly woke up one fine morning. In a 20-minute hearing without pleadings being completed, the High Court passed an order which according to me is one of the ill-advised orders that this country has ever seen, giving a direction to the State Government to immediately consider within four weeks the giving of ST status to a particular community.

Firstly, this is totally without jurisdiction because the State Government cannot do it. It is something that only the Central Government can do. So, the High Court passed totally an erroneous order, but passed an order without hearing all the parties, without affidavits being completed, without any kind of rationale or logic. It simply passed an order which the hon. Supreme Court severely deprecated. On 19th May, the hon. Chief Justice severely deprecated the High Court order. But I believe that the Central Government missed a trick

there. I believe, the Central Government asking for the matter to be remanded back to the High Court to be heard there, was a huge error.

I pointed this out at the meeting that the Central Government should have been happy to let the matter rest in the Supreme Court?s lap because we have seen that the people of this country have great faith in the Supreme Court. Look at the classic case of Babri Masjid and Ram Janmabhoomi dispute. For decades, this dispute could not be resolved until the Supreme Court sat down, gave a judgement, and both the parties accepted it graciously. So, I believe that if this issue had been left to the Supreme Court, tempers would have cooled. Instead the matter went back to the High Court, and the High Court again in an ill-advised order, instead of cancelling the earlier order, simply revised the order and said, instead of four weeks, you take one year to decide this matter which means Sword of Damocles therefore kept hanging, and this is what has constantly created the kind of friction that we have seen.

Sir, I have to say that what has happened in Manipur today is, as Mr. Patnaik says, heart-rending. In fact, he has asked me to mention this in the all-Party meeting and to say today that all parties must speak in once voice. What this Parliament cannot afford is a No-Confidence Motion against the Central Government. Every political party must give their constructive suggestions at the moment to say what is possible, what can be done because you are trying to fit a square peg in a round hole there. That is the problem today.

Therefore, you have to give constructive suggestions rather than blaming the Central Government for what is clearly a legacy issue running back several decades. There is no question that blame has to be apportioned to the State Government. Every right-thinking person has said so. Every right-thinking person has said that the Chief Minister ought to have conducted his politics and his policies on the basis of *rajdharm* which perhaps has been lacking there.

There is no doubt about it. But I do not know whether the Central Government would have been better advised to have brought in the President?s Rule because clearly there was no alternative to this Chief Minister. Therefore, if the President?s Rule had to be imposed there, I am not sure that that in this country has ever worked satisfactorily in other States as well. So, it is really a Hobson?s choice that the Central Government was confronted with. That is something that I think all political parties honestly should have considered and should have felt. Therefore, the need of the hour is to speak in one voice and not to speak in a fractious tone. I am going to conclude in a short while. The heartrending scenes that we have seen with regard to the atrocities on women in Manipur is not new to us. This is seen everywhere in the world where there is strife, where there is this kind of conflict, where there is this sort of internecine warfare. We have seen this in Sub-Saharan African nations in Burundi between the Hutus and the Tutsis. We have seen this in Rwanda, for instance. We have seen this is Bosnia and Herzegovina. We have seen this in Serbia. So, this is endemic, unfortunately, to our society and our polity.

I come to this one seminal issue that the way forward for women?s empowerment is again what Shri Naveen Patnaik has been repeatedly requesting the Central Government to bring in the Women?s Reservation Bill. I think, that is one area where the Central Government will be seriously remiss if in the 17th Lok Sabha, they do not do it because there is a full majority. In fact, there is near unanimity. Today, all shades of political opinion in this House and the Upper House are of the same opinion that there should be women?s reservation in the State Assemblies as well as in the Central Parliament. This is because that is the kind of empowerment we need for women on the ground level, at the cutting-edge level, at the grass-root level to feel empowered, to feel that they have an equal stake in the society, and for men to feel that look, they are now our equals, they are in as powerful position

as we are, and therefore, we should treat them at par. This is something that I would say seriously on this occasion. If there is anything on which I feel that this Government lacks the confidence of this House, quite frankly it is that they have not brought the Women?s Reservation Bill so far despite being fully empowered to do so. We have now only one more Session of the Parliament after this, which is the Winter Session. I certainly plead and urge the Prime Minister that he should bring in the Women?s Reservation Bill and have it passed unanimously. It can be done in 15 minutes in the Lower House and the Upper House. The Parliamentary Affairs Minister is here. I have requested him personally many times also. So, that is one of the things that we need to seriously consider. Therefore, for a number of compelling reasons that I have mentioned, we are completely, completely unable to persuade ourselves on behalf of the Biju Janata Dal and Shri Naveen Patnaik to support this No-Confidence Motion. I have no doubt that it will be resoundingly defeated and it will be rejected as it ought to. Unfortunately, I think, it will not at all benefit the Congress Party which has brought this No-Confidence Motion at this point of time.

Thank you very much, Mr. Chairman.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण): सभापति महोदय, एक बहुत ही गंभीर विषय पर विपक्ष के सभी दलों ने मंत्रिपरिषद में अविश्वास का प्रस्ताव यहां रखा है। दुर्भाग्यवश हमारे मित्र गोगोई जी ने जिस गंभीरता से इस प्रस्ताव को यहां रखा है, मैं उसके बाद के भाषणों को सुन रहा हूं कि सन् 1953 या 1976 में क्या हुआ, तब आप पैदा भी नहीं हुए थे, यह सब कुछ जो बताया जा रहा है, पूरे विषय की गंभीरता को कम करने का जो प्रयास किया जा रहा है, मैं उसकी निर्भर्त्सना करता हूं। यह विषय क्यों आया? अभी मेरे मित्र पिनाकी जी भी बोल रहे थे, तब मैं सोच रहा था कि अविश्वास का प्रस्ताव क्यों लाया गया?

भैय्या, सिर्फ आदरणीय प्रधान मंत्री जी को लाने की बात नहीं है, बात यह है कि जिस विषय, यानी मणिपुर में इतना बड़ा हिंसाचार हुआ, महिलओं पर अत्याचार हुआ,

लेकिन केन्द्र की सरकार 70 दिन चुप रही। अगर चुप न रहती तो यह विषय नहीं आता। चुप रही, तो आदरणीय सर्वोच्च न्यायालय ने तमाचा लगाया ? ?Are you going to act on it? Or, should I intervene?? तब जाकर 36 सेकण्ड के लिए मुंह खुला। यह गुस्सा है, यह दर्द और हृदय विदीर्ण है। हम सब मणिपुर में जाकर आए हैं। हम ऐसे विषय पर राजनीतिक बात करते हैं? हम से पहले भी किसी पूर्वज ने कहा कि महाराष्ट्र की बात, हां तो मैं अभी करूंगा। वह हमें हिन्दुत्व सिखा रहे हैं। हम पैदाइशी हैं। ये हमें हिन्दुत्व सिखा रहे हैं। हिन्दुत्व में भगौड़े नहीं होते हैं। ? (व्यवधान) जो लोग भगौड़े हैं, वे भगौड़े क्या बोलेंगे? उनके पास इतना दम होता ? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप बैठिए ।

? (व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : मैंने किसी का नाम तो नहीं लिया। ? (व्यवधान) मैंने किसी का नाम नहीं लिया ।

माननीय सभापति: प्लीज, आप लोग बैठिए ।

? (व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : मैंने किसी का नाम नहीं लिया ।? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप बोलिए ।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप अपनी बात कह चुके हैं।

? (व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : भगौड़े रह चुके हैं। अगर हिम्मत होती? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप अपनी बात कह चुके हैं। आप अपनी बात पूरी कीजिए ।

? (व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : सर, जो हादसा हुआ, अगर हिम्मत थी ? (व्यवधान) वह हमें क्या हिन्दुत्व सिखाएंगे? जो जन्म लेकर यहां आए हैं, इनको क्या मालूम कि बाला साहेब क्या थे? वंदनीय बाला साहेब ने हिन्दुत्व यह बताया कि मुझे मन्दिर में घण्टा बजाने वाला हिन्दू नहीं चाहिए, आतंकवादियों को मारने वाला हिन्दू चाहिए। ? (व्यवधान) उनकी यह विचारधारा है।

सर, विचारधारा कुछ नहीं है, लेकिन मैं आज इस सदन में बताऊंगा कि सच्चाई क्या है? झूठे लोग सच बताने की कोशिश करते हैं। मैं अभी उस विषय पर आऊंगा। झूठे लोग झूठी बात करके सच्चाई छिपाने की बात करते हैं। ? (व्यवधान) वहां जो हादसा हुआ, उसमें महाराष्ट्र की बात आई। आपने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाए तो मैं बताता हूं कि अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाए। जिस तरह से आपने बर्ताव किया है, वह मणिपुर के बारे में हो, हिन्दुत्व के बारे में हो और अन्य आपकी जो राजनीतिक, सामाजिक नीति रही तो मैं आपको बता देता हूं कि आज की सरकार ने, जो कहते हैं कि हमने हिन्दुत्व किया और इनको छोड़ दिया। आपने जिनको छोड़ा, वे वापस तुम्हारे पास आए हैं। जिनका नाम लेकर आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि एनसीपी पार्टी क्या है - नेचुरल करप्ट पार्टी। उन्होंने भरी सभा और भरी रैली में कहा। तीन दिन बीते, उस रैली में आगे कहा कि 70 हजार करोड़ रुपये का घोटाला हुआ। उसमें सिंचाई का घोटाला हुआ, बैंकों का घोटाला हुआ। जिनके नाम पर घोटाले थे, चार दिन में सभी महाराष्ट्र की सरकार में शामिल हुए। वे सिर्फ शामिल ही नहीं हुए, मंत्री भी बने। मतलब क्या है कि आप भ्रष्टाचार के खिलाफ हो। ईडी के केसेज़ लेकर सभी को डराकर लेकर गए। राष्ट्रीय हित की बात भगौड़े लोग बोलेंगे? यह वाशिंग मशीन चल रही है। ये क्या बोलेंगे? उस वक्त तो उनका नाम लेकर गए थे, अभी उनके साथ बैठे हैं।

महोदय, आज गम्भीर विषय इस बात का है कि आदरणीय प्रधान मंत्री जी छुपकर बैठे, माननीय सर्वोच्च न्यायालय के ?* लगाने के बाद, लेकिन आगे चलकर पिछले चार दिन में क्या-क्या हुआ, जैसे हमारे बारे में हुआ। आज भी हमारे महाराष्ट्र में जो सरकार है, वह संविधान वाह्य सरकार है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने न्याय दिया और कह दिया कि ये सभी लोग अपात्र होंगे। मुख्य मंत्री से लेकर सभी का नाम लिया कि ये सभी अपात्र होने वाले हैं। ? (व्यवधान) मैं तो सुप्रीम कोर्ट की बात बोल रहा हूं, आप सुप्रीम

कोर्ट से बोलिए। मैं पार्लियामेंट में बोल रहा हूं, यह सुप्रीम कोर्ट ने कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया और सदस्य पर कार्रवाई करने का निर्णय दिया । आप क्या बात करेंगे? अब यही बात कहता हूं।

चेयरमैन सर, सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर पर भी कह दिया। आपको पता है कि कल क्या निर्णय दिया? अगर सरकार होती तो सरकार को ? ** आती कि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईटी बैठाई, सुप्रीम कोर्ट ने डीआईजी पद बैठाया, सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के तीन पिछले वाले जजेज़ को कार्रवाई करने का अधिकार दिया। सुनवाई करने का अधिकार दिया, जांच करने का अधिकार दिया, पुलिस के ऊपर कार्रवाई की। सरकार कहां है? सुप्रीम कोर्ट चला रहा है। मणिपुर की जांच कौन करेगा, सुप्रीम कोर्ट तय कर रहा है। यह आपकी सरकार पर तमाचा है, फिर भी शर्म नहीं आ रही आपको? फिर भी आपको बुरा नहीं लगता है? ? (व्यवधान) फिर भी बुरा नहीं लगता? ? (व्यवधान) सभापति जी, जब उन्होंने बोला, मैंने उठकर एक भी शब्द नहीं बोला है। अब मिर्ची क्यों लग रही है, समझ लीजिए। ? (व्यवधान)

कोविड की बात आई, कोविड के समय में उस वक्त के मुख्यमंत्री आदरणीय उद्धव जी ठाकरे साहब ने जो काम किया, उसकी सराहना वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन ने की, नीति आयोग के लोगों ने सराहना की, माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सराहना की और कहा कि उद्धव ठाकरे जी ने जो धारावी पैटर्न लगाया है, उसका पूरे देश में अमल करो। इतनी सराहना होने के बाद झूठे इल्ज़ाम लगाते हैं। ? (व्यवधान) तब आप भी सरकार में थे, जो लोग इल्ज़ाम लगा रहे हैं, वे भी उस सरकार में थे। ? (व्यवधान) आप कौन से अधिकार से बोलते हो? ? (व्यवधान) आप लोग भी उस सरकार में शरीक थे। ? (व्यवधान) आप मंत्री थे। ? (व्यवधान) ढाई वर्ष आप भी साथ में थे। क्या आपको बोलने का अधिकार रहता है? ? (व्यवधान)

सभापति जी, मैं दो-तीन बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे रखना चाहता हूं। प्रधानमंत्री जी का वक्तव्य, सत्यपाल मलिक जी फाड़ रहे हैं। उन्होंने पुलवामा के बारे में क्या बोला, उन्होंने भ्रष्टाचार के बारे में क्या बोला और दो-तीन अन्य मुद्दे हैं। महाराष्ट्र को कितना आपने हैरान किया, क्यों हम आप पर विश्वास रखें? महाराष्ट्र का फाइनेंशियल सेक्टर आप गुजरात में लेकर गए, महाराष्ट्र का वेदांता-फॉक्सकॉन प्रोजेक्ट आप गुजरात में लेकर

गए, महाराष्ट्र का एयरबस प्रोजेक्ट गुजरात में लेकर गए, महाराष्ट्र का ड्रग पार्क गुजरात में लेकर गए, महाराष्ट्र का पुलिस एकैडेमी गुजरात में लेकर गए, महाराष्ट्र का डायमण्ड सेंटर गुजरात में लेकर गए। नौ वर्षों में महाराष्ट्र के बन्दरगाह का विकास नहीं हुआ, महाराष्ट्र के मिल वर्कर्स के बारे में जमीन पर कुछ करना है, कुछ नए प्रोजेक्ट्स लेने हैं, लेकिन कुछ नहीं किया गया, उल्टा जब हमारे यहां ताउते चक्रवात आया था, तब आदरणीय प्रधानमंत्री जी वहां गुजरात में आए थे। गुजरात में घूमे, लेकिन उनका हेलिकॉप्टर वहां से आगे नहीं आया, पीछे गया। महाराष्ट्र के ऊपर ध्यान नहीं दिया। इतने सारे इल्ज़ाम लगे हैं। बुलेट ट्रेन हमारे यहां 10 प्रतिशत है, उसका 70 प्रतिशत लग रहा है, जबकि वह सारा गुजरात के लिए इस्तेमाल होना है। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, कुछ महत्वपूर्ण विषय ऐसे हैं कि इसमें उन्होंने जो चीजें की हैं, ? (व्यवधान) आपको बुरा लगना चाहिए था कि किसानों का आन्दोलन हुआ, जिसमें 100 से ज्यादा लोग मर गए। आपको बुरा नहीं लगा। आखिर में आदरणीय प्रधानमंत्री जी को कहना पड़ा, क्षमा मांगनी पड़ी ? क्षमा मांगता हूं और सारे बिल वापस लेता हूं, लेकिन मरे कितने लोग? क्या उनकी कुछ परवाह है? आपने डी-मॉनेटाइजेशन किया, कितने लोग मरे, कुछ उनकी परवाह है? उनके लिए अश्रु बहाए? क्या पुलवामा के लिए अश्रु बहाए? कभी अश्रु नहीं बहाए। यही तो दुख है, यही तो दर्द है कि संवेदनहीन सरकार चल रही है। इसलिए यहां जो काम हो रहे हैं, खासकर जो पब्लिक सेक्टर यूनिट्स बेचे जा रहे हैं, बेरोजगारी, महंगाई है, इन सभी पर मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। पब्लिक सेक्टर में बीएसएनएल कहां गया? इनके ऊपर इल्ज़ाम लगाते-लगाते दो वर्ष बिताए, आज नौ वर्ष हो गए, बीएसएनएल डूब रहा है, एमटीएनएल डूब रहा है। ये स्ट्रैट्जिक कंपनीज हैं, लेकिन कुछ नहीं हो रहा है। कहां रोजगार मिला? गद्दारों को गद्दार कहने पर बुरा लगता है। महिलाओं पर अत्याचार और पेंशन का विषय है।

सभापति महोदय, आखिर में मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि हम इकट्ठे क्यों आए हैं ? हम INDIA हैं। हम INDIA कहते हैं तो आपको बुरा लगता है। आप तो ?खेलो इंडिया? कहते हो, ?बेचो इंडिया? कहते हो। इसलिए आखिर में मैं एक वाक्य कहता हूं ? ?नफरत करने वालों के सीने में प्यार भर दो।? ? (व्यवधान) आप सोशल मीडिया रोजाना देखिए। ? (व्यवधान) हमारे महाराष्ट्र के अध्यक्ष जी लोगों को गाय कटती हुए बता रहे थे।

गाय कहां काटी गई? नॉर्थ-ईस्ट में और बता रहे थे कर्नाटक के चुनाव में। ? (व्यवधान) क्या चाहते हो? इसलिए मैं कहना चाहता हूं:

?नफरत करने वालों के सीने में प्यार भर दें,
हम वो परवाने हैं जो पत्थर को भी मोम कर दें।?

यही हमारा नेक इरादा है, इसीलिए हम इकट्ठे आए हैं। धन्यवाद ।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री (श्री नारायण राणे): सभापति महोदय, अविश्वास के प्रस्ताव पर इस सदन में काफी माननीय सदस्यों के भाषण मैंने सुने हैं। अभी शिवसेना (उद्धव ठाकरे) ग्रुप के अरविंद सावंत जी का भाषण सुनते वक्त मुझे लगा कि मैं दिल्ली में नहीं, महाराष्ट्र की विधान सभा में बैठा हूं। ? (व्यवधान) अभी मैंने आपकी बात सुनी है, अब आप मेरी बात सुनिए। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति : अरविंद सावंत जी, आप बैठिए। माननीय मंत्री जी, आप बोलिए।

? (व्यवधान)

श्री नारायण राणे: मैंने अभी आपका भाषण सुना है। अब आप मेरा सुनिए ।

सभापति जी, अविश्वास प्रस्ताव पर सम्माननीय शिंदे साहब ने अपने विचार रखे थे, इन्होंने उनका उत्तर देने का काम किया है। इन्होंने हिंदुत्व की भाषा की है। शिवसेना और उद्धव गुट के लिए हिंदुत्व किस तरह का है, उसके बारे में उन्होंने कुछ कहा है। अगर वे हिंदुत्व को इतना चाहते हैं, उन्हें गर्व है तो वर्ष 2019 में सत्ता पाने के लिए भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर, उस वक्त ...* करके पवार साहब के साथ क्यों चले गए? उस समय इनको हिंदुत्व याद नहीं आया? क्या याद नहीं आया?? (व्यवधान) सभापति जी, वे हिंदुत्व और असली शिवसेना के बारे में कह रहे हैं। ये शिवसेना में कब आए? मैं सन् 1967 का शिव सैनिक हूँ।? (व्यवधान) अरे, नीचे बैठिए।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Please address the Chair. Do not be personal.

? (*Interruptions*)

श्री नारायण राणे: जब वे बोल रहे थे तो किसी ने कुछ नहीं बोला। हमने किसी ने भी कुछ नहीं बोला।? (व्यवधान)

माननीय सभापति: आप वैयक्तिक टिप्पणी से बचिए । प्लीज, आप वैयक्तिक टिप्पणी से बचिए।

? (व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : क्या आपने पार्टी नहीं बदली?

श्री नारायण राणे: पार्टी बदलने में भी ताकत लगती है।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Please address the Chair.

? (*Interruptions*)

श्री नारायण राणे: सभापति जी, मैंने पार्टी छोड़ी थी तो इन 220 लोगों ने प्रोटेस्ट किया था। ये क्या बात करते हैं?? (व्यवधान) अभी कुछ नहीं बचा है। अभी जो आवाज आ रही है, वह बिल्ली की आवाज है। वह टाइगर की आवाज नहीं है। अभी वह खत्म हो गए हैं। किसी को हमारे पंत प्रधान जी के ऊपर बोलने का कोई अधिकार नहीं है। पंत प्रधान जी पर बोलने की उनकी औकात नहीं है। अभी आप अपना देखिए कि आप महाराष्ट्र में कहां तक हैं, कब डूबने वाले हैं। आप वही देखिए, लेकिन भारतीय जनता पार्टी, माननीय पंत प्रधान जी और माननीय अमित शाह जी की तरफ उंगली उठाई तो मैं ... * कि क्या असलियत है।? (व्यवधान)

माननीय सभापति: सरदार सिमरन जीत सिंह मान जी ।

? (व्यवधान)

माननीय सभापति: प्लीज, बैठ जाइए । अब वर्षाकालीन सत्र है तो थोड़ी गड़गड़ाहट, थोड़ी बारिश तो होनी ही है। आप बैठ जाइए।

? (व्यवधान)

माननीय सभापतिः अब 12-13 दिनों तक तो गड़गड़ाहट हुई है, अब थोड़ी बूंदाबांदी हो रही है तो उसका आनन्द लीजिए। कड़वाहट मत लाइए।

? (व्यवधान)

SARDAR SIMRANJIT SINGH MANN (SANGRUR): Sir, this No-Confidence Motion has not been brought about by only the Congress Party. It has been brought about by the entire Opposition. We are very much pained on what is happening in Manipur. Christian churches have been burnt and women have been paraded naked. One of the women is the wife of a Subedar who fought in the war against Pakistan and it is shameful.

The other thing is, the majoritarians in Manipur have looted an armoury. Now, what do the majoritarians want by looting an armoury? They have the whole Armed Fores. They have the whole Govrnment and they have everything.

But why should the armoury be looted by the majoritarian? The other thing is that the Punjab and Haryana High Court has passed the order in Haryana that there is ethnic cleansing of the minorities in Haryana. The houses of Rohingyas and other Muslims have been demolished by bulldozers. I am quoting the High Court. It says: ?Apparently, without any demolition orders and notices, the law and order problem is being used as a ruse to bring down buildings without following the procedure established by law and the problem is that there is an exercise of ethnic cleansing.? Now these are very, very serious charges by the Haryana and Punjab High Court. Moreover, there have been Sikh killings all over the world. I want to remind the Chair that Shri Deep Sidhu was killed in Haryana; Moose Wala was killed in Punjab; Avtar Singh Khanda has been killed in UK; Hardeep Singh Nijjar has been killed in

Canada; Paramjit Singh Panjwar has been killed in Pakistan; Ripudaman Singh Malik has been killed in Canada? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please come to the subject.

SARDAR SIMRANJIT SINGH MANN: Sir, I am telling you the pain that we are feeling. I come from a minority community. Let me express the feelings of my people. Please do not shut me out.

Shri Dhiren Bhagat, journalist was killed in 1988. Twenty five Sikhs were killed in a Gurudwara in Kabul in 2020 and NIA was ordered to investigate these killings. We do not have a report of those killings as yet. Forty three Sikh citizens were killed in Chittisinghpura of Kashmir in 2000. We have had no report about these killings. Two Russian dissidents have been killed in Odisha recently. So, my humble request is that these atrocities must end. Thank you.

सुश्री सुनीता दुग्गल (सिरसा): सभापति महोदय, हमारी भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है और उसके नेता हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं। जिस तरह का विश्वास उन्होंने इस सरकार में रहते हुए लोगों के अंदर पैदा किया है। न केवल भारतवर्ष के अंदर बल्कि बाहर के देशों के अंदर भी जो विश्वास व्यक्त हुआ है, उसकी एक बानगी हमें वर्ष 2018 के अविश्वास प्रस्ताव में देखने को मिलती है। मैं यह कहती हूं कि हमारे जो आदरणीय प्रधान मंत्री जी हैं, वे न केवल बहुत अच्छे विकास पुरुष हैं, न केवल इस देश को आगे ले जाने वाले हैं, न ही उनकी नीति पर किसी तरह का कोई शक है, न ही उनकी नीयत पर किसी तरह का कोई शक है, बल्कि वे ऐसे अंतर्यामी भी हैं कि उन्होंने वर्ष 2018 में यह बात कह दी थी कि ये सभी इकट्ठे होकर वर्ष 2023 में भी अविश्वास प्रस्ताव लेकर आएंगे और आज हम वही देख रहे हैं। ये जो अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं, यह जो भानुमति का कुनबा बना हुआ है, आज मैं इसके विरोध में बोलने के लिए आप लोगों के समक्ष खड़ी हुई हूं।

आदरणीय सभापति महोदय, श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के खिलाफ नो कॉन्फिडेंस मोशन आया था, उस समय वह अपना जवाब दे रहे थे। मैं वह देख रही थी और सुन रही थी कि किस तरह से भावनाओं से भरे हुए, उन्होंने अपना वक्तव्य दिया था। उनका 01 जून, 1996 का वक्तव्य था और मैं उसे सुन रही थी। उस समय विपक्ष के लोग श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को यह बात कह रहे थे कि आप मंदिर की बात नहीं करते, आप धारा 370 की बात नहीं करते और आप इधर-उधर की बातें करते हैं। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उस समय यह बात कही थी कि हमारी जो विचारधारा है, हमारी सन् 1977 में जो विचारधारा थी, वह आज भी है, लेकिन अभी लोकतंत्र को बचाना हमारी प्रायरिटी है। इसलिए हम अभी राम मंदिर पर बात नहीं कर रहे, अभी हम धारा 370 पर बात नहीं कर रहे, लेकिन मुझे विश्वास है कि एक दिन ऐसा आएगा, उस समय भी सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी थी। उन्होंने कहा था कि एक समय ऐसा आएगा कि हम मेजोरिटी के साथ इस सदन में होंगे, उस समय धारा 370 भी जाएगी, राम मंदिर भी बनेगा और आज वह समय है। अभी 6 अगस्त गई है और उस दिन आदरणीय सुषमा स्वराज जी की पुण्य तिथि थी। आप यह देखिये कि क्या संयोग है कि मन में जो विचार लेकर वह इतने समय तक राजनीति करती रहीं, केवल कुछ दिन पहले ही धारा 370 हटी और उसके थोड़े से दिनों के बाद 6 अगस्त को उनका देहावसान हो गया।

सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी के जो एक-एक कार्यकर्ता हैं, उनके मन के अंदर देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम किस तरह से भरा हुआ है, यह उसकी एक बानगी थी। मैं यही कहना चाहती हूं कि यह जो विश्वास कांग्रेस पार्टी का टूटा है, यह विश्वास जल्दी से वापस बनने वाला नहीं है। यह वह पार्टी है, जो 400 से 40 के ऊपर आ गई और एक हमारी पार्टी है, जो 2 से 303 के ऊपर आ गई। किसी ने यह बात कही है कि विश्वास वह डाली है, जो एक बार सूख जाती है तो फिर कभी हरी नहीं हो सकती। अब ये चाहे कितने ही अलायंस कर लें, चाहे ये आईएनडीआईए बना लें, चाहे ये घमंडियां बना लें, ये जो मर्जी बना लें, लेकिन अब किसी भी कीमत पर इनके ऊपर लोगों का विश्वास नहीं बन सकता है।

सभापति महोदय, मैं कहना चाहती हूं कि अभी तो शुरुआत हुई है। आदरणीय प्रधान मंत्री जी जो भविष्यवाणी करते हैं, वह भविष्यवाणी सत्य होती है। उन्होंने वर्ष 2018 में भविष्यवाणी की थी कि वर्ष 2023 में ये अविश्वास प्रस्ताव फिर से लेकर आएंगे तो ये इसे लेकर आए हैं। अब आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की भविष्यवाणी है कि वर्ष 2024 के अंदर फिर से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनायेंगे और उनके नेतृत्व में सरकार बनायेंगे।

सभापति महोदय, अब हमारा टारगेट यूनिफॉर्म सिविल कोड है। हमारी बहुत जल्दी कोशिश होगी कि हम वह भी इसी सदन के अंदर लेकर आएं। मैं सभी को सुन रही थी और सुले जी कह रही थीं कि 9 साल में क्या किया? मैं उनको बताना चाहती हूं कि 9 साल में हमारी सरकार ने आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में क्या किया? किसी समय जो मेकाले था, उसने भरे सदन के अंदर यह बात कही थी कि जो भारत की संस्कृति है, इसको खत्म कर दो। भारत की जो सनातन परंपरा है, इसको खत्म कर दो। जब तक तुम यह खत्म नहीं करोगे, जब तक तुम इनके ऊपर पश्चिमी सभ्यता को नहीं लादोगे, तब तक तुम इनकी रीढ़ की हड्डी को नहीं तोड़ सकते।

सभापति महोदय, कोई समय था कि जिस समय नालंदा यूनिवर्सिटी के अदंर 90 लाख किताबों को जलाया गया, हमारे साहित्य को जलाया गया। हमारी 90 लाख पुस्तकों का साहित्य जलाया गया, जो तीन महीने तक सुलगता रहा। उस सनातन परंपरा को, उस संस्कृति को खत्म करने के लिए वे एजुकेशन पॉलिसी लेकर आए। आज मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि वर्ष 2020 के अदंर सब के साथ बहुत विचार-विमर्श करके, जिस तरह से बाबा साहेब ने उस समय सब के साथ विचार-विमर्श करके हमारे देश का संविधान बनाया था, उसी तरह से ही सब के साथ विचार-विमर्श करके वर्ष 2020 में नेशनल एजुकेशन पॉलिसी बनाई गई है। मैं आपको उसी के तहत बताना चाहूंगी।

हमारी सरकार की कोशिश है कि एजुकेशन का एक्सेस सबको होना चाहिए, वह इक्विटेबल होना चाहिए, उसकी क्वालिटी होनी चाहिए, उसकी एफोर्डेबिलिटी होनी चाहिए, एकाउंटैबिलिटी होनी चाहिए। यह नैशनल एजुकेशन पॉलिसी का मोटो है, यह उसका ध्येय है।

महोदय, जो छोटा बच्चा होता है, तीन वर्ष से लेकर आठ वर्ष की आयु तक उसकी बुद्धि का तीव्र गति से विकास होता है। यह अब साइंटिफिकली भी प्रूव हो चुका है। इसलिए हमारी सरकार ने यह कोशिश की है कि एक ?बाल-वाटिका? बनाएं ताकि तीन से आठ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए ?जादुई पिटारा? के नाम से एजुकेशनल प्रोवाइड करें, जिसमें खेल-खेल में, गाना गाकर, डांस करके, पहेलियों के द्वारा वे बच्चे एजुकेशन प्राप्त कर सकें।

मैं कुछ दिनों पहले एक विडियो देख रही थी । छोटे-छोटे, नन्हे-नन्हे बच्चे माननीय प्रधानमंत्री जी के चारों तरफ मोदी जी-मोदी करके लिपटे हुए थे। उस विडियो को मिलियंस ऑफ पीपल ने देखा है। महोदय, यदि आप भी उस विडियो को देखें, तो इतने प्यार से, खेलते-खेलते, वे बच्चे मोदी जी से बात कर रहे थे। वे उनको बड़े जोर से हग किये हुए थे और कह रहे थे कि मोदी जी हम आपके साथ फोटो खिंचवाना चाहते हैं, हमने आपको देखा। माननीय मोदी के प्रति यह प्यार, यह विश्वास, जो तीन से आठ साल के बच्चों में भी है, इनका जो नो-कांफिडेंस मोशन है, क्या यह उनके विश्वास को डिगा पाएगा। ये बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं।

माननीय सभापति जी, मैं कहना चाहती हूँ कि उन बच्चों के अन्दर चिन्तन की भावना हो, उन बच्चों के अन्दर तर्कशीलता हो, उन बच्चों के अन्दर अनुसंधान की भावना हो। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, हमारी नैशनल एजुकेशन पॉलिसी की कोशिश है कि इन बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करवाई जाए। इसके साथ-साथ, मैं आपको बताना चाहूंगी कि दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा पद्धति भारतवर्ष की शिक्षा पद्धति है। इसके तहत 14.9 लाख स्कूल्स हैं, 95 लाख टीचर्स हैं और 26.5 करोड़ विद्यार्थी हैं, सभी जगहों से हैं एवं सभी वर्गों के हैं। इसके साथ-साथ, हमारी कोशिश है कि हम इसके अन्दर स्किल एजुकेशन प्रोवाइड कर सकें। इसके पहले जिस तरह की शिक्षा पद्धति रही, बच्चों के अन्दर किसी तरह का कौशल-विकास नहीं हो पाता था। कई बार ऐसा होता है कि अगर किसी कारणवश बच्चे 11वीं और 12वीं के बाद शिक्षा छोड़ देते हैं, तो कम से उनके अन्दर किसी कौशल का विकास तो हो, उनकी रोज़ी-रोटी का कोई साधन तो बने। इस बात को ध्यान में रखते हुए, सरकार की तरफ से, अब 10+2

कक्षा के बीच में ही कोई न कोई कौशल विकास की शिक्षा उन बच्चों को देने की कोशिश की जा रही है।

इसके साथ-साथ, मैं कहना चाहूंगी कि मैंने मेडिकल साइंस से पढ़ाई की। लेकिन मेरा शौक हिस्ट्री में भी था। पहले ऐसी पद्धति थी कि अगर आपने मेडिकल साइंस ले लिया, तो आप ह्यूमैनिटीज़ के सब्जेक्ट नहीं ले सकते थे। अगर आपने नॉन-मेडिकल ले लिया, तो आप कॉमर्स के सब्जेक्ट नहीं ले सकते थे। अब सरकार ने इसके अन्दर इतना खुलापन कर दिया है कि अगर आप मेडिकल के साथ ह्यूमैनिटीज़ के सब्जेक्ट भी लेना चाहें, तो आप ले सकते हैं।

आप यह देखें कि 10+2 का जो सिस्टम है, उसको खत्म करके अब यह किया गया है कि अगर 10वीं के बाद बच्चे ने 1 साल तक पढ़ाई की है, तो उसे सर्टिफिकेट मिलेगा, अगर बच्चे ने दो साल तक पढ़ाई की है, तो उसको डिप्लोमा मिलेगा और अगर बच्चे ने तीन साल तक पढ़ाई की है, तो उसको डिग्री मिलेगी । बच्चे को कहीं पर भी यह महसूस नहीं होगा कि अगर उसको बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी तो उसकी उतनी पढ़ाई बर्बाद नहीं होगी। पहले बीच में ही पढ़ाई छोड़ने के बाद बच्चे का डिग्री के लिए पूरा साल बर्बाद हो जाता था। इस तरह की एजुकेशन पॉलिसी हमारी सरकार लेकर आयी है, जो पहले कभी किसी की सोच में नहीं गया। बच्चे कैसे पढ़ रहे हैं, पढ़ने के बाद उनका भविष्य क्या होगा, इसके बारे में कभी किसी ने कोई चिन्ता नहीं की।

इसके साथ ही, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि एससी और ओबीसी के जो टीचर्स हैं, अब उनको भी मैक्सिमम एप्वाइंट किया गया है। दूर-दराज के जो इलाके हैं, वहाँ भी रोस्टर सिस्टम से उन टीचर्स को लगाया गया है।

इसके अन्दर नैशनल डिज़िटल लाइब्रेरी और रिसर्च को बहुत महत्व दिया गया है। हमारे आईआईटीज़ के बच्चे, आईआईएम्स के बच्चे, सुन्दर पिचाई और जो दूसरे होशियार बच्चे हैं, वे दूसरे देशों में जा रहे हैं। हम चाहते हैं कि इस तरह से हमारा ब्रेन ड्रेन न हो। इसलिए रिसर्च को हमारे देश के अन्दर ही लाया जा रहा है।

आरएंडडी के अंदर बहुत ज्यादा पैसा लगाकर इस तरह की फाउंडेशन, नेशनल रिसर्च फाउंडेशन, बनाई जा रही है, ताकि हमारे बच्चे ज्यादा से ज्यादा पढ़ाई कर सकें।

सभापति महोदय, आईआईटी, दिल्ली की ब्रांच यूएई के अंदर भी खोली जा रही है। इसके साथ-साथ आईआईटी, मद्रास की ब्रांच तंजानिया के अंदर खोली जा रही है। अत: एजुकेशन पॉलिसी के माध्यम से हमारी कोशिश है कि हमारे देश में एजुकेशन को और ज्यादा वृहद रूप दिया जाए।

सभापति महोदय, इसके साथ-साथ मैं आपको बताना चाहती हूं कि जो सामाजिक न्याय डिपार्टमेंट है, उसमें एससीज़/एसटीज़ के लिए हमारी सरकार ने जो किया, वह आज से पहले कभी किसी ने नहीं किया। सभापति महोदय, प्रधान मंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत आप देखिए कि हजारों-लाखों गांव ऐसे हैं, जहां पायलट प्रोजेक्ट्स सटार्ट करके, जिनमें एससीज़ / एसटीज़ डॉमिनेटिंग थे, उनका आदर्श ग्राम योजना के तहत विकास किया जा रहा है।

सभापति महोदय, इसी के साथ मैं आपको बताना चाहती हूं कि अगर हम विश्वास की बात करें, तो आप यह देखिए कि वर्ष 2004 में 38 एससी और एसटी के मेंबर ऑफ पार्लियामेंट भारतीय जनता पार्टी के पास थे। मैं वर्ष 2004 की बात कर रही हूं। कांग्रेस के पास केवल 29 थे। इसी तरह से मैं अगर आगे बात करूं, तो वर्ष 2014 में एससी और एसटी के मेंबर ऑफ पार्लियामेंट भारतीय जनता पार्टी के पास 66 थे और कांग्रेस के पास घटकर केवल 12 रह गए। सभापति महोदय, वर्ष 2019 में भारतीय जनता पार्टी में एससी और एसटी के मेंबर ऑफ पार्लियामेंट 76 बने और कांग्रेस के घटकर केवल दस रह गए। इससे आप यह सोच सकते हैं कि अगर इनकी सोच एससी और एसटी कम्युनिटी की तरफ अच्छी होती, तो इनकी पार्टी में इस तरह से एससी और एसटी के मेंबर ऑफ पार्लियामेंट की संख्या में इतनी भारी गिरावट नहीं आती।

सभापति महोदय, इसके साथ-साथ मैं आपको बताना चाहती हूं कि सरकार की तरफ से टोल फ्री नेशनल हेल्पलाइन ? 14566 स्थापित की गई है, ताकि जो एससी/एसटी के लोग हैं, उनके साथ अगर किसी तरह की एट्रॉसिटी होती है, तो वे इस नंबर को डायल कर सकते हैं। इसी के साथ टोल फ्री नंबर ? 14567 वरिष्ठ नागरिकों के लिए है। अगर उनको किसी तरह का कोई कष्ट है, तो वे नेशनल लेवल के इस नंबर को डायल कर सकते हैं। सभापति महोदय, इसके साथ-साथ, जैसा कि आपको मालूम है, नशामुक्ति की दिशा में हमारी सरकार ने बहुत कदम उठाए हैं। हमारे केंद्रीय गृह मंत्री

माननीय श्री अमित शाह जी ने इस विषय पर स्पेशल डिबेट भी करवाई थी। हमारा यह प्रण है कि हमारा देश भारत नशामुक्त होना चाहिए। इसीलिए, जो 372 संवेदनशील डिस्ट्रिक्ट्स घोषित किए गए हैं, उनके अंदर बहुत अच्छे तरीके से नशामुक्ति के लिए बहुत सी योजनाएं और बहुत से कार्यक्रम चल रहे हैं।

आदरणीय सभापति महोदय, इसके साथ-साथ मैं आपसे डिजिटल इंडिया के बारे में भी कहना चाहती हूं। आज हम यह कह सकते हैं कि हमारा देश डिजिटल इंडिया के माध्यम से कैसे आगे बढ़ रहा है, कैसे जो भी सरकार की योजनाएं हैं, उनमें जो भी पैसा है, वह डायरेक्ट बेनिफेट ट्रांसफर के माध्यम से आम आदमी तक पहुंच रहा है।

सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी वालों को याद होगा कि इनके प्रधान मंत्री जी ने किसी समय यह बात कही थी कि हम लोग एक रुपया ऊपर से भेजते हैं, लेकिन नीचे तक आते-आते उसमें से केवल 15 पैसे बच पाते हैं। बीच में 85 पैसे कहां चले गए, इसके बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन हमारी सरकार ने इसके लिए एक तरह का सिस्टम बनाया है। सभापति महोदय, आपने देखा होगा कि पिछले दिनों आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने किसान सम्मान निधि के तहत किस तरह से एक बटन दबाकर करोड़ों की संख्या में जो हमारे किसान भाई हैं, उनके पास पैसा पहुंचाया है। इसके साथ-साथ हमारी 40 योजनाएं ऐसी हैं, जिनमें डीबीटी के माध्यम से गरीबों को उनका हक मिलता है।

सभापति महोदय, आज जापान, कनाडा, फ्रांस, ये सारे देश डिजिटल पेमेंट सिस्टम को अपनाना चाहते हैं। ये सारे देश प्रभावित हैं कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने किस तरह से हिंदुस्तान के अंदर जो डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर ? डीबीटी सिस्टम है, उसके माध्यम से कैसे लाखों-करोड़ों लोगों को इसका लाभ मिल रहा है। सभापति महोदय, इसके साथ-साथ मैं कहना चाहती हूं कि भारतनेट के माध्यम से 4जी हम लोग वर्ष 2016 में लेकर आए थे। 97 परसेंट एरिया के अंदर आज 4जी एविलेबल है। आज एक गांव का गरीब सरपंच, गांव का गरीब इंसान, गांव का गरीब किसान, ये सब 4जी के माध्यम से किसी न किसी तरीके से, केंद्र की योजनाओं और स्टेट की योजनाओं से जुड़े हुए हैं। सभापति महोदय, जो सुविधाएं किसी समय में केवल शहरों में मिलती थीं, आज गरीब से गरीब परिवार को वे सुविधाएं गांवों के अंदर भी मिलती हैं। मैं इसके साथ-साथ

आपसे सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के बारे में कहना चाहती हूं। किसी समय में हमारी पूर्व की आदरणीय प्रधान मंत्री महोदया यह चाहती थीं कि यह सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री भारत के अंदर आए, लेकिन वे इसमें कामयाब नहीं हुईं। इसके बाद भी जितने प्रधानमंत्री आए, उन्होंने यह चाहा कि सेमीकंडक्टर की इंडस्ट्री भारत के अंदर आनी चाहिए, लेकिन कोई इसमें कामयाब नहीं हुआ। मैं आदरणीय प्रधानमंत्री जी को इस बात के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहती हूँ कि 40 साल से जो प्रयास चल रहा था, आज वह 40 वर्ष का प्रयास सफल हुआ है और अब सेमीकंडक्टर की इंडस्ट्री भारत के अंदर बनने लगी है।

महोदय, कुछ इंडस्ट्रीज मदर इंडस्ट्रीज होती हैं, जैसे कैमिकल इंडस्ट्री मदर इंडस्ट्री है, स्टील इंडस्ट्री मदर इंडस्ट्री है। इसी तरह से प्लास्टिक इंडस्ट्री भी मदर इंडस्ट्री है। इसी तरह से आजकल का जो डिजिटल सिस्टम है, उसी के तहत सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री मदर इंडस्ट्री है। जब मदर इंडस्ट्री हमारे इंडिया के अंदर आएगी तो आप समझ सकते हैं कि किस तरह से पूरे हिन्दुस्तान के अंदर एक अलग क्रान्ति आ जाएगी। मैं इस बात के लिए भी आदरणीय प्रधानमंत्री जी को बहुत-बहुत तहे दिल से धन्यवाद करना चाहती हूँ कि उन्होंने जिस तरह से हमारे देश के अंदर डिजिटल सिस्टम को भी आगे बढ़ाया है और इसके साथ-साथ डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से सभी पैसा अब डायरेक्ट हमारे किसान भाइयों के, मजदूर भाइयों के खाते में सीधा-सीधा जा रहा है, उसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहती हूँ।

महोदय, इसके साथ-साथ मैं कहना चाहती हूँ, निशिकांत जी ने बताया था कि बहुत सी पार्टियों ने मिलकर I.N.D.I.A बना लिया है, लेकिन मैं कहना चाहती हूँ कि यह बहुत समय तक नहीं रह पाएगा। जैसे हमारे आदरणीय एक मंत्री जी भी बता रहे थे कि जिन पार्टीज के बारे में कांग्रेस पार्टी ने सबसे ज्यादा गलत-सलत बोला, वही पार्टियाँ अब उनके साथ अलायन्स बनाए हुए हैं। मुझे लगता नहीं है कि बहुत ज्यादा समय तक इस तरह का जो यह एक घमंडिया गठबंधन बना है, इसके अंदर बहुत ज्यादा दिन तक ये लोग रह सकते हैं, क्योंकि यह कहा गया है कि मैंने विश्वास भी उसका किया है, खबर है मुझे कि यह टूटेगी जरूर, मगर थोड़ी देर लगेगी । मुझे लगता है कि बहुत ज्यादा समय तक यह गठबंधन रहने वाला नहीं है।

महोदय, इसके साथ-साथ मैं कहना चाहती हूँ कि हमारी एक और योजना, जिसके तहत जो हमारे सिविल सर्वेंट्स हैं, जो हमारे ऑफिसर्स हैं, उनको कर्मयोगी कहा गया है, कि उनके माध्यम से किस तरह से हमारे जो ऑफिसर्स हैं, उनको यह शिक्षा दी गई है कि वे अपने आपको इस तरह से आगे बढ़ाएं ताकि वे देश की सेवा में अग्रसर हो सकें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार की तरफ से मिशन कर्मयोगी चलाया गया है और उसके तहत उन ऑफिसर्स के अंदर कौशल वृद्धि की जा रही है, उनको शिक्षण दिया जा रहा है, प्रोफेशनल सिस्टम के तहत वे काम कर सकें, उनको यह सिखाया जा रहा है, उनके अंदर लीडरशिप क्वालिटी डेवलप हो, यह बात उनको सिखायी जा रही है। प्रदर्शन आधारित उनको प्रोत्साहन दिया जाए। उनका दृष्टिकोण नागरिक केन्द्रित हो, क्योंकि जो ऑफिसर्स हैं, मुझे मालूम है कि ट्रेनिंग के बाद वे अपने आपको एक उस लेवल पर समझ लेते हैं, वे अपने आपको सोचते हैं कि तुम्हारा आम नागरिक के साथ अब किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं रहा। तुम एक कुर्सी पर बैठ गए, एयर कंडिशनर कमरों में बैठ गए, अब यहाँ पर बैठकर तुम पॉलिसी बनाओ। माननीय प्रधानमंत्री जी की यह सोच है कि हमारे जो ये इस तरह के ऑफिसर्स हैं, उनको कर्मयोगी होना चाहिए । उनके अंदर यह भावना होनी चाहिए कि आप लोग जो अधिकारी बने हो, वह आम जनता की भलाई के लिए बने हो। यह एक ऐसा सिस्टम, एक मिशन कर्मयोगी चलाया गया है, इस मिशन कर्मयोगी के तहत उनको कई तरह के शिक्षण, कई तरह के प्रशिक्षण दिए जाएंगे, जिसमें उनका अंतर-विभागीय एक्सपोजर भी होगा। यह नहीं है कि कोई एक ऑफिसर एक डिपार्टमेंट में आ गया, तो सारी जिन्दगी वह उसी डिपार्टमेंट के अंदर निकाल देगा। महोदय, इसी के माध्यम से हमारी कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा जो हमारे अधिकारी हैं, वे इस चीज को समझें और अपने आपको आगे बढ़ाएं ।

महोदय, मैं इस बात के लिए प्रधान मंत्री जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहती हूं कि उन्होंने जिस तरह से देश की जनता में विश्वास बनाया है, मुझे नहीं लगता है कि उस विश्वास को कोई ठेस पहुंचा सकता है। विश्वास और प्रेम में एक प्रकार की समानता होती है। दोनों में से कोई भी जबरदस्ती पैदा नहीं किया जा सकता है। मैंने आपको बताया कि किस तरह से छोटे-छोटे, नन्हे-नन्हे बच्चे माननीय प्रधान मंत्री जी के

चारों तरफ इकट्ठा हो गए और उन्होंने प्रधान मंत्री जी को गले से लगाया और कहा कि हम आपके साथ फोटो खिंचवाना चाहते हैं।

महोदय, इन्हीं बातों के साथ मैं इस प्रस्ताव का तेज गति के साथ, तीव्र गति के साथ विरोध करती हूं। मैं कहना चाहती हूं कि ये चाहे कुछ भी कर लें, लेकिन माननीय प्रधान मंत्री जी का जो विश्वास जनता पर है और जनता का जो विश्वास माननीय प्रधान मंत्री जी पर है, उसे दुनिया की कोई ताकत तोड़ नहीं सकती है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद, जय भारत।

श्री विनायक भाउराव राऊत (रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग): सभापति जी, मेरा रूल 376 के तहत पॉइंट ऑफ ऑर्डर है।

महोदय, मैं आपका ध्यानाकर्षण करना चाहता हूं कि हमारे अरविंद सावंत जी के विचार व्यक्त करने के बाद सम्माननीय मंत्री जी ने जिन शब्दों से धमकी दी है, अपने स्वार्थ के लिए कई पार्टियों से घूम कर आने के बाद हमें कहा,...*, ऐसे शब्दों में उन्होंने जो धमकी दी है, ये शब्द रिकार्ड से निकालने चाहिए।? (व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं देख लूंगा । मैं रिकार्ड चैक कर लूंगा ।

? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : डॉ. थोल तिरुमावलवन जी ।

DR. THOL THIRUMAAVALAVAN (CHIDAMBARAM): Hon Chairman, Vanakkam. I support the No-Confidence Motion brought against the Council of Ministers led by Prime Minister Shri Narendra Modi. I got an opportunity to visit Manipur recently. As part of the Delegation of MPs of the I.N.D.I.A alliance that went to Manipur, I met the people who were staying in the relief camps. We met people belonging to both the Meitei and Kuki communities. The people whom we met shared with pain and agony the difficulties they had

to face due to the violence in Manipur. Both the sides were affected. Women of both the communities have been affected. The people whom we met said that they have lost their trust and confidence on the State Government of Manipur and of the Union Government. Prime Minister has not uttered anything or condemned during the last 90 days on what has happened to us. The Chief Minister of Manipur has not even met us. Nobody has tied to console us. There was no solace. These were the true sentiments of people of both the Meitei and Kuki communities. Therefore at a time when the people of Manipur have lost confidence in the State Government of Manipur and of the Union Government, we the Opposition parties have lost confidence in the functioning of this Government. More than 150 persons have been killed there. Many number of women have been raped. Wife of a soldier who fought for India during Kargil* war, was even raped. That soldier, with lots of anguish shared his pain, that he could not protect his wife even though as a soldier he protected this country. His words have shaken the entire world. This is a shameful incident to this country. This country has lost its confidence in the credibility of our Prime Minister. Thousands of houses have been torched in Manipur. More than 60,000 people are staying in the relief camps. It is so painful to say that the sons of this soil are living as refugees in their own land. This Government has to bow down with ?**. Women were paraded naked and raped. This Government should have expressed its sadness on these incidents. After just condemning in one single sentence Prime Minister is not bothered much but continues to do his other works. Opposition parties have moved this Motion so as to force the Prime Minister to come to this House. Through this we come to know that the Government of this Day has lost its credibility. In an unprecedented manner, the weapons were stolen from the police armouries of Manipur Government. The State Government in Manipur states that the Meitei people have stolen these weapons. This is the statement made by the rulers of

that State. There was no action taken by State Government of Manipur to get back the stolen weapons and to arrest the persons who were involved in such mischievous acts. We the MPs from the Opposition parties met the Governor of Manipur and stressed on the demands to be fulfilled. She assured us to bring those demands to the notice of the Union Government. But there was no action. Even today the people could not live safely in Manipur. Not only in Manipur, there were violent incidents against the people belonging to Islam. The properties of Muslims are being damaged and looted. Some people are targeting Muslims and kill them. The supporters of Viswa Hindu Parishad and Bajrang Dal take open pledge to act against the minorities including Muslims and Christians. They even say that they are holding weapons only to destroy and kill Muslims and Christians with an aim to create Hindu Nation. Such a sorry state of affairs is taking place here in this country. This is the reality. Not only in Haryana, an RPF Constable who was on security duty in a running train, went in search of Muslims from one coach to another and shot them dead. That policeman had also shouted slogans in praise of Prime Minister Modi and wanting everyone to vote for him. Therefore what is taking place in the country? There is no security for the minorities. Particularly Christians and Muslims are living with fear. There is no security for Dalits and women. Women are living with a sense of fear in their minds throughout the country. They are afraid of everything. The whole country and the people have lost confidence and trust on this Government which is anti-dalit, anti-tribal, anti-minorities, anti-Christian, and anti-Muslim. Not only the minorities, the majority Hindus have also lost confidence in this Government. This Government has waived off Rs. 12 lakh Crore favouring the Corporate companies. At the same time, cooking gas used by the majority Hindus, the ordinary citizens of this country, has seen a price hike. Price of tomato is Rs 200 or Rs 300 per kg. majority Hindus are affected of this price rise. Therefore

I am duty-bound to say this Government is not only against the minority communities but also against the interests of majority Hindus. Majority Hindus have voted Congress to power in Karnataka showing thumps down to BJP. This BJP Government and the Council of Ministers led by Prime Minister Modi have lost our confidence. The vacancies meant for SCs, STs and OBCs have not been filled. The scholarship schemes meant for them are being stopped. The scholarships meant for students belonging to Muslim and Christian minorities have been stopped and which affects the student community and their education, at large. There are several backlog vacancies which remain unfilled. It is painful to say that there is no action taken by this Government to fill these vacancies. Therefore I welcome and support the No-Confidence Motion moved against this Union Government. I urge that Prime Minister should immediately resign taking moral responsibility for this entire debacle. Thank you.

16.00 hrs

पृथ्वी विज्ञान मंत्री (श्री किरेन रिजीजू): सभापति महोदय, ऑपोजीशन पार्टी जो अविश्वास प्रस्ताव लायी है, उस पर बोलने के लिए आपने मुझे मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

महोदय, सरकार के पक्ष में और इस नो-कॉन्फिडेंस मोशन के विरोध में बोलने के लिए मैं खड़ा हूं। आज जो चर्चा हो रही है, एक तरीके से देखा जाए तो यह बहुत ही ऐतिहासिक है, क्योंकि इस नो-कॉन्फिडेंस को गिराने के बाद हम सभी लोग नए पार्लियामेंट बिल्डिंग में चले जाएंगे। इस पुराने संसद भवन में इस अविश्वास प्रस्ताव को गिराने का शायद यह आखिरी रिकॉर्ड दर्ज होगा, इसलिए विशेष रूप से, हम सब इस ऐतिहासिक पल को देख रहे हैं और इसके साक्षी बनकर इसमें भाग भी ले रहे हैं।

सर, जब भी कोई अविश्वास प्रस्ताव लाता है तो उसके कारण होते हैं। हम लोगों ने बहुत बार इस तरह के प्रस्ताव देखे हैं। यहां जो वरिष्ठ मेम्बर्स बैठे हैं, उन्होंने भी इस तरह

के कई अविश्वास प्रस्तावों को देखा है। लेकिन, मैं आपको और आपके माध्यम से सदन को और देश को भी यह याद दिलाना चाहता हूं कि अविश्वास प्रस्ताव कब लिया जाता है और किस परिस्थिति में लाया जाता है।

अक्सर, जब देश में कुछ ऐसे राजनीतिक हालात बन जाते हैं, जहां लगता है कि सरकार की जो संख्या है, उसमें कमी हो जाती है या देश को संचालित करने के लिए सरकार के पास वह ताकत नहीं रह जाती है और नेतृत्व कमज़ोर हो जाता है, कई परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, तब अविश्वास का प्रस्ताव लाया जाता है। लेकिन आज का जो अविश्वास प्रस्ताव कांग्रेस पार्टी लायी है, मैं यह मानता हूँ कि कांग्रेस पार्टी और विपक्ष के जो लोग हैं, वे खुद ही बाद में पछताएंगे। I want to say on record that the opposition party will regret that this No-Confidence Motion is brought at a wrong time and in a very, very wrong manner.

सर, मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि आज परिस्थिति बिल्कुल उलटी है। आज भारत की छवि विश्व में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही है। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी का कद पूरी दुनिया में बढ़ रहा है। सब यह मानते हैं कि आज भारत और भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी पूरे विश्व को नेतृत्व दे सकते हैं। यह सभी मानते हैं। आज बड़े-बड़े देशों के लोग इंडिया में आते हैं, भारत में आ कर भारत के साथ काम करना चाहते हैं। इस वक्त जी 20 की अध्यक्षता भी भारत कर रहा है। हरेक राज्य में जी 20 की बैठक भी चल रही है। भारत के कोने-कोने में जितने लोग बसे हुए हैं, और भारत के बाहर भी जितने भारतीय लोग हैं, वे यह मानते हैं कि नरेंद्र मोदी जी का नेतृत्व इस देश को वर्ष 2047 में पूर्ण रूप से एक विकसित राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर कर रहा है। ऐसे समय में मोदी जी और इस सरकार का साथ देने की जगह ये उलटा अविश्वास प्रस्ताव ला रहे हैं। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि कहीं न कहीं कांग्रेस पार्टी और विपक्ष आगे जा कर पछताएगा कि कितने गलत समय और गलत तरीके से अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

सर, वर्ष 2004 से इस सदन का सदस्य होने के नाते मैंने कुछ दृश्य देखे हैं। जब हम लोग वहां पर ऑपोज़िशन के रूप में बैठते थे, कांग्रेस पार्टी वर्ष 2004 में 145 सीट्स जीत कर आई थी और भारतीय जनता पार्टी के पास 138 सीटें थीं, सिर्फ 7 सीटों का फर्क था। 14वीं लोक सभा में कम्युनिस्ट पार्टी, जो टोटल लेफ्ट फ्रंट है, उनकी संख्या 63

थी और लेफ्ट फ्रंट के सपोर्ट से कांग्रेस ने यूपीए-1 सरकार बनाई थी। उस समय हमने बहुत कुछ देखा है। आज ये हमें कहते हैं कि हम अपने एनडीए में शामिल दलों को पूछते नहीं हैं, इज्जत नहीं देते हैं। जबकि हमने यह दृश्य देखा है कि यहां कांग्रेस के जो वरिष्ठ बैठते थे, उनके पास 145 सीटें होने के बावजूद भी उनका व्यवहार ऐसा था कि जैसे उसके पास 450 सीटों से भी ऊपर हैं। जब कम्युनिस्ट पार्टी वहां से ऑब्जेक्शन करती थी, तब कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी की इनसल्ट करती थी कि तुमको जो बोलना है, बोलते रहो, हमको जो करना है, वही हम करेंगे। आज टीएमसी के जितने सदस्य यहां पर बैठे हैं, मैं उनको याद दिलाना चाहता हूँ कि उस समय टीएमसी की नेत्री सुश्री ममता बनर्जी अकेली जीत कर आई थीं। जिस सीट पर अभी महताब जी बैठे हैं, वहां ममता जी बैठी थीं, और उन्होंने अपनी कुछ बात रखने के लिए कागज़ स्पीकर की तरफ भेजा था और बोलने के लिए कोशिश भी की थी, मगर उस समय लेफ्ट फ्रंट ने हाइएस्ट 63 सीट्स जीती थीं, उसने फिज़िकली ममता जी को बोलने नहीं दिया। यहां तक कि जब ममता जी ने बार-बार बोलने की कोशिश की, नोक-झोंक हुई, मुझे आज भी वह दृश्य याद है कि कम्युनिस्ट पार्टी पूरी तरह से ममता जी के ऊपर फिज़िकली टूट पड़ी थी।

सौभाग्य से मैं और हमारी पार्टी के कुछ सदस्य वहां सामने बैठे थे। हम लोग बिल्कुल आगे कूद गए और वहां जाकर उनको फिजिकली रोका। हमने उनको बोला कि संख्या बल के आधार आप लोग एक महिला सांसद पर इस तरह से अटैक नहीं कर सकते। आज ममता जी शायद इसे याद नहीं करती होंगी। अभी टीएमसी वालों की संख्या थोड़ी बढ़ गई है, इसलिए शायद उनके व्यवहार भी बदल गए हैं और उनकी भाषा भी बदल चुकी है। लेकिन, हम लोग ऐसी चीजों को भूलते नहीं हैं।

सर, आज देश इतनी तेजी से आगे बढ़ रहा है, दुनिया की जितनी भी आर्थिक शक्ति है, जो बड़ी इकोनॉमी है, उनमें सबसे फास्टेस्ट ग्रोइंग बिग इकोनॉमी में इंडिया नंबर वन है। चाहे आप हमें पसंद न करें, आप भारतीय जनता पार्टी के आइडियोलॉजी को सपोर्ट न करें, प्रधानमंत्री मोदी जी को पसंद न करें, लेकिन जब देश तरक्की कर रहा है, भारत आगे बढ़ रहा है, तो भारत के नाम से आपको साथ देना चाहिए । आपके द्वारा ?इंडिया? नाम रखने से कुछ नहीं होता है। आप भारत के विरूद्ध काम करेंगे और

नाम ?इंडिया? रखेंगे, इसे हमारे देश के लोग देख रहे हैं। आप लोगों का गुमराह करने का जो तरीका है, उस बहकावे में कोई नहीं आने वाला है।

सर, मैं यहां पर कुछ तथ्य रखना चाहता हूं। आज गौरव जी ने नॉर्थ-ईस्ट और मणिपुर से अपनी बात शुरू की, इसलिए मैं भी कुछ बातें वहीं से शुरू करता हूं। वर्ष 2014 में मोदी जी इस देश के प्रधानमंत्री बने। उसके पहले की परिस्थिति को भी हमें समझना चाहिए। हम इस सदन में पीछे बैठ कर और गला फाड़-फाड़ कर रिक्वेस्ट करते थे। उस समय हम लोग यूपीए सरकार से हाथ जोड़ कर मांग करते थे कि कभी-कभी आप नॉर्थ-ईस्ट की तरफ भी ध्यान दीजिए। कभी आप समय निकाल कर नॉर्थ-ईस्ट की तरफ भी देखिए । उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी लोक सभा से नहीं आए थे। वह असम कोटे से राज्य सभा के सदस्य बने थे। वह दो बार प्रधानमंत्री बने, लेकिन कभी भी विकास के नाम पर वहां का दौरा नहीं किया। वह एक-दो बार औपचारिक कार्यक्रम के लिए गए होंगे, लेकिन कभी भी हमारे नॉर्थ-ईस्ट के सांसदों और मुख्यमंत्रियों के साथ बैठ कर वहां के बारे में चर्चा नहीं की । आज आप लोग मणिपुर और नॉर्थ-ईस्ट का नाम लेकर बार-बार बोल रहे हैं। काश, आप लोग वर्ष 2014 के पहले की परिस्थिति को याद करते तो नॉर्थ-ईस्ट का नाम आपको अपनी जुबान पर लेने के लिए नहीं सोचना पड़ता। लेकिन, आप लोग भूतकाल में जाना नहीं जाना चाहते हैं। आप ऐसे ही राजनीति बयानबाजी में देश को गुमराह करना चाहते हैं।

16.13 hrs (Shri Bhartruhari Mahtab *in the Chair*)

महोदय, नॉर्थ-ईस्ट के जो राज्य हैं, वे पॉपुलेशन की दृष्टि से बहुत बड़े नहीं होते हैं। पॉपुलेशन के हिसाब से हमारे यहां के मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट की संख्या भी कम है। जब कांग्रेस पार्टी के चीफ मिनिस्टर का कॉन्फ्रेंस होता था और उसमें नॉर्थ-ईस्ट के चीफ मिनिस्टर भाषण देते थे, तो उस समय कांग्रेस के जो वरिष्ठ नेता थे, वे कहते थे कि नॉर्थ-ईस्ट के चीफ मिनिस्टर के पास एमपी कम है, इसलिए आपको कम बोलना चाहिए। मेरे प्रदेश के मुख्यमंत्री सिर्फ दो ही मिनट भाषण कर पाते थे। कांग्रेस के सारे वरिष्ठ नेताओं ने कहा कि अब आप मत बोलिए, आप अपनी बात खत्म कीजिए। आपका स्टेट छोटा है, इसलिए आपको कम बोलना चाहिए।

महोदय, आज मैं फ़ख्र के साथ कहना चाहता हूं कि मैं अपने अरुणाचल प्रदेश से पहली बार कैबिनेट मिनिस्टर बना हूं। इतने सालों के बाद, अभी की सरकार में नॉर्थ-ईस्ट से दो कैबिनेट मंत्री और पाँच राज्य मंत्री हैं। इस देश का मैं पहला ट्राइबल लॉ मिनिस्टर भी बना। किसी को इसे डेकोरेटिव एक्शन नहीं समझना चाहिए। मैं माइनॉरिटी से हूं, लेकिन मोदी जी ने मुझे माइनॉरिटी और कमजोर सोचने का मौका ही नहीं दिया। आज हम जहां खड़े हैं, अगर मैं अरुणाचल प्रदेश में खड़ा हूं, मणिपुर में खड़ा हूं, जहां भी खड़ा हूं, उसी जगह इंडिया की मेन स्ट्रीम बन जाती है।

पहले लोग कहते थे कि आप लोग मेन स्ट्रीम में जुड़िए। आज भारत का हर एक हिस्सा देश का मेन स्ट्रीम बन चुका है। इसलिए, आप लोगों को कुछ कहने से पहले सोचना पड़ेगा। आप लोगों ने नार्थ-ईस्ट के बारे में, खासकर मणिपुर के बारे में बहुत जिक्र किया। आज मणिपुर के अंदर संघर्ष हो रहे हैं। वहां मैतेई कम्युनिटी, चीन कुकीज़ और मार कम्युनिटी के बीच जो संघर्ष चल रहे हैं, आप ऐसा मत सोचिए कि आज उसकी चिंगारी अचानक से उत्पन्न हुई है। आप ऐसा मत सोचिए। वर्षों से आपने नेगलीजेंस किया, वर्षों से आपने नार्थ-ईस्ट को अपने पर मरने के लिए छोड़ दिया, हैंडहोल्डिंग करने के लिए आपने नहीं सोचा, यह उसी का नतीजा है। मैं आज वायलेंस को लेकर पूरी डिटेल में नहीं कहूंगा, क्योंकि गृह मंत्री जी जब इंटरवेंशन करेंगे तो स्पेसिफिकली वे इस बात को कहेंगे। मैं सिर्फ ऊपर की परिस्थति बताना चाहता हूं। मणिपुर के अंदर हमारे देश में सबसे ज्यादा मिलिटेंसी के आर्गनाइजेशन्स उत्पन्न हुए। आपको यह समझना पड़ेगा, वर्ष 2014 के बाद, मोदी जी जब इस देश के प्रधान मंत्री की कुर्सी पर बैठे, उसके बाद पूरे नार्थ-ईस्ट में कोई नया मिलिटेंसी गुट खड़ा नहीं हुआ। मैं आपको नार्थ-ईस्ट के अंदर इनकी टोटल संख्या बताता हूं। पिछले 9 सालों के अंदर 8 हजार से ज्यादा मिलिटेंट आर्गनाइजेशन में काम करने वाले लोग बन्दूक के साथ सरेंडर कर चुके हैं। सरेंडरिंग ऑफ दी मिलिटेंट्स में 800 प्रतिशत इनक्रीज हुआ है। किडनैपिंग की जो घटनायें होती थीं, उनमें 81 पर्सेंट कमी आई है। मिलिटेंट्स के एक्शन के द्वारा जो सिविलियन्स मारे जाते थे, उसमें 97 पर्सेंट की गिरावट आई है। सिक्योरिटी पर्सन, जो ऑपरेशन करते थे, उसमें लोग मारे जाते थे, ऐसे मृतकों की संख्या में 90 पर्सेंट की कमी आई है। इनसर्जेंसी के टोटल इंसीडेंट में 76 पर्सेंट की कमी आई है। वर्ष 1958 में जब नार्थ-ईस्ट में मिलिटेंसी उत्पन्न हुई, उसको नियंत्रण करने के लिए आर्म्ड फोर्सेज़ स्पेशल

पॉवर्स एक्ट को आप लोगों ने इस सदन में पारित करके लागू किया था। आज मैं आपको बताना चाहता हूं कि अफस्पा के टोटल कवरेज एरिया में 75 पर्सेंट का रिडक्शन हुआ है।

मैं जिस प्रदेश से आता हूं, हमारे असम और अरुणाचल की पूरी बाउंड्री का 20 किलोमीटर अरुणाचल साइड, 20 किलोमीटर असम साइड में आर्म्ड फोर्सेज़ स्पेशल पॉवर्स एक्ट को लागू किया था। अरुणाचल प्रदेश और असम का जो सीमावर्ती इलाका है, वहां से आर्म्ड फोर्सेज़ स्पेशल पॉवर्स एक्ट हटा दिया गया है। सिर्फ हमारे अरुणाचल के पूर्व के जो तीन जिले हैं, जो नागालैंड और म्यांमार से जुड़ा हुआ है, वहां पर कुछ पुलिस स्टेशन्स बचे हुए हैं, बाकी सब हटा दिया गया है। असम में अब अफस्पा नहीं है, त्रिपुरा में अफस्पा नहीं है, मिजोरम में अफस्पा नहीं है, सिक्किम में पहले से नहीं था। अब सिर्फ नागालैंड और मणिपुर के कुछ जिलों में यह बचा है। आप जब मणिपुर और नार्थ-ईस्ट के बारे में बोलते हैं तो थोड़ा सा अध्ययन करना आवश्यक है, वरना इस देश की महान संसद में बैठकर गलत बयानबाजी करने से गलत मैसेज जाता है। देश को गुमराह करने से आपको क्या फायदा है? आखिर हम इस महान सदन के सदस्य हैं। हमें जिम्मेदारी के साथ बोलना चाहिए।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं। जब एनडीए की फर्स्ट टर्म की सरकार बनी, मैं उसी समय से मोदी जी के साथ मंत्रिमंडल में काम कर रहा हूं। पहली ही बैठक में प्रधान मंत्री जी ने एक ग्रुप बनाया और कहा कि हर 15 दिन में 5 कैबिनेट मंत्री और 7 राज्य मंत्री को नार्थ-ईस्ट का दौरा करना है। यह दौरा अभी भी चल रहा है। यहां अभी जितने भी मंत्री बैठे हैं, सभी ने लगातार वहां का दौरा किया है। यह दौरा केवल प्रदेश की राजधानी तक ही सीमित नहीं है, दूरदराज के गांवों तक दौरा होता है और लोगों के साथ वार्तालाप करते हैं। यही नहीं, अधिकारियों को भी प्रधानमंत्री जी ने डॉयरेक्शन दिया है, सेक्रेटरी लेवल से लेकर ज्वाइंट सेक्रेटरी या डायरेक्टर लेवल के अधिकारी, जो भारत सरकार के अंदर काम करते हैं, उनको नार्थ ईस्ट जाने का निर्देश दिया कि उन्हें लोगों से मिलना चाहिए, दिल्ली से हुकूमत करने का कोई मतलब नहीं होता है। जन जन सेवा और जन भावनाओं को समझते हुए काम करने से हम लोगों तक पहुंच पाते हैं।

आप लोगों ने पिछले 66 सालों में ऐसा कुछ सोचा ही नहीं। आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। नरेन्द्र मोदी जी ने नार्थ ईस्ट के आठ राज्यों के साथ दिल से दिल को जोड़ते हुए आज लोगों का विश्वास जीता है। यही प्रधानमंत्री जी का सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास है। कल ही प्रधानमंत्री जी ने सभी को लेकर एक टीम बनाकर कहा कि हम नार्थ ईस्ट को एक नए डेवलपमेंट फेज में ले जाएंगे। नार्थ ईस्ट इंडिया का एक ग्रोथ इंजन बनेगा और इंडिया के सपने को पूरा करने में नार्थ ईस्ट का भी बड़ा योगदान होगा।

मैं 2004 में एमपी बना, उसके पहले मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में एक स्टूडेंट था और एक छात्र के रूप में पढ़ता था। उस समय लोग दिल्ली में नार्थ ईस्ट के बारे में जयादा जानते नहीं थे। उस समय परिस्थिति बहुत खराब थी। मुझसे पूछते थे कि मैं कहां से हूं। मैं बताता था कि मैं अरूणाचल प्रदेश से हूं तो उन्हें नहीं पता चलता था कि अरूणाचल प्रदेश कहां है?

मैं जब पहली बार चुनाव जीत कर संसद में आया तो मेंबर ऑफ पार्लियामेंट पूछते थे कि अरूणाचल प्रदेश किधर है? यह हालत थी । उस समय केन्द्र के मंत्री से पूछेंगे कि नार्थ ईस्ट में कितने स्टेट्स हैं तो वह 8 स्टेट्स का नाम भी नहीं बता पाएंगे। जब मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी की ऐसी हालत है तो आम जनता जो सड़क, मार्केट और गांव में रहती है, उसके बारे में कैसे पता चलेगा? जो सरकार को संचालित करते हैं उनको ही नहीं पता था। उस समय नार्थ ईस्ट के बच्चों के साथ कुछ घटनाएं होती थीं तो उस समय परिस्थिति बहुत गंभीर थी ।

सभापति महोदय, आपको भी अच्छी तरह से मालूम है। पसर्नल झगड़ा किसी दो व्यक्ति के बीच हो सकता है, इसके लिए मैं मना नहीं करता हूं। नार्थ ईस्ट के बच्चों से भी अगर गलती हो जाती है तो मैं मना नहीं कर सकता हूं, गलती होती होगी, जिसकी गलती है उसको सजा देंगे। लेकिन प्रोफाइलिंग या रेशिएल डिस्क्रीमिनेशन की बात होती थी ।

उस समय दिल्ली और बड़े शहरों के कॉलेजों में जो बच्चे पढ़ते थे, उनके साथ बड़ा जुल्म होता था। उसको ठीक करने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। देश की राजधानी में

नार्थ ईस्ट के कई बच्चों के साथ जुल्म हुआ, कई लोगों को मार दिया गया। मारने के बाद केस को भी रफा-दफा कर देते हैं।

लेकिन 2014 के बाद कहानी बदल गई । वर्ष 2014 में राजनाथ सिंह जी गृह मंत्री थे। मैंने गृह राज्य मंत्री के रूप में काम किया। हम लोगों को पूरा याद है, आजादी के बाद पहली बार तीन दिन तक डीजी कॉन्फ्रेंस गुवाहाटी में हुई थी। इसी मीटिंग के दौरान प्रधानमंत्री जी ने निर्देश दिया कि मेट्रोपोलिटन पुलिस उनके साथ अच्छा व्यवहार करे और उनको सुरक्षा प्रदान करे। इसके बारे में एक बात रखी, उसके बाद दिल्ली पुलिस के अंदर हम लोगों ने एक स्पेशल व्यवस्था करायी ।

नार्थ ईस्ट के आठ राज्यों से लगभग एक हजार लोगों को दिल्ली पुलिस में भर्ती कराया। आज दिल्ली पुलिस के हरेक पुलिस स्टेशन में नार्थ ईस्ट के लड़के-लड़कियां तैनात हैं। स्पेशल पुलिस फोर्स नार्थ ईस्टर्न रीजन के नाम से अलग से एक ऑफिस खड़ा किया। ज्वाइंट कमिशनर ऑफ पुलिस रैंक के ऑफिसर को दायित्व दिया। पिछले नौ सालों में नार्थ ईस्ट के लोगों के साथ कोई बड़ी घटना हुई है, ऐसा आपने सुना नहीं होगा। यह होता है नार्थ ईस्ट के लोगों के लिए प्यार। आप क्या बात करते हैं? नार्थ ईस्ट के बारे में एक एमपी अभी बोल रहे थे, अपने रीजन के बारे में इतना अच्छा काम प्रधानमंत्री जी करते हैं। कम से कम एक सेन्टेंस में उनको धन्यवाद बोल सकते थे । राजनीति में इतना भी नहीं डूब जाना चाहिए कि अंधे बन जाएं। जो अच्छा काम हुआ है, कम से कम उसका तो जिक्र करना चाहिए ।

मैं बहुत शार्ट में बोल रहा हूं। नार्थ-ईस्ट की यूनिवर्सिटीज़, कॉलेजों और देश की यूनिवर्सिटीज़ और कॉलेजों के बीच में युवा संगम कार्यक्रम चल रहा है। यहां से बच्चे स्पेशल ट्रेन से नॉर्थ-ईस्ट जाते हैं और नॉर्थ-ईस्ट के बच्चे अलग-अलग यूनिवर्सिटीज़ में जाते हैं और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। वे एक-दूसरे के लिए अच्छी भावना रखकर मोहब्बत से एक्सपोज़र ट्रिप करते हैं कि कैसे हम एक साथ जी सकते हैं, कैसे देश को मजबूत बना सकते हैं। इस बारे में अच्छी चर्चा हो रही है, मैंने रिपोर्ट भी दी है। आज युवा संगम कार्यक्रम अच्छी तरह से चल रहा है।

महोदय, इंटीग्रेशन यानी देश को एकजुट रखने के लिए, माननीय मोदी जी के ? एक भारत, श्रेष्ठ भारत? सपने को पूरा करने के लिए बहुत से कार्यक्रम चल रहे हैं। चाहे तमिल संगम का प्रोग्राम हो, चाहे नार्थ-ईस्ट को गुजरात से जोड़ने के लिए रुकमणी, श्री कृष्ण स्वयंवर की रचना का हर साल होने वाला माधवपुर मेला हो, ऐसे कितने ही कार्यक्रम हो रहे हैं। आज मैं इस महान् सदन में बताना चाहता हूं कि आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के बाद आज नार्थ-ईस्ट के सारे लोग महसूस करते हैं और नार्थ-ईस्ट का हर एक जन प्राउडली और फख्र के साथ कहता है कि मैं भारतवासी हूं। आप बाए टेक्नीकल, बाए डेफिनेशन तो कहते हैं कि हम भारत के हैं, लेकिन आपने इससे जोड़ने के लिए काम किया ही नहीं है।

वर्ष 1962 में चीन का आक्रमण हुआ । चीन ने अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख में आक्रमण किया, उस समय अरुणाचल प्रदेश का नाम नेफा था। माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी, हमारे नेता ने सदन में कहा कि नार्थ-ईस्ट को बचाने के लिए क्या-क्या काम करना चाहिए। उसके बाद नेहरू जी ने क्या कहा था, आपको तो मालूम ही है। हम तो आज भी मानते हैं, वर्ष 1962 में मेरा तो जन्म नहीं हुआ था, लेकिन जो हिस्ट्री है, जो रिकॉर्ड है और जो लोग बताते हैं, रिकॉर्ड तो सबके पास है, ऑल इंडिया रेडियो पर नेहरू जी ने क्या-क्या बातें कही थीं, सबको मालूम है। जब पूरे पश्चिम अरुणाचल प्रदेश को चीन ने कैप्चर कर लिया, असम पहुंच गया, मिसामारी पहुंच गया, तब नेहरू जी ने ऑल इंडिया रेडियो पर एक संदेश भेजा । संदेश में कहा - ?My heart goes out to the people of Assam.? नेफा असम का हिस्सा था। इसका मतलब है कि मैं कुछ नहीं कर सकता हूं, प्रधान मंत्री जरूर हूं लेकिन आप लोगों के प्रति मेरे मन में दु:ख है, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं? जबकि माननीय प्रधान मंत्री जी को उस समय कहना चाहिए था कि आप चिंता मत करिए, एक-एक इंच हम वापस लाएंगे, आप चिंता मत करिए, हमारी इंडियन फोर्सिस आपको बचाएंगी ।

माननीय सभापति : हाउस में बाद में रिजॉल्यूशन आया था ।

? (व्यवधान)

श्री किरेन रिजीजू: माननीय सभापति जी, आपको याद है कि हाउस में बाद में रिजाल्यूशन आया था। पिछले दो-तीन साल में आप लोग बार-बार बोलते हैं कि अरुणाचल प्रदेश में चीन घुस गया, वहां गांव बसा लिया। मैं ऐसा कोई शब्द इस्तेमाल नहीं करना चाहता हूं, लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि वर्ष 1959 में जिस जगह चीन ने कब्जा कर लिया था, असम राइफल वहां डिप्लाएड थी। वर्ष 1959 में, वर्ष 1962 से पहले जिस जगह कैप्चर किया था, उसी जगह पर पीएलए ने गांव बसा रखा है और इसे वर्ष 1959 में कांग्रेस ने दान में दिया था और आप हम लोगों को कहते हैं? यह पाप है। ? (व्यवधान) यह बहुत ही सीरियस चीज है। यहां हल्का-फुल्का कह देते हैं कि चाइनीज़ घुस गए और घर बसा लिया ।

महोदय, यहां राहुल गांधी जी और कांग्रेस के जितने भी लोग हैं, जो मेरी बात से सहमत नहीं हैं, मैं सबको कहना चाहता हूं कि मानसून सेशन खत्म होने के तुरंत बाद आप सबको मेरे साथ अरुणाचल प्रदेश जाना है। एक-एक इंच मैं आपको लेकर दिखाऊंगा । किसी बदमाश पत्रकार ने कुछ छपवा दिया और आप लोग उसी बात को बार-बार बजा रहे हैं। आपको इस तरह की बातें करने से पहले सोचना चाहिए कि देशहित में क्या है और क्या नहीं है? इतनी तो गंभीरता सभी में होनी चाहिए। यह तो अपेक्षित है।

सभापति जी, मैं आज आपको एक बात बताना चाहता हूं, जो आपको भी अच्छी नहीं लगेगी। वर्ष 2014 में गृह राज्य मंत्री के रूप में मैं गुंजी गया था। श्री राजनाथ सिंह जी की परमिशन से मैं वहां गया। गुंजी उत्तराखंड, नेपाल और तिब्बत एरिया का ट्राई-जंक्शन एरिया है। जब मैं वहां गया, तो वहां लोकल आदमी केवल दो-चार बचे थे। हमारी फोर्स के लोगों से जब मैंने पूछा कि लोकल लोग कहां चले गए, तो उन्होंने बताया कि लोकल लोग तो नीचे, प्लेन्स में चले गए हैं। वे एक बार नीचे गए तो गए, वापस नहीं आते हैं, क्योंकि 18 दिन पैदल चलना पड़ता था। हमारे यहां एसएसबी, आईटीबीपी, आर्मी की जितनी भी फोर्सेज थीं, उनके हाथ में मोबाइल तो थे, लेकिन वे सिम कार्ड नेपाल का यूज करते थे। आप जरा इस बात को सोचिए कि वे नेपाल का सिम कार्ड यूज करते थे । नेपाल हमारा पड़ोसी देश है। हम दुश्मन नहीं हैं, लेकिन नेपाल के सिम कार्ड को हमारी फोर्सेज यूज करती थीं। जब मैं वापस आया तो आते ही मैंने श्री राजनाथ सिंह जी को यह

कहानी बताई। उसके बाद आज मैं बहुत ही गर्व के साथ कह सकता हूं कि वर्ष 2014 में जो हालत थी, उसकी कहानी अब बदल चुकी है। अब देहरादून जाने की जरूरत नहीं है। आज आप सीधे दिल्ली से धारचुला, गुंजी से लिपुलेख तक गाड़ी से पहुंच रहे हैं। 9 साल के भीतर इतना बड़ा बदलाव हुआ है। पूरे अरुणाचल प्रदेश से लेकर लद्दाख, कश्मीर तक बॉर्डर एरियाज में अब ऐसा कोई मेजर बॉर्डर नहीं रह गया है, जहां गाड़ी नहीं पहुंचती है। उस समय हर-एक बॉर्डर पॉइंट पर हम लोगों को पैदल जाना पड़ता था। हमारी फोर्सेज के लोग, जो बॉर्डर पर पैट्रोलिंग करते हैं, वे भी तीन-चार दिन लंबी पैट्रोलिंग करते थे। विंटर में तो बर्फ के कारण जा ही नहीं सकते थे। आज बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन के माध्यम से जितनी रोड्स और ब्रिजेज़ को बनाया गया है, अगर मैं गिनती करके यहां बताऊंगा, तो मेरा सारा भाषण देने का समय गिनती करने में ही चला जाएगा। अत: मैं बाद में फोटो के साथ सारी डिटेल्स कांग्रेस के एमपीज को भेज दूंगा, ताकि वे समझ सकें कि इन 9 सालों में कितनी तरक्की हुई है। पिछले 9 सालों में 5 लाख करोड़ रुपये का टोटल बजटरी सपोर्ट भारत सरकार की 54 सेंट्रल गवर्नमेंट मिनिस्ट्रीज की ओर से नॉर्थ-ईस्ट को दिया गया है, जो 233 प्रतिशत इंक्रीज है। यह कोई छोटा-मोटा इंक्रीज नहीं है। 1 परसेंट, 2 परसेंट, 100 परसेंट नहीं, 233 परसेंट बजटरी सपोर्ट का एक्सपेंडिचर 9 सालों के अंदर हुआ है।

महोदय, इसके बाद रोड्स के बारे में अगर मैं कहूं, तो नॉर्थ-ईस्ट की तस्वीर लगभग बदल चुकी है। मैं जब इस सदन में आया था तो एक भी डिस्ट्रिक्ट में डबल लेन नहीं था। वर्ष 2014 में हमारे अरुणाचल प्रदेश में एक भी डिस्ट्रिक्ट हेड क्वार्टर में डबल लेन रास्ता नहीं था। 9 सालों के भीतर आज हर-एक डिस्ट्रिक्ट हेड क्वार्टर 100 परसेंट डबल लेन रोड से कनेक्ट हो चुका है। यह दर्शाता है कि सरकार यदि चाहेगी और प्रधान मंत्री की इच्छा-शक्ति हो, तो वह काम कर सकती है, जिसे प्रूफ करके दिखाया जा चुका है। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 41 हजार 746 किमी रास्ता 26,226 करोड़ रुपये की लागत से पूरा हो चुका है। इस वक्त 1.6 लाख करोड़ रुपये का रोड का काम चल रहा है। बाकी अन्य बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स, जैसे कि ढोला-सादिया, अटल सेतु आदि हैं, जिनका मैं नाम अभी नहीं लेना चाहता हूं, क्योंकि दूसरे विषयों पर भी मुझे अभी बोलना है, इसलिए मैं स्किप करना चाहता हूं। अभी जो वाइब्रेंट विलेज का प्रोग्राम है, जिसे आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने डिक्लेयर किया तथा गृह मंत्री अमित शाह जी हमारे

अरुणाचल प्रदेश में सबसे दूर वाले गांव में जाकर पूरे दो दिन रुके, रात गुजारी तथा वहां से लाँच किया। उस वाइब्रेंट विलेज के तहत अब सारा बॉर्डर एरिया, जिसे आपने 66 सालों के शासन का मौका मिलने के बावजूद छोड़ दिया, आज नॉर्थ-ईस्ट के सारे गांव तथा चीन बॉर्डर में लद्दाख कश्मीर तक 100 परसेंट 4 जी नेटवर्क देने का कार्यक्रम लगभग अंतिम छोर पर है। अब 6-7 महीने में वह 100 परसेंट हो जाएगा और वह चुनाव से पहले हो जाएगा । ? (व्यवधान) राजा जी, आप टेलीकॉम मंत्री थे, मैं आपको अभी बताऊंगा कि आपने नार्थ-ईस्ट के कौन-से गाँव में टेलीकॉम टॉवर लगाए हैं। आप उसके बारे में नहीं बोल पाएंगे, इसलिए आप चुपचाप सुनिए । ? (व्यवधान)

SHRI A. RAJA: Hon. Minister, because of me, tele-density had gone up to 100 per cent.

SHRI KIREN RIJIJU: But not a single village was connected. What is the point in it? ? (*Interruptions*) Now, it is happening.? (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA: You are from the North East. Please come to Manipur. ? (*Interruptions*)

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF LAW AND JUSTICE, MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CULTURE (SHRI ARJUN RAM MEGHWAL): Manipur is not a core issue. The hon. Home Minister will reply on that issue. ? (*Interruptions*) He is speaking on the No-Confidence Motion. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : Hon. Minister, please address the Chair.

? (*Interruptions*)

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL: He is speaking on the No-Confidence Motion.

SHRI A. RAJA: If you are having political honesty towards North-East, please speak on Manipur. ? (*Interruptions*)

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL: No, it is about the Motion of No-Confidence in the Council of Ministers. Read the subject. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Minister, please address the Chair.

श्री किरेन रिजीजू: सर, ये वरिष्ठ नेता हैं, लेकिन उत्तेजित होकर बैठे हुए हैं।

HON. CHAIRPERSON: My request is, do not get distracted. Stick to your point and speak.

SHRI KIREN RIJIJU: He is saying, talk about today?s No-Confidence Motion. His partner M.P., who spoke as an initiator, devoted fifty per cent of his speech to North East. Fifty per cent of his speech was devoted to North East. ? (*Interruptions*) I have to respond. Otherwise, what is the meaning of making all these wild allegations and no clarifications.

HON. CHAIRPERSON: Please address the Chair.

श्री किरेन रिजीजू: सर, इनको कांग्रेस पार्टी पर नाराज होना चाहिए, क्योंकि उस समय कांग्रेस पार्टी ने इन पर एक्शन लिया था, लेकिन ये हम लोगों पर नाराज हो रहे हैं। ? (व्यवधान)

सर, वर्ष 2014 से पहले नार्थ-ईस्ट में टोटल 9 एयरपोर्ट्स थे ।

माननीय सभापति: आप इसके बारे में बोल चुके हैं।

श्री किरेन रिजीजू: सर, 9 सालों के अंदर इसकी संख्या 17 हो चुकी है। उससे पहले गुवाहाटी एकमात्र इंटरनेशनल एयरपोर्ट था। आज नार्थ-ईस्ट में चार इंटरनेशनल एयरपोर्ट्स बन चुके हैं।

सर, इसके बाद एक वाटरवेज का विषय है। नार्थ-ईस्ट में ब्रह्मपुत्र जैसी और भी बड़ी-बड़ी नदियां हैं। वाटर को हमारा एक साधन बनाने के लिए नेशनल वाटरवेज का जो कार्यक्रम है, वर्ष 2014 के पहले इन्होंने इसके बारे में कल्पना भी नहीं की थी, लेकिन वर्ष 2014 के बाद नार्थ-ईस्ट के अंदर 20 नेशनल वाटरवेज बन चुके हैं।

सर, एजुकेशन के क्षेत्र में पिछले 9 सालों के अंदर टोटल 843 नये स्कूल्स खोले गए हैं। 20 लाख टीचर्स की अपस्किलिंग हुई है। उसके लिए 21,151 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। कई नाम और स्कीम्स हैं, मैं उनको स्किप कर रहा हूं।

सर, अभी हाल में माननीय प्रधान मंत्री जी ने 14 अप्रैल, 2023 को ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, गुवाहाटी, जो 1,123 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है, उसका उद्घाटन किया। 18 कैंसर हॉस्पिटल्स सैंक्शन्स किए गए हैं। Seven cancer hospitals have been inaugurated. सात अभी अंडर कंस्ट्रक्शन हैं।

सर, ?आयुष्मान भारत योजना? के तहत नार्थ-ईस्ट में 4,460 सेंटर्स कम्प्लीट हो गए हैं, जिनमें अभी ऑलरेडी काम चल रहा है। ?एक्ट ईस्ट पॉलिसी? के तहत कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट और ट्राइलैटरल हाइवे प्रोजेक्ट है, जो नार्थ-ईस्ट को पूरे साउथ-ईस्ट एशिया के साथ जोड़ेंगे। उस पर भी फुल स्पीड के साथ काम चल रहा है। ?इंडिया-बांग्लादेश फ्रेंडशिप पाइपलाइन?, जो 377 करोड़ रुपये की लागत से बनायी गयी है, उसका भी उद्घाटन हो चुका है। मैं आपको पावर और एनर्जी की दृष्टि से बताऊं, तो आने वाले दिनों में हाइड्रो पावर में नॉर्थ-ईस्ट इंडिया का एक मेजर हब बनने वाला है। आने वाले कुछ महीनों में इंडिया का जो सबसे बड़ा सुबनसिरी हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट है, जो कि 2,000 मेगावाट का है, वह कई सालों से लंबित था, काम नहीं चल रहा था, बंद पड़ा था, हड़ताल चल रही थी, लेकिन अब वह चालू हो गया है। इसी साल आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी के शुभ हाथों से उसका उद्घाटन होने वाला है।

महोदय, मैं अब दूसरे विषय पर शिफ्ट करना चाहता हूं। आपने मणिपुर का जिक्र किया है, तो मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि गृह मंत्री जी विस्तार से आपको बताएंगे। अब मैं नार्थ-ईस्ट से हटकर दूसरे विषय पर बोलना चाहूंगा, ताकि मैं आपके सामने एक परिप्रेक्ष्य रख सकूं। मैं ?स्पेस? के बारे में एक-दो शब्द कहना चाहता हूं। आम आदमी को ?स्पेस? का फायदा तो मिलता है, लेकिन वह उससे सीधे-सीधे नहीं जुड़ता है। चंद्रयान थ्री मिशन अपने फाइनल स्टेज़ पर है। अब वह मून के ऑर्बिट में चला गया है। मैं पूरे सदन की ओर से ?इसरो? के वैज्ञानिकों को धन्यवाद देना चाहता हूं, ताकि 23 अगस्त को मून के साउथ पोल पर उसकी सही-सलामत लैंडिंग हो जाए। अब हम सक्सेसफुली फाइनल स्टेज पर पहुंच चुके हैं। हम लोग उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे

हैं। हम सभी लोग दुआ और प्रार्थना करते हैं। मैं सदन की ओर से उनको शुभकामनाएं देना चाहता हूं।?(व्यवधान)

महोदय, वर्ष 2013-14 तक ?इसरो? का कुल बजट 6,792.4 करोड़ रुपये था, लेकिन अब उसको बढ़ाकर 12,543 करोड़ रुपये कर दिया गया है। अभी अमेरिका जैसा देश भी भारत के साथ स्पेस समझौता करके ज्वाइंट मिशन करना चाहता है। चाहे वह स्पेस का हो, मून हो, मार्स हो, हमारे लिए एक नया रास्ता खुला है। अमेरिका दुनिया का एक लीडिंग नेशन है, वह स्पेस के क्षेत्र में भारत के साथ काम करना चाहता है। जब प्रधानमंत्री जी ने अमेरिका का दौरा किया था, तो इसका समझौता भी हो गया है।

Sir, total 45 spacecraft missions and 43 launch vehicle missions and five technology demonstrations have been successfully realized since 2014. Astro satellite launched by PSLV in September, 2015 is the first dedicated Indian astronomy mission aimed at studying celestial sources in x-ray, optical and UV spectral bands simultaneously. AstroSat has been a major breakthrough by discovering five new galaxies.

महोदय, यह हमारे बहुत ही फख्र की बात है। वर्ष 2017 में पीएसएलवी-सी37 ने पूरी दुनिया में एक रिकॉर्ड बनाया । उसने 104 सैटेलाइट को सिंगल लॉन्च में सैटेलाइट में प्लेस करने का रिकॉर्ड कायम किया है। ?स्पेस? में एक के बाद एक कई अचीवमेंट्स किए गए हैं। मैं ज्यादा लंबी-चौड़ी बात न बताते हुए, मैं सिर्फ इतना ही बताना चाहता हूं कि ?स्पेस? में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने एक कार्यक्रम अनाउंस किया है। (IN-SPACe) Indian National Space Promotion and Authorization Centre, अहमदाबाद में जिसका उद्घाटन आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने किया है। वह बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। Launch of Vikram-S, a sub-orbital launch vehicle from Skyroot Aerospace Private Limited, Hyderabad, was accomplished on 18th November, 2022. यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है।

महोदय, मैं ?स्पेस? के बाद अब खेल के विषय में कुछ बोलना चाहता हूं। मिनिस्ट्री ऑफ यूथ अफेयर्स एंड स्पोर्ट्स से जुड़े हुए कुछ मामले हैं। मुझे इस मंत्रालय का

कार्यभार देखने को मिला था। आपको भी यह जानकर अच्छा लगेगा । मैं इसमें यह कहना चाहता हूं कि स्पोर्ट्स सबके लिए है। यहां इस सदन में मुझसे ज्यादा उम्र वाले भी हैं, मुझसे कम उम्र वाले भी हैं तो यह हम सबके लिए है। जो ओलम्पिक में खेलते हैं, एशियन गेम्स वगैरह में वर्ल्ड चैम्पियनशिप खेलते हैं, वह प्रोफेशनल स्पोर्ट्स है, लेकिन हम सब लोग किसी न किसी रूप से खेल से जुड़े हुए हैं। अगर हम नहीं भी खेलते हैं तो कम से कम हम तालियां बजाते हैं। अगर भारत का कोई भी खिलाड़ी मेडल लाता है तो पूरा देश उसका सेलिब्रेशन करता है।

सर, वर्ष 2014 के बाद हम ओलम्पिक्स में ज्यादा मेडल नहीं जीत पाते हैं, इस पर बड़ा चिंतन हुआ। मैं पुराने इतिहास में नहीं जाऊंगा, क्योंकि बहुत लंबा हो जाता है। मेरे फिंगर टिप्स पर है कि कौन से साल में किस स्पोर्ट्स में कितने मेडल आए हैं, लेकिन जब हम छोटे थे, मोस्को ओलम्पिक्स के बाद हम न्यूज में देखते थे कि इण्डिया में मेडल नहीं आते थे। वर्ष 1984 में देखा तो इण्डिया का एक भी मेडल नहीं है, मतलब सूची में ही नहीं आते हैं। वर्ष 1988 में सियोल ओलम्पिक्स में भी इण्डिया का नाम नहीं है, वर्ष 1992 में बार्सिलोना ओलम्पिक्स में इण्डिया का नाम नहीं है तो बड़ा मायूस सा माहौल होता था कि दुनिया ओलम्पिक्स कर रही है, लेकिन हम लोग मेडल नहीं जीतते हैं। उसके बाद हम लोग जैसे-तैसे एक-एक, दो-दो मेडल जीतने लगे, लेकिन जब प्रधान मंत्री ने ?टारगेट ओलम्पिक्स पोडियम स्कीम? लॉन्च की और हमारे जितने भी बड़े खिलाड़ी हैं, सबको आइडेंटिफाई करके उनको एक पूल में एकत्रित करके, उन पर फोकस अटेंशन देने के बाद वर्ष 2020 के टोक्यो ओलम्पिक, जो 2021 में होस्ट किए गए, मगर नाम 2020 ओलम्पिक्स है, उसमें पहली बार सात ओलम्पिक मेडल जीतकर लाए हैं।

सभापति जी, अगर आप कहानी सुनेंगे तो एक-एक खिलाड़ी के पीछे जो लागत है, जो मेहनत है, उसमें पूरी टीम का एफर्ट होता है। उसमें चाहे कोचेज़ का काम हो, चाहे ट्रेनिंग का काम हो, चाहे पैसे की जरूरत पड़ती हो, उसमें पूरा इकोसिस्टम क्रिएट करना पड़ता है। आप किसी भी खिलाड़ी को पूछ लीजिए, कई पुराने खिलाड़ी ऐसे हैं, जो हमारे पास आकर बोलते हैं कि हमारे खेलने के दिन चले गए। काश, मेरे खेलते वक्त मोदी जी प्रधान मंत्री होते। कुछ लोग यह कहते हैं कि काश मैं रिटायर नहीं होता तो मैं अभी भी खेल रहा होता, क्योंकि अभी खिलाड़ियों को मोदी जी इतना सम्मान और इज्जत

देते हैं। उस समय प्रधान मंत्री तो छोड़ दीजिए, खेल मंत्री भी मिलने नहीं आते थे। जो पुराने खिलाड़ी हैं, उनके ट्वीट देखिए और उनका इंटरव्यू कीजिए, आप देखिए । ? (व्यवधान)

श्री अर्जुन राम मेघवाल: नो कॉन्फिडेंस मोशन पर ही है।

श्री किरेन रिजीजू: वह मेरे दोस्त हैं। वह बाहर जाकर मेरे साथ बैठते हैं। उनको मालूम है और वह यहां ऐसे ही बोलते हैं, लेकिन बाहर जाकर बोलते हैं कि स्पोर्ट्स के लिए मोदी जी ने जो किया है, वह किसी ने नहीं किया है।

सर, स्पोर्ट्स के इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए चाहे वह नेशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट फण्ड हो, चाहे वह खेलो इण्डिया के तहत हो, रिकॉर्ड नंबर ऑफ फण्डिंग 2014 के बाद शुरू हुई है। आज 23 नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस पूरे देश भर में हैं और उनमें से तीन नॉर्थ ईस्ट में हैं। उनमें ओलम्पिक्स और इंटरनेशनल स्तर पर खेलने वाले खिलाड़ियों को विशेष रूप से ट्रेनिंग दी जाती है। आज आप लोग मणिपुर के बारे में कह रहे हैं तो मणिपुर इण्डिया का पहला प्रदेश है, जिसने भारत सरकार की नेशनल लेवल की नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी प्राप्त की है। मैंने खुद वहां विजिट की है। जो लोग हमारे साथ वहां जुड़े हुए हैं, वे सब कहते हैं कि जिस तरीके से प्लानिंग के साथ काम चल रहा है, तो कम्प्लीट होने पर यह दुनिया की विशेष रूप से बहुत चर्चित और बहुत ही स्पेशल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनेगी। वहां काम चल रहा है।

सर, खेलो इण्डिया यूथ गेम्स शुरू किए गए थे, क्योंकि इस देश में रेगुलर नेशनल गेम्स नहीं होते थे तो खिलाड़ी कहां पर खेलें? बड़े खिलाड़ी तो विदेश में भी खेल सकते हैं, क्योंकि इंटरनेशनल कॉम्पटीशन होते हैं, लेकिन देश के अंदर कोई बड़े कॉम्पटीशन नहीं होते थे, इसलिए खेलो इण्डिया यूथ गेम्स शुरू किया गया है।

पुणे, गुवाहाटी और पंचकुला, हरियाणा में तीन यूथ गेम्स बहुत ही सक्सेसफुली कंडक्ट किए गए हैं। उनसे इस देश में एक माहौल खड़ा किया गया है। ?खेलो इंडिया विंटर गेम्स?? जम्मू-कश्मीर से फारूख साहब और जज़ साहब यहां बैठे हैं। आपको मालूम होगा, आपके साथ एक विधायक थे। जब मैंने ?खेलो इंडिया विंटर गेम्स? वहां गुलमर्ग में चालू कराया था। आपके साथ जो एमएलए थे, वह अभी एक्स-एमएलए हैं, वह

भावुक हो गए और भाषण देते-देते रोने लगे। उन्होंने कहा कि पहली बार लगा कि कश्मीर में गतिविधियां हो रही हैं। ? (व्यवधान)

DR. FAROOQ ABDULLAH (SRINAGAR): The first international game was held in Gulmarg when Shri Gujral sahab was the Prime Minister and I was the Chief Minister. Let us be frank about it. Gulmarg has always been the centre of skiing.

I have no doubt that Khelo India has changed many aspects. There is no doubt about it. But let us not say that it was not done before. It was done before. Now, we are seeing only the improvement.

श्री किरेन रिजीजू: फारूख जी जब वहां मुख्यमंत्री थे, तो जरूर वहां इवेंट होस्ट किया होगा और केन्द्र सरकार में मंत्री भी थे तो जरूर इवेंट किया होगा, लेकिन वह कोई नियमित रूप से होने वाला प्रोग्राम नहीं था, वह कोई इस तरीके से फिक्स्ड इवेंट नहीं था। अब जो ?खेलो इंडिया विंटर गेम्स? हैं, यह 100 प्रतिशत गवर्नमेंट ऑफ इंडिया फण्डेड है और एवरी ईयर हो रहा है। यह फर्क है। वहां विंटर स्पोर्ट्स की एकैडेमी स्थापित करने के लिए सब कुछ हो गया है। हाई कोर्ट के ऑर्डर की वजह से वहां जमीन एक्वायर नहीं कर पाए थे, इसकी वजह से कंस्ट्रक्शन में डिले हुआ है। यह अच्छी बात है कि आप इसको एक्नॉलेज कर रहे हैं कि पहले एक इवेंट हुई थी, लेकिन उसके बाद कभी नहीं हुआ। अब रेगुलर प्रोग्राम्स बन चुके हैं।

सर, ?खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स? के बारे में जानकर सबसे ज्यादा खुशी आपको होनी चाहिए। आपके लोक सभा क्षेत्र कटक में मैं गया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आशीर्वाद से जब ?खेलो इंडिया यूननिवर्सिटी? का एप्रूवल मिला, मैंने वहां के मुख्यमंत्री जी से बात की। माननीय धर्मेन्द्र प्रधान जी अभी यहां नहीं हैं, मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं, वह पेट्रोलियम मंत्री थे, तो इसमें पेट्रोलियम कंपनियों ने कुछ सपोर्ट किया था। ?खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स? जब हमने कटक के उस इलाके में शुरू किया, हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि उसका इतना बड़ा असर होगा। आज जब मैं यहां आपके सामने बोल रहा हूं, वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स, जो चाइना में चल रहे हैं,

उनमें भारत के खिलाड़ी अब तक इतने मेडल्स जीत चुके हैं, जितने मेडल्स इतिहास में पूरा मिलाकर भी नहीं जीते हैं। वे इतना क्रान्तिकारी रिजल्ट लाए हैं। इसलिए, जब इस तरह का कोई अच्छा कार्यक्रम होता है, तो उसमें पूरे सदन को मिलकर उसकी सराहना करनी चाहिए।

हमने इंडिजिनस गेम्स के बारे में सोचा। पहले जो लोग क्रिकेट खेलते थे, गोल्फ खेलते थे या टेनिस खेलते थे, उनको थोड़ी पहचान और इज्जत मिलती थी। हमारे कबड्डी खेलने वाले, मलखम्ब खेलने वाले, खो-खो खेलने वाले, गटका खेलने वाले, थंग-ता, कलारिपयट्टू आदि इंडिजिनस स्पोर्ट्स खेलने वालों को कोई पहचान नहीं मिलती थी। हम लोगों ने मोदी जी के आशीर्वाद से पहली बार, जो लोग इंडिजिनस गेम्स खेलते हैं, उनको भी अर्जुन अवार्ड देने की प्रक्रिया शुरू की और खिलाड़ियों की प्राइज़ मनी में भी इज़ाफा किया। हमारे ऐसे पूर्व खिलाड़ी जिनकी वर्तमान में आर्थिक हालत खराब है, उनके लिए एक सपोर्ट सिस्टम देने के लिए हमने दीनदयाल उपाध्याय के नाम से एक स्पोर्ट्स वेलफेयर स्कीम चलाई है। उसमें हम फॉर्मर प्लेयर्स को सपोर्ट दे रहे हैं। इसी प्रकार इंडिजिनस स्पोर्ट्स को रिकग्निशन देते हुए, आज उसके लिए फण्डिंग का कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

सर, इसी तरह से स्पोर्ट्स से जुड़ी हुई, फिटनेस रिलेटेड स्कीम के बारे में दो लाइन में जिक्र करना चाहता हूं। मोदी जी चाहते हैं कि भारत का हरेक नागरिक स्वस्थ हो, फिट रहे। इसलिए उन्होंने यह कल्पना की और प्रधानमंत्री जी की सोच को पूरा करने के लिए मुझे काम करने का मौका मिला । फिट इंडिया मूवमेंट को 29 अगस्त, 2019 को लॉन्च किया गया। चाहे आप इसे सपोर्ट करें या न करें, लेकिन आज पूरे देशभर के लोग फिट इंडिया मूवमेंट के साथ जुड़ चुके हैं। आज आप चाहे पार्क में जाइए, ग्राउंड में जाइए या कहीं भी जाइए, किसी न किसी तरीके से, ओपन जिम के माध्यम से या पार्क में वॉकिंग या प्लॉगिंग के माध्यम से फिटनेस के साथ जुड़ने का काम शुरू हुआ है। फिटनेस के साथ-साथ जैसे कभी कोई कार्यक्रम होता है, जैसे सरदार पटेल जी की जयंती पर हम लोग फिट इंडिया का कार्यक्रम करते हैं। महात्मा गांधी जी की जयंती पर फिट इंडिया का कार्यक्रम करते हैं। कभी-कभी प्लो ग्रांट करते हैं कि फिटनेस करते-करते जो भी प्लास्टिक का कचरा है, उसे उठाकर साफ करें। इस तरीके

से, इनोवेटिव आइडियाज़ से फिट इंडिया मूवमेंट को देशभर में चलाया जा रहा है और मुझे अच्छा लगता है कि वर्ष 2014 से पहले जितने एमपीज़ फिट नहीं थे, वे भी आजकल फिट हो गए हैं।

मैंने देखा है कि ज्यादातर एमपीज़ अपनी कॉन्स्टिटुएंसी में सांसद खेल स्पर्धा भी करते हैं।? (व्यवधान) कांग्रेस के एमपीज़ भी बहुत फिट हो गए हैं। फिट इंडिया का कैम्पेन का असर सबको हुआ है। कई लोग कहते हैं और कई लोग नहीं कहते हैं, यह अलग बात है, लेकिन फिटनेस यूनिवर्सल है। यह सबके लिए जरूरी है।

सर, मैं एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर कुछ कहना चाहता हूँ। मैं ऐसे गांव से आता हूँ, जहां पर रेलवे लाइन नहीं है। वर्ष 2004 में यहां पर लालू प्रसाद यादव जी रेल मंत्री के रूप में भाषण दे रहे थे तो मैंने उनसे कहा था, चूँकि यूट्यूब पर मेरा वीडियो क्लिप भी होगा, आप देख सकते हैं। मैंने कहा कि लालू जी क्या आप कभी अरुणाचल प्रदेश गए हैं? वे बोलें कि मैं नहीं गया हूँ। मैंने उनसे पूछा कि क्या अरुणाचल प्रदेश को रेल मिलेगी? वे बोल नहीं पाए, क्योंकि उनके पास कोई प्लान नहीं था। वे रेलवे को बहुत सीमित रूप से देखते थे। बाद में, वर्ष 2014 के बाद जब सरकार बदली तो सरकार बदलने के बाद आज पूरे नार्थ-ईस्ट के सात स्टेट्स में रेलवे लाइन पहुंच चुकी है। 9 सालों में कहानी कैसे बदल गई? उसके बाद आगे का जो प्रोजेक्ट है, उसके बारे में आप सुनेंगे तो दंग रह जाएंगे। पहाड़ों में रेलवे की जिस तरीके से प्लानिंग रखी गई है, रेलवे डिपार्टमेंट का जो सर्वे चल रहा है, डीपीआर बन रहा है, जब वह कंप्लीट हो जाएगा तो आप दंग रह जाएंगे कि भारतीय रेलवे भी इतना कमाल का काम कर सकती है।

वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के बीच में आपने कुल कितने किलोमीटर्स का रेलवे ट्रैक बिछाया? आपने 14,985 किलोमीटर का रेलवे ट्रैक बिछाया। वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच में 25,871 किलोमीटर का रेलवे ट्रैक बिछाया गया। पहले एक दिन में औसतन 4 किलोमीटर प्रतिदिन रेलवे ट्रैक बिछाया जाता था। उसके बाद इंक्रीज होकर 7.8 किलोमीटर प्रतिदिन की स्पीड से रेलवे ट्रैक बिछाया गया। आज मैं आपको बता रहा हूँ कि यह स्पीड आगे बढ़कर वर्ष 2023-24 में 14 किलोमीटर प्रतिदिन की स्पीड से रेलवे लाइन का कंस्ट्रक्शन का काम चल रहा है। रेलवे इलेक्ट्रिफिकेशन जिस स्पीड से हुआ है, उसके बारे में भी आप सुनिए। वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के बीच में कुल रेलवे

इलेक्ट्रिफिकेशन का काम 5,188 किलोमीटर पर हुआ है। वर्ष 2014 से 2023 के बीच में 37,000 किलोमीटर पर रेलवे इलेक्ट्रिफिकेशन का काम हुआ है। इस तरह से कुल 91 प्रतिशत का इजाफा हुआ है।

माननीय सभापति: मैं पहली बार आपका भाषण इतने लंबे समय तक सुन रहा हूँ। एक घंटा होने वाला है।

श्री किरेन रिजीजू: इन्होंने नो-कॉन्फिडेंस पर बोला है तो उसको गिराने के लिए तो तर्क रखकर बोलना पड़ेगा।? (व्यवधान)

श्री अर्जुन राम मेघवाल: यह तर्क वाला विषय ही है। आपके अरुणाचल प्रदेश में भगवान परशुराम की मूर्ति है।? (व्यवधान)

श्री किरेन रिजीजू: वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के बीच में कुल फ्लाईओवर और अंडरब्रिज देश में 4,418 बनें और वर्ष 2014 से वर्ष 2023 में 10,867 फ्लाईओवर्स और अंडरब्रिजेस बने हैं।

17.00 hrs

इसमें 2.6 टाइम्स का इजाफा हुआ है। Sir, total electronic interlocking, from 2004 to 2014 तक 837 बने। From 2014 to 2023 में 2,571 इसके total numbers construction हुए हैं। Electric Loco Production वर्ष 2014 से वर्ष 2023 तक 6,052 बने। उसके बाद freight loading capacity वर्ष 2013-14 में capacity 1,014 million tons. आज यह 1,512 million tons हो गया है।

Sir, ऐक्सिडेंट्स बहुत ही अनफॉचुनेट होते हैं। यह बहुत ही ट्रैजिक मामला होता है। अगर एक भी ट्रेन का ऐक्सिडेंट हो जाए, तो हमारे लिए यह बहुत ही दु:खद घटना होती है। एक भी जान बहुत कीमती होती है। इसमें जो कमियां आई हैं। वर्ष 2004 to 2014 के बीच में per year 171 total train accidents के incidents हुए हैं। अब यह कम होकर वर्ष 2014 और 2023 के बीच में 71 पर आ गए हैं। सेफ्टी मेजर्स बहुत लंबा है, मैं इसके बारे में बताना नहीं चाहता हूं। रेलवे सेफ्टी के लिए बहुत काम हुए हैं।

माननीय सभापति : मंत्री जी, आप बहुत बढ़िया बोल रहे हैं। यह बहुत इंफॉमेटिव है।

?(व्यवधान)

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, let his speech be placed on the Table of the House. ? (*Interruptions*)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRIMATI ANUPRIYA PATEL): The nation also wants to know. ? (*Interruptions*)

SHRI N. K. PREMACHANDRAN: These are all statistics. ? (*Interruptions*)

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL: The nation needs to know the statistics. ? (*Interruptions*)

माननीय सभापति: यह काफी इंफॉर्मेटिव है।

श्री किरेन रिजीजू: यह इंफॉर्मेटिव है, इसलिए उनको सुन कर अच्छा लग रहा है।?(व्यवधान) वंदे भारत का कार्यक्रम जिस हिसाब से देश भर में चल रहा है, उसके बारे में अगर मैं कम भी बोलूं तो भी इनको समझ में आ जाएगा कि वंदे भारत जो इंडिया में डिजाइन की गयी है, इंडिया में ही मैन्युफैक्चर की गयी और यह वर्ष 2019 के बाद शुरू हुई है, आज टोटल वंदे भारत का पूरा कवरेज 52 लाख किलोमीटर है, जो 130 बार पृथ्वी की परिक्रमा कर सकती है। यह इतनी लंबी चल चुकी है। यह एक प्रूवेन टेक्नोलॉजी है। इसको दुनिया ने माना है। बुलेट ट्रेन का काम भी चल रहा है। अहमदाबाद-मुंबई वाले काम के बारे में आपको मालूम है। वहां पुरानी शिवसेना और एनसीपी काँग्रेस सरकार की वजह से डिले हुआ। अब काम तेजी से चल रहा है। डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर लगभग कम्पलीट स्टेज में है। लुधियाना, सोमनगर के बीच का, दादरी जेएनपीटी, मुंबई का जो डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर है, यह क्रांतिकारी काम चल रहा है। आप लोगों को यह जान कर अच्छा लगेगा कि किस तरह से रेलवे में ट्रांसफॉर्मेशन आए हैं। मेरे पास बहुत पॉइंट्स हैं, लेकिन अब मैं समापन की ओर चलना चाहता हूं।?(व्यवधान) सर, सभी सुनना चाहते हैं, तो मैं क्या कर सकता हूं।?(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: You have just completed one hour.

? (*Interruptions*)

श्री किरेन रिजीजू: सर, मैं एक घंटा बोल चुका हूं और अब पांच मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा। आज जो अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं, इसलिए मैंने नॉर्थ-ईस्ट से शुरू किया। इसका कारण है कि गौरव गोगोई हमारे दोस्त हैं, छोटे भाई के समान हैं। उन्होंने आधी स्पीच में नॉर्थ-ईस्ट, मणिपुर पर बोला है। इसलिए मैंने वहां से जवाब दिया। नियम से उनको यहां बैठ कर सुनना चाहिए था, लेकिन पता नहीं, उनको किसी ने नियम नहीं बताया। इसलिए मैंने नॉर्थ-ईस्ट से शुरू करके बाकी एक-दो सेक्टर्स को जोड़ दिया है।

सर, आज इस सदन में जो भी चर्चा होती है, उसे देश सुन रहा है, लेकिन इसका मैसेज कहीं न कहीं पूरी दुनिया में जाता है। जब कोई देश महाशक्ति बनने के लिए उभरकर ऊपर आता है और पूरी स्पीड के साथ आगे बढ़ रहा होता है तो पूरी दुनिया की नजर उस देश पर होती है। हम लोग कभी-कभी गलती से ऐसी बात कर जाते हैं कि आप सरकार का विरोध करना चाहते हैं, लेकिन आप देश का विरोध कर बैठते हैं। किसी ने बहुत मजे से बोल दिया कि यूरोपियन पार्लियामेंट ने भी मणिपुर की घटना को लेकर इंडिया को कंडेम किया है। क्या आपको अच्छा लगता है? आप सोचते हैं कि देश इतना कमजोर हो गया है कि मणिपुर या कश्मीर में कोई घटना होगी तो दुनिया हमको पाठ पढ़ाएगी? वे दिन चले गए हैं कि विदेश की ताकतें भारत को बताती हैं कि क्या करना है और क्या नहीं करना है? यह नया युग है, न्यू इंडिया है। मोदी जी के नेतृत्व में पूरा देश अपना रास्ता, अपना भविष्य खुद तय करेगा। हमारे देश के इंटरनल मामले में कोई विदेशी ताकत हस्तक्षेप नहीं कर सकती है।

सर, मैं विदेश में भी गया हूं और देश के अंदर कोन-कोने में भी गया हूं। मैं मंत्री बनने से पहले 155 देश घूम चुका हूं। क्योंकि मंत्री बनते समय तो अपनी मर्जी से नहीं जा सकते हैं, उस समय तो काम करना पड़ता है। नियम है, प्रोटोकॉल है। मंत्री बनने से पहले जब मैं विदेश में जाता था और मैं बताता था कि मैं इंडिया से आया हूं, तो कोई अलग से या विशेष रूप से कोई स्पेशल अटेंशन मिलती नहीं थी। इंडिया से आए हो, ठीक है इंडिया है और यहां तक सोचते थे कि इंडिया से लोग नौकरी के लिए बाहर जाते हैं या कोई अच्छी चीज प्राप्त करने के लिए विदेश जाते हैं। आप किसी भी देश में जाकर पूछिये और सब लोग यही सोचते हैं कि हमको कुछ करना है। आप देश और विदेश

कहीं भी पूछिये, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं, आप भी महसूस करते होंगे। इंडियन डायस्पोरा का कोई भी मैम्बर हो, चाहे विदेशी हो, आज सब भारत के साथ जुड़ना चाहते हैं और भारत के साथ बिजनेस करना चाहते हैं। हमारे डायस्पोरा के जितने मैम्बर्स हैं, वे गर्व के साथ बताते हैं कि मैं इंडियन हूं। इंडियन फ्लैग को दुनिया को दिखाना चाहते हैं, क्योंकि इंडिया की इज्जत बढ़ चुकी है। अब इंडिया वह नहीं है, जो आप लोग कह रहे हैं। मैं असली इंडिया की बात कर रहा हूं। इंडिया की इज्जत बढ़ चुकी है। अब वह भारत नहीं रहा है। इसलिए जब देश इतनी तेजी से आगे बढ़ रहा है, वर्ष 2047 में भारत को कहां पहुंचना है, तो उसके लक्ष्य को मोदी जी ने सेट किया हुआ है। जब प्रधान मंत्री जी ने एक क्लेरियन कॉल दिया कि वर्ष 2047 में भारत को पूर्ण रूप से विकसित राष्ट्र बनाने के लिए एक रास्ता तय किया है तो उस रास्ते पर आपको साथ चलने में क्या दिक्कत है? सरकार किसी की भी हो सकती है। क्या आप इंडिया को डेवलप कंट्री बनते हुए नहीं देखना चाहते हैं? आपको आत्मनिर्भर भारत, सेल्फ-रिलायंट इंडिया बनाने में क्या दिक्कत है? इसलिए मैं आप लोगों से कहता हूं कि घर के मामले जो भी हैं, उनको लेकर किसी देश-विदेश की यूनिवर्सिटी में जाकर पूरे देश के खिलाफ बोल कर आते हैं। यहां एक इको सिस्टम है, आप उसको प्रमोट करते हैं। यह सब करने की क्या जरूरत है? इतनी अच्छी इकोनॉमिक पॉलिसी से हमारी आर्थिक स्थिति इतनी बढ़िया से आगे चल रही है। कोविड के समय पूरी दुनिया लगभग फेल हो चुकी थी। भारत ने दिखा दिया कि कोविड महामारी को भी हम टैकल कर सकते हैं। हमने पूरे देश में फ्री मेडिसिन दी। कोविड का इंजेक्शन आप लोगों ने भी लिया होगा और इंडिया का वैक्सीनेशन एक रिकॉर्ड है।? (व्यवधान) मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। आज 75 ईयर्स ऑफ इंडिपेंडेंस, आज़ादी के अमृतकाल का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, उसमें आप लोग भी साथ में आइये। अमृतकाल का यह जो सेलिब्रेशन है, हम लोग उसको मिलकर सेलिब्रेट करते हैं। यह कोई बीजेपी का कार्यक्रम नहीं है, एनडीए का कार्यक्रम नहीं है। यह देश का कार्यक्रम है। जब प्रधान मंत्री जी 75 ईयर्स ऑफ इंडिपेंडेंस के बाद 25 साल के लक्ष्य को सामने रखकर चलने के लिए आह्वान कर रहे हैं, तो मैं इस सदन में अपनी पार्टी और सरकार की ओर से अपील करना चाहता हूं कि इस जर्नी में हम लोग एक साथ चलते हैं। Let us go together; let us be part of the great journey to make India a prosperous and fully developed nation by 2047. इस जर्नी को, इस सपने को पूरा

करने के लिए मोदी जी के नेतृत्व को और आगे बढ़ाना है और इस जर्नी में आप लोग भी मोदी जी के नेतृत्व का समर्थन कीजिए, तब हम मानेंगे कि आप भी देश के लिए सोचते हैं।

धन्यवाद ।

HON. CHAIRPERSON: *Dhanyawad Mantri Ji* for your long speech in this House. I think you are satisfied now.

? (*Interruptions*)

SHRI A. RAJA: The *Mantri* is not satisfied. Neither this House nor the country is satisfied. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Now, Shri Manish Tewari.

श्री मनीश तिवारी (आनंदपुर साहिब): माननीय सभापति महोदय, हमारे सहयोगी श्री गौरव गोगोई जी ने जो अविश्वास प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करने के लिए यहाँ खड़ा हुआ हूँ।

महोदय, किसी भी सरकार का मूल्यांकन पाँच बिन्दुओं पर किया जाता है। सबसे पहले राष्ट्रीय सुरक्षा, दूसरा, आर्थिक विकास, तीसरा, साम्प्रदायिक सद्भाव, चौथा, संस्थाओं की स्वायत्तता और पाँचवाँ है- अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति या अंतर्राष्ट्रीय रिश्ते। यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि इन पाँच बिन्दुओं पर यह सरकार पिछले नौ वर्षों में पूरी तरह से विफल रही है। चूंकि यह अविश्वास प्रस्ताव मणिपुर को केन्द्रित करते हुए, इस सदन के समक्ष रखा गया है, इसलिए मणिपुर की जो सामरिक संवेदनशीलता है, मुख्य रूप से उसको रखते हुए, मैं अपनी बात इस सदन में रखना चाहता हूँ।

सभापति महोदय, जब हमारे गणराज्य की संरचना हो रही थी, तो जो सरहद के राज्य थे, उन सरहद के राज्यों को भारत के साथ और मजबूत तरीके से एवं संगठित तरीके से जोड़ने के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किये गये थे। जम्मू-कश्मीर के लिए धारा 370, नागालैंड के लिए धारा 371 ए, असम के लिए धारा 371 बी, मणिपुर के लिए धारा 371 सी, सिक्किम के लिए धारा 371 एफ, मिजोरम के लिए धारा 371 जी और

अरुणाचल प्रदेश के लिए धारा 371 एच बनाए गए थे। चूंकि मणिपुर के एक तरफ म्यांमार है, दूसरी तरफ नागालैंड, असम, मिजोरम राज्य हैं। इसलिए जब भी उत्तर-पूर्व के किसी राज्य में सामाजिक उथल-पुथल होती है, जब वहाँ की स्थिरता भंग होती है, तो उसका असर सिर्फ उस राज्य पर ही नहीं पड़ता है, बल्कि उसका असर पूरे उत्तर-पूर्व के राज्यों पर भी पड़ता है। इसका सीधा-सीधा उदाहरण यह है कि मणिपुर में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुई हैं, जो आज भी चल रही हैं, उनके कारण मिजोरम में आह्वान किया गया कि जो मणिपुर के मूल निवासी हैं, वे वहाँ से चले जाएं। नागालैंड से भी कुछ गड़बड़ियों की खबरें आईं। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी मणिपुर में, इसलिए हम यह अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए हैं कि जब उत्तर-पूर्व के किसी भी राज्य में कोई गड़बड़ी होती है, तो उसका बहुत ही नकारात्मक असर पूरे उत्तर-पूर्व के राज्यों पर और शेष भारत में भी पड़ता है।

माननीय सभापति महोदय, आपको याद होगा कि आज से 4 वर्ष पहले, इसी सदन में धारा 370 को धराशायी किया गया। आज चार वर्ष हो गए हैं, आपने एक प्रदेश को अवैध तरीके से तोड़कर दो केन्द्र शासित राज्य बनाए? (व्यवधान) उच्चतम न्यायालय में उसकी बहस चल रही है।? (व्यवधान) आज उच्चतम न्यायालय में उसकी बहस चल रही है।? (व्यवधान) मैंने किसी की बात में व्यवधान नहीं डाला है।? (व्यवधान)

सभापति महोदय, इनको बोलिए कि ज़रा धीरज रखें । ? (व्यवधान) ये सुनने की क्षमता रखें। ? (व्यवधान) मैं यह कह रहा था कि चार वर्ष पहले धारा 370 को धराशायी किया गया और आज तक, चार वर्षों में उस प्रदेश में चुनाव नहीं हुए हैं, उस प्रदेश में अभी तक, इस सदन में जो वादा किया गया था कि पूर्ण राज्य का दर्जा दोबारा दिया जाएगा, वह पूर्ण राज्य का दर्जा उसे दोबारा नहीं दिया गया। ? (व्यवधान)

मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि जब आप संविधान की धाराओं के साथ छेड़छाड़ करते हैं, तो उसके बहुत दूरगामी परिणाम होते हैं। ? (व्यवधान) मैं और डॉ. फारूख अब्दुल्ला जी आज उच्चतम न्यायालय में थे। ? (व्यवधान) जम्मू कश्मीर के ऊपर उच्चतम न्यायालय में बहस चल रही है। ? (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : चेयरमैन सर, रूल 352 (1) यह कहता है कि ज्यूडिशियल ऑर्डर, जो उसका पेंडिंग है, कांस्टिट्यूशन बेंच आर्टिकल 370 को देख रही है। ? (व्यवधान) उसके बारे में ये यहां वक्तव्य दे रहे हैं। उसको हटा दिया जाए। सुप्रीम कोर्ट में वह केस चल रहा है।? (व्यवधान)

श्री मनीश तिवारी : सभापति महोदय, ये कौन बोल रहे हैं? ? (व्यवधान) जिन्होंने कभी रूल्स ऑफ प्रोसीजर की इज्जत नहीं की। ? (व्यवधान) वे व्यक्ति बोल रहे हैं। ? (व्यवधान) क्या नेशनल हेराल्ड सब-ज्यूडिस नहीं है? ? (व्यवधान) निशिकांत जी, इतना उत्तेजित मत होइए, बैठ जाइए। ? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: The hon. Member has just now mentioned about rule 352(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, where it is clearly stated that something which is pending in a court of law should not be referred to in the House.

....(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: You do not have to advocate for him.

....(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: He is a knowledgeable person. He understands that.

....(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: Please sit down.

....(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: Manish ji, please continue your speech.

....(Interruptions)

श्री मनीश तिवारी : सभापति महोदय, जो अदालत में हो रहा है, मैं उसका जिक्र नहीं कर रहा हूं। ? (व्यवधान) जो इस सदन में हुआ है, मैं उसका जिक्र कर रहा हूं। ? (व्यवधान)

सभापति महोदय, मैंने जम्मू कश्मीर का जिक्र इस संदर्भ में किया था कि जब आप संविधान की धाराओं के साथ छेड़छाड़ करते हैं, तो उसका बहुत ही नकारात्मक और दूरगामी परिणाम निकलता है। ? (व्यवधान) मैंने इससे पहले यह बात कही कि मणिपुर के साथ म्यांमार की सरहद लगती है। दशकों से, जो उत्तर पूर्व के अलगाववादी हैं, वे म्यांमार में शरण लेते रहे हैं। म्यांमार का जो जुंटा है, उसके चीन के साथ जो रिश्ते हैं, वे पूरी तरह से जगजाहिर हैं। पूरी दुनिया उनके बारे में जानती है।

इसलिए, जब भी उत्तर पूर्व में किसी तरह की कोई अस्थिरता होती है, तो उसका असर सिर्फ देश में ही नहीं पड़ता, उसका असर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के ऊपर भी पड़ता है। इसी संदर्भ में मैं चीन के बारे में जिक्र करना चाहूंगा। वर्ष 2020 में, अप्रैल में नियंत्रण रेखा के पार भारत की सरहद में घुसपैठ हुई। घुसपैठ एक जगह पर नहीं हुई। घुसपैठ आठ जगहों पर हुई ? वाईनाला, पैगॉन्ग, हॉट स्प्रिंग्स गोगरा, डेपसैंग, नाकु-ला, यांग्त्ज़ी, अरुणाचल प्रदेश के अपर सुबानसिरी जिले में थिएटर लेवल पर घुसपैठ हुई। मैं सरकार से यह पूछना चाहता हूं कि उस घुसपैठ को जारी हुए आज 37 महीने हो गए हैं। क्या सरकार अभी तक यह सुनिश्चित कर पाई है कि इस घुसपैठ के पीछे चीन की राजनीतिक मंशा क्या है? मैं सरकार से यह सवाल पूछना चाहता हूं, क्योंकि सितंबर, 2020 से, जब से यह सदन कोविड के बाद मिला, तब से आज तक इस सदन में चीन के ऊपर चर्चा नहीं हुई। क्या ऐसा हो सकता है कि ऐसी थिएटर लेवल की incursion हो, घुसपैठ हो और हमारे खुफिया तंत्र को पता न लगे? क्या हमारा खुफिया तंत्र कहीं पर विफल रहा है? मैं एक कागज पढ़ना चाहता हूं। एसएसपी, लेह ने डीजीपी/आईजीपीज़ की कांफ्रेंस को एक पेपर प्रस्तुत किया था, उसके दो अंश मैं पढ़ना चाहता हूं।

It reads:

> ?Presently, there are 65 Patrolling Points starting from Karakoram Pass to Chumur which are to be patrolled regularly by the ISFs (Indian Security Forces). Out of 65 Patrolling Points, our presence is

lost in 26 Patrolling Points (i.e. Patrolling Points no. 5-17, 24-32, 37, 51, 52, 62) due to restrictive or no patrolling by the ISFs. Later on, China forces us to accept the fact that as such areas have not seen the presence of ISFs or civilians since long, the Chinese were present in these areas. This leads to a shift in the border under control of ISFs towards Indian side and a buffer zone is created in all such pockets which ultimately leads to loss of control over these areas by India. This tactic of PLA to grab land inch-by-inch is known as Salami Slicing.?

महोदय, यह मैं नहीं कह रहा हूँ। यह सरकार के एक उच्च अधिकारी एसएसपी लेह, पीडी नित्या उनका नाम है, उन्होंने लिखित में यह कागज डीजीपी, आईजीपीज की कान्फ्रेंस के समय प्रस्तुत किया था। सरकार की तरफ से आज तक इसका खंडन नहीं हुआ है।

माननीय सभापति : ठीक है।

श्री मनीश तिवारी: मैं इसलिए सरकार से पूछना चाहता हूँ कि क्या यह बात सही है, जो अधिकृत तौर पर एक सरकारी अधिकारी ने कही है, एक उच्च अधिकारी ने कही है कि 65 में से 26 ऐसे पेट्रोलिंग प्वाइंट्स हैं, जहाँ पर हमारी सुरक्षा फोर्सेज पहुँच नहीं सकती हैं। क्या यह बात सही है कि आपके ये जो पेट्रोलिंग प्वाइंट्स हैं, हम उनको एक्सेस नहीं कर पा रहे हैं, वहाँ पर पेट्रोलिंग नहीं कर पा रहे हैं? क्या यह बात सही है कि इसके कारण दो हजार किलोमीटर जो भारत की सरजमीं है, वह भारत के कब्जे के बाहर चली गई है? ये बड़े गंभीर सवाल हैं और इन गंभीर सवालों का इस सरकार को जवाब देना चाहिए। महोदय, इसके साथ-साथ मैं कहना चाहूँगा। सर, मुझे आप दो मिनट का समय और दीजिए। हम यह पूछना चाहते हैं कि 18 राउंड मिलिट्री टू मिलिट्री बातचीत चीन के साथ हुई है। उन 18 राउंड में क्या निष्कर्ष निकला है? क्या यह बात सही है कि जितने बफर जोन्स बने हैं, वे सारे बफर जोन्स भारत की सरजमीं में बने हैं? जितने बफर जोन्स बने हैं इन मिलिट्री टू मिलिट्री टॉक्स के बावजूद बनिस्बत वे भारत की सरजमीं में बने हैं। हम यह पूछना चाहते हैं कि जो विदेश मंत्रालय के स्तर पर बातचीत चीन के साथ चल

रही है, उसका क्या निष्कर्ष निकला? ये सारे गंभीर सवाल हैं, जिनका जवाब सरकार को देना पड़ेगा ।

माननीय सभापति: धन्यवाद ।

श्री मनीश तिवारी : महोदय, मुझे मालूम है कि समय कम है। मैं सिर्फ एक बात आपके समक्ष रखना चाहता हूँ।

माननीय सभापति: आप जितनी देर बोलेंगे, आपकी पार्टी का टाइम खत्म हो जाएगा।

श्री मनीश तिवारी : महोदय, मुझे यह कहा गया है कि हमारी पार्टी का टाइम सुरक्षित है। यह समय आपने, अध्यक्ष जी ने मेरे को दिया है अपने समय में से निकालकर, इसलिए मैं समय ले रहा हूँ।

महोदय, आखिर में, मैं एक बात कहना चाहता हूँ।

माननीय सभापति: आप एक मिनट में अपनी बात खत्म कीजिए।

श्री मनीश तिवारी : एक तरफ तो हमारे जाबांज सिपाही चीन का मुकाबला कर रहे हैं। 50-60 हजार लोग वहाँ सरहद पर तैनात हैं। दूसरी तरफ चीन के साथ हमारा व्यापार बढ़ता ही जा रहा है। वर्ष 2022 में हमारा ट्रेड डेफिसिट चीन के साथ 101.2 बिलियन यूएस डॉलर्स था। जो हमारे चाइना से इम्पोर्ट थे, वे वर्ष 2021 में 97.5 बिलियन डॉलर थे, वर्ष 2022 में 118.5 बिलियन डॉलर हो गए। जो हमारा एक्सपोर्ट है, वह 28 बिलियन डॉलर से घटकर 17 बिलियन डॉलर रह गया। कहीं ऐसा तो नहीं है कि जो चीन हमारे खिलाफ आक्रमण कर रहा है, वह आक्रमण करने के पैसे हम उसे दे रहे हैं ट्रेड डेफिसिट के थ्रू।

महोदय, ये जो सवाल हैं, इनके ऊपर हम सरकार से जवाब माँगते हैं। मैं आखिरी बात यही कहना चाहूँगा कि सवाल बहुत हैं, संवाद की कमी है। अगर संवाद रहता तो इंडिया को यह जरूरत नहीं पड़ती कि इस सदन में हम यह अविश्वास प्रस्ताव लेकर आते। मैं यह उम्मीद करता हूँ कि इन सारे सवालों का सरकार पूरी जिम्मेदारी से और पूरी सच्चाई से जवाब देगी। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती नवनित रवि राणा (अमरावती): सभापति जी, सदन में अविश्वास प्रस्ताव विपक्ष लाया है। सुबह से सारी डिबेट मैंने सुनी है और अविश्वास प्रस्ताव का मैं निर्दलीय सांसद और जनता के हित में काम करने वाली महाराष्ट्र से सांसद होने के नाते विरोध करती हूं। सुबह 12hrs से अविश्वास प्रस्ताव पर डिबेट शुरू हुई है। मैं तब से देख रही हूं कि नो-कांफिडेंस मोशन इसलिए लाया गया था ताकि महिलाओं पर मणिपुर में जो अत्याचार हुआ है, उसके ऊपर चर्चा होनी चाहिए, इसके लिए विपक्ष द्वारा अविश्वास प्रस्ताव सदन में लाया गया था। संसद में बैठी हुई महिला सांसद पहले महिला है, माँ है और उसके बाद सांसद है। मैं सुबह से देख रही हूं कि विपक्ष के जितने सांसदों ने अपनी बात रखी है, सिर्फ मोदी जी को टार्गेट करके अपनी बात कही है, लेकिन महिलाओं के प्रति कहीं भी सहानुभूति और महिलाओं के फेवर में एक भी शब्द विपक्ष का मुझे सुनाई नहीं दिया। मणिपुर में महिलाओं पर जो अत्याचार हुआ है, वह अतिशय है और सभी को उसका निषेध करना चाहिए। मेरा विपक्ष से सवाल है कि चार तारीख को हुई घटना को जुलाई में संसद सत्र से एक दिन पहले जानबूझ कर उस विडियो को वायरल क्यों करते हैं? जब पत्रकार हमें आकर विडियो दिखाते हैं, Madam, do you know about this video? What is happening in Manipur? Please give us some bite or some view of yours. I said: ?Which video? What happened in Manipur?? It happened on 4^{th} of May. चार मई को हुई घटना को जुलाई में संसद सत्र से एक दिन पहले एक पत्रकार आकर हमें वह विडियो दिखाता है। मैं सरकार से मांग करती हूं कि जिसने परपसली यह विडियो वायरल किया है और महिलाओं को इस सभा गृह में लाकर उनको बदनाम करने का काम विपक्ष ने किया है, उसके ऊपर जांच होनी चाहिए और दोषियों को सजा मिलनी चाहिए। जिसने यह कृत्य किया है, वह जितना जिम्मेदार है, समाज में इस तरह से हुए अत्याचार को खुलेआम सोशल मीडिया में प्रचार-प्रसार करने का जिन्होंने काम किया, उनका निषेध इस सभा गृह से किया जाना चाहिए। आज विपक्ष द्वारा लाए गए नो-कांफिडेंस मोशन के लिए मैं इनसे पूछना चाहती हूं कि विपक्ष की एक भी महिला डिबेट सुनने के लिए सदन में नहीं है कि वे देखें कि सत्ता में बैठे लोग महिलाओं के बारे में कितने चिंतित हैं। यदि ये सीरियस हैं, तो लास्ट वीक राजस्थान में हुई घटना के बारे में विपक्ष के एक भी सांसद ने उल्लेख नहीं किया। जब एक महिला के साथ, नाबालिग लड़की के साथ अत्याचार होता है, उसका बहुत बुरी तरह से रेप किया

जाता है और कोयले में डालकर उसकी आखिरी सांस निकलने तक उसे जलाया जाता है और फिर जो बचता है, उसे पानी में बहाया जाता है। मेरा प्रश्न विपक्ष से है कि क्या महिलाओं का इस्तेमाल राजनीति के लिए किया जा रहा है? महिलाओं पर राजनीति करके रोटी सेंकने का काम किया जा रहा है। मेरा विपक्ष से प्रश्न है कि यदि मणिपुर की महिलाएं हम सभी के लिए सम्माननीय हैं, तो हमारे देश में रहने वाली हर महिला हमारा मान, सम्मान और गर्व है, क्योंकि हम भी महिलाएं हैं। मैं विपक्ष से पूछती हूं कि यदि मणिपुर की महिलाएं आपको इतनी महत्वपूर्ण लगती हैं तो चार मई को आपका डेलीगेशन वहां क्यों नहीं गया? तीन महीने बाद संसद सत्र शुरू होने के बाद विपक्ष का डेलीगेशन पूरी टीम बनाकर वहां जाता है। आप क्या वहां फोटो खींचने के लिए गए थे या विडियो बनाने के लिए गए थे या उनकी माँओं का रोना दिखाने के लिए गए थे? मैं पूछती हूं कि राजस्थान में, जहां विपक्ष की सरकार है, जब एक लड़की के साथ इतनी बुरी तरह से व्यवहार होता है, अत्याचार होता है, तो विपक्ष का डेलीगेशन आज तक राजस्थान क्यों नहीं गया? विपक्ष को सदन में इस बात का उत्तर देना चाहिए। ये मोदी जी को पूछते हैं कि वे मौन क्यों हैं? मैं विपक्ष से पूछती हूं कि राजस्थान की घटना में विपक्ष मौन क्यों हैं? Sougata *kaka*, we call you Google uncle. If today, we go on Google and search कि महिलाओं पर सबसे ज्यादा अत्याचार कहां हैं ? (*Interruptions*)

माननीय सभापति : श्रीमती राणा जी, आपका भाषण हो गया ।

? (व्यवधान)

SHRIMATI NAVNEET RAVI RANA: Sir, this is a very important issue.

सर, महिलाओं पर चर्चा हो रही है, अगर पुरुषों को एक-एक घंटे का समय दिया जा रहा है तो हम महिलाओं को कम से कम पाँच-सात मिनट का समय तो देना ही चाहिए।

HON. CHAIRPERSON: Make your last sentence. Then, I am going to call the next speaker.

? (*Interruptions*)

SHRIMATI NAVNEET RAVI RANA: Sir, I am on my last point.

महाराष्ट्र से हमारे कलीग श्रीकांत जी ने हनुमान चालीसा का यहां पठन करके दिखाया। मैं सांसद के रूप में नहीं, सांसद एक तरफ और एक महिला होने के नाते जब मैंने सिर्फ यह अनाउंस किया था कि मैं हनुमान चालीसा का पठन करूंगी तो मुझे घर से घसीट कर चौदह दिन जेल में और दो दिन लॉक-अप में रखा गया था। पर, आज मोदी जी की सरकार है। इस पार्लियामेंट में ऐसा कोई अत्याचार किसी पर नहीं करेगा। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने हमें लड़ना सिखाया है, अपने हकों के लिए रोड पर आकर अपनी आवाज़ बनना सिखाया है। जब एस.टी. महामंडल की महिलाएं महाराष्ट्र में वही आवाज़ उठा रही थीं तो उन महिलाओं को उठा कर लॉक-अप में करीब एक महीना उन्हें सड़ने के लिए फेंक दिया गया था, तब यह विपक्ष कहां गया था? तब इस विपक्ष ने मौन धारण क्यों किया था? इन चीजों के उत्तर भी इन्हें देना चाहिए। सिर्फ मणिपुर, महिलाएं, महिलाओं पर अत्याचार, महिलाओं को होने वाली पीड़ा, ये इनके विषय नहीं हैं, सिर्फ मोदी जी का नाम है तो इन्हें उसका विरोध करना है। यही इनका एजेंडा बना है।? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Thank you. You have made your point.

SHRIMATI NAVNEET RAVI RANA: Sir, just give me one minute.

सर, विपक्ष नारा दे रहा है ? ?इंडिया, इंडिया, इंडिया।? अरे, इंडिया ही मोदी जी को बनायी है, इंडिया ही मोदी जी को पार्लियामेंट हाउस में प्रधान मंत्री के रूप में लायी है। आज भी इंडिया मोदी जी के साथ है। विपक्ष ने किस विषय पर मौन धारण किया है, इनको उत्तर देना ही पड़ेगा। यह मेरा विपक्ष से प्रश्न है।

सर, मैं बस इतना ही कहूंगी कि महिलाओं का इस्तेमाल राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए नहीं करना चाहिए। विपक्ष के लोग महिलाओं का सम्मान करना सीखें।

ADV. A.M. ARIFF (ALAPPUZHA): Hon. Chairman, Sir, on behalf of CPI(M), I fully support this No Confidence Motion moved by Shri Gaurav Gogoi.

It is for the first time in the history of Indian Parliament that the Opposition is moving a No Confidence Motion unanimously with the sole aim of bringing the Prime Minister of India to this august House to speak on a serious issue of Manipur, which is burning for about more than three months now.

Sir, when we were shouting slogans inside the House: ?Pradhan Mantri *sadan mein aao?*, the Prime Minister was sitting in his cabin in a short distance to this House. There, he was thinking about how to divide the people again and again. He was discussing with a 50-Member group of BJP on how to use these divisions cleverly to win more seats in the coming elections.

Sir, why does our Prime Minister hesitate to come to our Parliament? Is it because he sees all these Opposition Members in Parliament as his enemies?

I wish to remind you once again, Mr. Prime Minister, that we are also elected by the people just like you.

Respected Prime Minister, do you know that the world famous ?Time Magazine? published from USA had come out with a cover photo of you and described you as a ?Leader of division??

Similarly, Sir, all the reputed media agencies across the world compared our Prime Minister to Emperor Nero, who played his fiddle when the Roman Empire was burning.

We know that in the history of Indian Parliament, our Prime Minister has set the record of attending the House proceedings for the least time, and no one else will ever break that record.

Sir, it was only 79 days after the Manipur incident took place, that he chose to open his mouth, that too outside the Parliament, and described the

incident as a shame in our country. In one sense, he was forced to open his mouth by the horrifying video of two of our sisters paraded naked by a mob, which was aired the world over.

Sir, I would like to bring to your attention the ?Telegraph? newspaper, which boldly portrayed his reaction as crocodile tears along with a comment: ? It took 79 days of pain and shame to pierce 56-inch physique.?

I wish to give a big salute to the cartoonist who bravely drew a cartoon, and Editor-in-Chief of the *Telegraph* newspaper who had shown the courage to publish it. I could not understand why our Prime Minister is so full of hatred towards the media. Is it out of his fear? Why did he not allow even important journalists to enter the Parliament? Everyone in the world can enter the Parliament, but journalists are allowed to enter the Parliament by draw of lots. Is he still afraid that they will spread CORONA virus which has lost its virulent nature months back?

I am not going further about the Manipur incident as our all-Party delegation had presented the current situation. When Manipur was burning here, the Prime Minister went to France and delivered a speech about world peace. When I heard that speech, I remembered an old proverb which says, although he lives in a urinal, his job is to sell perfumes. Now, there is no reason why we recognise you as the Prime Minister of this country because the hon. Supreme Court has literally taken over the administration of one of the States in the country. The Supreme Court has appointed a retired Mumbai Chief Commissioner as an overall monitor and CBI to probe against atrocities under the supervision of the Supreme Court. Further, it has also named a three-Member Committee of former High Court Judges to look into the humanitarian aspects.

Sir, it is unprecedented in the history of India that the Supreme Court has taken stringent action against a State Government, that too ruled by the BJP, by bypassing the Union Government. If our Prime Minister had at least a bit of shame or pride left with him, he should have resigned from that post. And by not resigning, he has proven that his 56-inch chest has no space to accommodate such noble and ethical feelings.

Are you not in control of the Police, Military and the entire administrative machinery in this country? Why are you not taking any action when weapons of the Military were looted by the mob and used against the people? Exhibiting an appeal to terrorists to put the weapons in the boxes placed before the Government offices was not enough to control the violence. It is one of the jokes of this century.

After Manipur, now it is the turn of Haryana where your own Government paved the way for fresh communal clashes in Nuh, and we saw your own alliance partner, the Jananayak Janata Party Chief and Deputy Chief Minister, Mr. Dushyant Chautala openly criticising that the situation there got worsened only because of your divisive politics.

As if what is happening is not enough, the hon. Prime Minister came up with another divisive agenda, namely of Uniform Civil Code. After you raised the discussion about the Uniform Civil Code, we saw different sections of communities of the country expressing their concern. Our Prime Minister and his right hand, Amit Shah ji were seen calling on each and every such section and assuring them that they would be excluded from the purview of it. So, your aim is just to consolidate the vote bank by dividing the society in the name of UCC.

At last, it will also end up as what happened to the Citizenship Amendment Act. And then you are trying to ignite the Gyanvapi Masjid issue through the survey conducted by the Archaeological Survey of India. We know that after Kashi it will be Mathura. I have no doubt that you will make this country burn as a whole only for getting votes. But the secular forces have made up their mind to save this country from the divisive forces. And that is why all Opposition Parties have united together to form the Indian National Development Inclusive Alliance (INDIA) to save this country.

We will overcome *?* open threat that if I did not keep quiet, *?** will arrive at our home. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: That name should not go.

? (*Interruptions*)

ADV. A.M. ARIFF: Sir, she has openly threatened the other day. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Sorry, Mr. Ariff, you cannot refer to her like this.

? (*Interruptions*)

ADV. A.M. ARIFF: You might have heard it. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There are specific Rules if you are referring to a Member.

? (*Interruptions*)

ADV. A.M. ARIFF: Perhaps, you may still try to allow the ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: No, you cannot refer to her. No name cannot go.

? (*Interruptions*)

ADV. A.M. ARIFF: She has openly threatened in the House. Everybody heard it. ? (*Interruptions*) The newspaper has published it. ? (*Interruptions*) I need only one minute. I may be permitted to complete. ? (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: That part will not go.

? (*Interruptions*)

ADV. A.M. ARIFF: You may still allow Shri S K Misra to be the lifelong Director of ED to defeat INDIA Alliance but I wish to remind you how the people of Kerala have given a befitting reply by re-electing the Left Government. You may try to defame it using about nine Central agencies including ED, CBI, NIA, Central Intelligence and even C&AG. The experience was so different in Karnataka, Tamil Nadu, and West Bengal. We know that you have changed the Enforcement Directorate to election duty by making mockery of democracy. The one and only Director, Shri S K Misra, has already started the election duty for the next general elections. We wish to remind you that we were least bothered about ED. Our hon. Prime Minister is now irritated with the word 'INDIA' and he has forgotten the slogan that he used to raise before like 'Make In India', 'Startup-India', etc., because these slogans include the word 'INDIA'. It can be clearly seen in the slogan 'Make In India' that the joke was addressed to the *Bada Bhais* like Adanis and Ambanis. Now, he is trying to explain the word 'INDIA' as East India Company and Popular Front of India.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

ADV. A.M. ARIFF: This shows how he is trying to create a communal divide using the word 'INDIA'. Now our hon. PM is raising the slogan 'Quit India'. He does not know its real meaning. RSS leadership was against our Freedom

Movement. I wish to remind you that Quit India slogan was raised by our freedom fighters asking the British to quit from our motherland.

You can defeat this No-Confidence Motion by a majority in this House but we have a strong conviction that we will pass the original No-Confidence Motion against you with the support of the people of India in the next elections.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): I on behalf of my RSC Party and on behalf of INDIA team rise to support this No-Confidence Motion against the present Government headed by the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi.

Never before in our country's recent history have we gone through such scales of palpable communal tension, violence, and atrocities against tribes, women, children, marginalised sections of the society and the people belonging to backward classes in the society. From east to west and north to south, different parts of our country are experiencing communal tension and violence orchestrated by the political forces whose primary agenda is to encourage divide among the people on communal lines and to have a religious polarisation, thereby taking political advantage out of the religious polarisation. Recently, in Karnataka and even in West Bengal, that experiment was done but that mission failed. Recently, we have seen that it is happening in Haryana, they have succeeded in Haryana in unleashing large scale violence and creating a Hindu-Muslim divide among the people of Haryana.

The very strange thing to be noted is the launch of the State's bulldozers on the victims and their properties after unleashing violence on the innocent people. It has become a familiar pattern of ethnic cleansing. Sir, demolition of the houses, the shops and establishments, after unleashing violence against the

poor and innocent people has become the order of the day which means both the Government and the administration are trying to destroy the properties of the victims. That is also being experienced. It is in this backdrop of such an extremely volatile situation, that we are forced to move a No-Confidence Motion. If there is any one entity singularly responsible for what is happening in India, it is none other than the Union Government led by the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi. This Government is solely responsible for everything that is happening in India including the political situation prevailing in the State of Manipur.

I do hope that the peace-loving and truly patriotic Members of this House will definitely vote for this Motion to protect our composite nationalism, our diversity, our democracy, and our sacred constitutional values. For last three months, the entire world has been watching the extent of indifference, ineptitude, insensitivity, and total inefficiency in handling the violent situation in Manipur demonstrated by both the Central Government and the State Government. Sir, what better evidence is needed to prove the total inefficiency and ineffectiveness of the Union Government when we discuss about the Manipur situation and the lack of their commitment in handling the extremely volatile situation in a small State like Manipur? If the Government is not able to handle the situation, not able to restore the peace, not able to maintain the law and order and tranquillity in a small State like Manipur, then what is the efficiency and what is the double-engine power of the Union and the State Governments? What is the strength of the Prime Minister in having such a strong office? The Government has to answer this. The Government is answerable.

Sir, I have had the opportunity to visit the State of Manipur with the team members of INDIA and we had the opportunity to visit the people who are

affected due to the violence and the riots which have happened in the State of Manipur. It is quite unfortunate to note that the situation in the State of Manipur is very, very pathetic. It is disheartening and it can be surmised that the situation is grim in Manipur. So, better late than never, I urge upon the Government to please act. The Prime Minister has to act. The Prime Minister has to speak.

Sir, as Mr. Ariff has just stated, under what circumstances are we moving this No-Confidence Motion? This is the first time in the history of Indian Parliament that this is being done in order to ensure the presence of the Prime Minister of the country, a duly elected Prime Minister of the country, to come to the House. To ensure the presence of the Prime Minister, the Opposition?s compulsion to move a No-Confidence Motion is a strange thing in the Parliamentary democracy. ? (*Interruptions*)?

Sir, it is shameful to the nation. The hon. Prime Minister, just half an hour before the Monsoon Session started, made a statement outside the Parliament House building, and he equated the situation in Manipur with that of Chhattisgarh and Rajasthan. What tempts him to make such a comparison? Can we compare the situation in Rajasthan and Chhattisgarh with the situation in Manipur? The incidents started on 3rd May. Subsequently, three Mann Ki Baat episodes have taken place through the All India Radio. The hon. Prime Minister has not even made even a single statement about the situation in Manipur. The hon. Prime Minister could have at least appealed to the people of Manipur to cooperate with the Government to restore peace and law and order in the State. What prevented the Prime Minister from making a statement? What prevented the Prime Minister from coming to the House and addressing the House, and to appeal to the people of India, particularly to the people of Manipur to maintain peace and tranquillity? All this goes on to show that

something is there. That is why, the people of Manipur, the minority community in particular, in the State of Manipur, are under the impression and are having an apprehension that the silence of the Prime Minister is deliberate with an intention to achieve some political gains. That is the allegation which is being made by the people of Manipur when we had visited the State of Manipur.

17.49 hrs (Hon. Speaker *in the Chair*)

Sir, recently, a highly learned and spiritual leader of Manipur has said and I quote, ?Little does our Prime Minister realize that he is taking India through the darkest days of our history. Only the next generation will be able to evaluate the level of insanity to which we have been forced to descend.? This is the statement of a learned and spiritual leader in the State of Manipur in the backdrop of the incidents which took place in Manipur. This is the situation prevailing in the State of Manipur.

Now, I come to my next point. My next point is regarding the Supreme Court judgement of yesterday. I am very proud to say that INDIA team?s No-Confidence Motion moved by Shri Gaurav Gogoi has been ratified by the hon. Supreme Court yesterday through its verdict. It is a ratification by the Supreme Court. It is a judicial ratification of the No-Confidence Motion because the entire administration of the State of Manipur has been taken over by the Supreme Court. You see the Supreme Court has taken three major measures. One is constitution of a three-member Committee to look into the relief as well as rehabilitation work. An investigation by CBI will be done or monitored by the Supreme Court through the retired DGP of Maharashtra. Is it not a no-confidence on the Union Government and CBI? Is it not a no-confidence, as ratified by the Supreme Court, that CBI is not trustworthy? That is why the former DGP of Maharashtra is being entrusted with the task of looking into the

aspects and to report to the Supreme Court. It has to be reported timely to the Supreme Court also.

The third measure which the Government or the hon. Supreme Court has taken is this. You might have seen that 42 police officers from other States, not below the rank of Inspector, will be the members of the 42 Special Investigation Teams.

When the incident of naked parade of the two sisters had come out in a viral video, what was the reaction of the Chief Minister of the State of Manipur, Shri Biren Singh? When the Press people asked about the response of the Chief Minister of the State, what did he say? He said that more than 6000 FIRs have already been registered in Manipur. We are not in a position to say what happened to them and what is the state of investigation. There was such an irresponsible reply from the State chief, that is the Chief Minister of the State of Manipur. That is the thing which has happened. That is why the Supreme Court, the House, the people at large have lost confidence in the State administration. That is a fact.

On 4th May, this naked parade of these two ladies took place. When the FIR was registered, it was registered only on 17th of May, that is after 14 days. These two girls or these two ladies were captured from the police custody. The police is well aware of the incident. Even then, the police was not ready to take an FIR, the FIR which was lodged on the 17th of July was a zero FIR. Subsequently, when the arrest took place, it was on 20th July when the naked video or the thing became viral in the social media as well as in the public. Only after that the first person was arrested and four other persons were arrested. Madam was just now asking why the video had been circulated. Suppose the video had not come into the public domain, it is definite that none

of them would have been arrested because of the attitude taken by the State Government. How will the people of Manipur rely on such a Chief Minister? He is still continuing in power and he is still enjoying the power. People have lost confidence in the Chief Minister. But it is quite unfortunate. That is why I am saying that three major measures were taken or adopted by the Supreme Court to appoint a 3-Women Judge Panel to look into the relief and rehabilitation. Investigation by CBI is being monitored by a retired Director General of Police of Maharashtra. Also, 42 police officers outside the State of Manipur will be part and parcel of the 42 Special Investigation Teams.

What does the Supreme Court decision indicate? Both the Governments at the Centre and in the State have miserably failed in dealing with the Manipur situation, in restoring peace and in maintaining law and order situation in the State of Manipur. It proves that the constitutional machinery in Manipur has totally collapsed. I think, it is a fit case for dismissal of that Government by invoking Article 356 of the Constitution. But I do not support Article 356. We are against Article 356. Therefore, I appeal to the hon. Prime Minister, to the Government of India, to the BJP leadership to remove that Chief Minister at the earliest. At least, that should be done by the political leadership. Why are you still retaining him? That means you are indirectly supporting the Chief Minister. That means you are indirectly supporting all the actions taken by the Chief Minister and the particular State Government. Why he is still there? He has made a drama of resignation which we all have seen. I am not going into it.

So, the highest court of the land is fully ratifying the No-Confidence Motion moved by the INDIA alliance. Today morning, Shri Nishikant Dubey was saying that this is an unnecessary motion being moved. But the Supreme Court said that the constitutional machinery of the particular State has

collapsed and the next responsibility is with the Union Government. It is quite unfortunate to say that the Union Government is not in a position, is not empowered, to take any action in the State of Manipur even after the collapse of the constitutional machinery in the State. About 160 people have been killed. Thousands of people have been injured, and sixty-five thousand people of Manipur are there in the rescue camps and shelters. Thousands of houses are burnt. In the relief camps, people are in a pathetic situation. It is very pathetic to see their conditions. In such a situation, if the Government of India is not taking any pro-active measures to look into the affairs and to combat it, and also to restore peace, then what is the responsibility and accountability of the Union Government as far as this issue is concerned? That is a pertinent question. That is the reason why we have given a notice for the No-Confidence Motion.

In this background, I do urge the Government to take the following immediate measures:

I have already stated it earlier that replace the Chief Minister with immediate effect.

Send an all-Party Delegation to the State of Manipur under the leadership of a Cabinet Minister, and if possible, send it under the leadership of Home Minister.

Convene an all-Party Meeting to be attended by the Prime Minister to adopt a political resolution on the basic issues of Manipur as well as the North-East.

Rehabilitation and relief measures have to be strengthened and expedited under the auspices of the Government of India. You cannot rely on the State Government. The Union Government has to step into the shoes of the State

Government to expedite the rehabilitation and relief operation in the State of Manipur.

Finally, it is very, very important on the part of the Government of India and political leadership to initiate proactive action to build confidence. In Manipur, there is an internal war between two sections of the society. I am not naming anyone. In such a situation, there is a necessity of confidence-building measures.

We, all the political parties and the Government, are with the people of Manipur. We have to restore peace and tranquillity in the State of Manipur; for which, an all-Party Meeting has to be convened and a political resolution has to be adopted.

These are the points which I would like to highlight with regard to the Manipur issue.

Hon. Speaker, Sir, now I come to other issues which concern the economic scenario of our country. This is a No-Confidence Motion. The economic situation of the country has gone from bad to worse over the last nine years. The reckless decision on demonetisation and hasty implementation of GST have broken the backbone of our economy. The agricultural sector is in total turmoil. The highest ever recorded eight per cent unemployment growth rate and price rise have created unrest among the common people. Sir, eight per cent of unemployment growth rate is a universal record as far as India is concerned because such unemployment growth is affecting the whole country, especially the educated youth.

Hon. Speaker, Sir, our country cannot continue to live longer with this kind of an irresponsible, insensitive, and inefficient Government. It is very difficult to survive with this Government. So, it is the right time to make the

Government accountable to the people through the House of the People. There is no better way but to vote against the Government and pass this Motion on the Floor of the House.

Hon. Speaker, Sir, the House of the People, Lok Sabha, is composed of the representatives of the people, directly elected by the people. In the House of the People, the Prime Minister, Ministers, and the Government are directly responsible.

माननीय अध्यक्ष: पारित करने के लिए वोट इकट्ठे करने पड़ेंगे ।

SHRI N. K. PREMACHANDRAN: Certainly, Sir.

Hon. Speaker, Sir, my point is that the House of the People is the right forum by which the Government can be made accountable. So, my submission is this. As far as the Opposition is concerned, there is no other option but to vote for this No-Confidence Motion by which the Government will be made accountable.

Hon. Speaker, Sir, with these words, I, once again, stand with INDIA alliance. INDIA alliance is Indian National Developmental Inclusive Alliance. ? (*Interruptions*) Yes, I am concluding, Sir. We are transforming the National Democratic Alliance (NDA) into INDIA. ? (*Interruptions*) That is the difference. We are making NDA into INDIA, and for which, I stand with ? INDIA? alliance to strongly support the No-Confidence Motion.

With these words, I conclude. Thank you very much, Sir.

माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 9 अगस्त 2023 को प्रात: ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

17.59 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, August 9, 2023/Sravana 18, 1945 (Saka).

-

INTERNET

The Original Version of Lok Sabha proceedings is available on Parliament of India Website and Lok Sabha Website at the following addresses:

http://www.parliamentofindia.nic.in

http://www.loksabha.nic.in

LIVE TELECAST OF PROCEEDINGS OF LOK SABHA

Lok Sabha proceedings are being telecast live on Sansad T.V. Channel. Live telecast begins at 11 A.M. everyday the Lok Sabha sits, till the adjournment of the House.

Published under Rules 379 and 382 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha (Sixteenth Edition)

-

* The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

* Available in Master copy of Debate, placed in Library.

*Available in Master copy of Debate, placed in Library.

* Not recorded

* Not recorded as ordered by the Chair.

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded as ordered by the Chair.

** Not recorded.

* Expunged as ordered by the Chair.

* Expunged as ordered by the Chair.

* Expunged as ordered by the Chair.

** Not recorded.

* Not recorded.